अव्यक्त शिक्षाओं
का अनमोल भण्डार

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
माउण्ट आबू (राजस्थान)

प्रथम मुद्रण :
फरवरी, 1998
प्रतियाँ :
10,000

प्रकाशक :
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
माउण्ट आबू (राजस्थान)

मुद्रक :
ओम् शान्ति प्रेस,
शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)
☎ 22678, 23339

केवल राजयोगी बी०के० भाई-बहनों के लिए

© **Copyright :** Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)
No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

दो शब्द

दिव्य प्रसून (पुष्प)

आज आपके हाथों में जो **''अव्यक्त शिक्षाओं का अनमोल भण्डार''** *दे रहे हैं उससे जीवन का हर पहलू महक उठेगा ऐसा हमारा विश्वास है। पुरुषार्थ की पगडंडियों से मंज़िल तक पहुंचने वालों को श्रेष्ठ सम्बल प्राप्त होगा।*

इस संचयिका में विश्व-कल्याणकारी परमप्रिय प्रभू पिता ने सभी आत्माओं के प्रति जो वरदान उनको समय प्रति समय दिये हैं, वो वरदान तथा विभिन्न वर्गों प्रति जो अनमोल प्रेरणायें दी हैं उनका संचय है, इतना ही नहीं पुस्तक में शक्ति सम्पन्न व्यक्तित्व को अर्न्तशक्ति व योगी की तेजस्विता का आधार भी प्रभू वचनों द्वारा स्पष्ट सुगन्ध दे रहा है।

भारत त्योहारों व उत्सवों का देश है, किन्तु उस उमंग और उत्साह के क्षणों को स्थायित्व देने की कला का ज्ञान इस पुस्तक में है।

अपने भारत देश की तथा जिस भूमि पर अवतरित हो विश्व परिवर्तन की ये ज्योति प्रज्वलित की, उस पावन भूमि का भी महत्त्व अंकित है।

विश्व के हर क्षेत्र से पधारने वाले अपने बच्चों को दयालु पिता ने श्रेष्ठता का श्रृंगार कर उन्हें प्रोत्साहित किया है, उन प्रेरक महावाक्यों का संग्रह है।

यह पुस्तक साधन को मन-वचन-कर्म की शुचिता सिखाते हुए उत्तरोत्तर गन्तव्य तक पहुँचाती है, निःसन्देह अनमोल है ये प्रसून (पुष्प), जिनकी दिव्यता से आप देव बनने जा रहे हैं।

बी.के. प्रकाशमणि

अमृत-सूची

विभिन्न वर्गों के प्रति बापदादा की शिक्षायें

१. युवको प्रति ७
२. राजनेताओं प्रति ८
३. ज्यूरिस्ट प्रति १०
४. डाक्टर्स प्रति ११
५. व्यापारियों प्रति १४
६. मीडिया (प्रसार माध्यम) प्रति १५
७. धर्म नेताओं प्रति १६
८. वैज्ञानिकों के प्रति १८
९. पवित्र प्रवृत्ति वालों प्रति २१
१०. छोटे बच्चों प्रति २३

योग की विभिन्न स्थितियाँ

१. साक्षी स्थिति २५
२. विश्व कल्याणकारी स्थिति २७
३. विघ्न विनाशक स्थिति २९
४. बेहद के वैराग्य की स्थिति..........................३०
५. रहमदिल स्थिति ३२
६. दानी, महादानी, वरदानी स्थिति ३५
७. निर्माण (नम्रचित्त) और निर्वाण स्थिति ३७
८. शुभ चिंतक स्थिति..................................३८
९. खुशनुम: स्थिति ४०
१०. अव्यक्त स्थिति/ फ़रिश्ता स्थिति ४३

११. बीजरूप स्थिति ४४
१२. कर्मातीत स्थिति ४५

विभिन्न शक्तियाँ

१. संकल्प की शक्ति ४८
२. साइलेन्स की शक्ति ४९
३. पवित्रता की शक्ति ५१
४. एकाग्रता की शक्ति ५४
५. वाचा शक्ति ५६
६. सहनशक्ति ५८
७. परखने की शक्ति ५९
८. निर्णय करने की शक्ति ६१
९. समेटने की शक्ति ६२
१०. संगठन की शक्ति ६३
११. एकता की शक्ति ६६
१२. मनन शक्ति ६७
१३. परिवर्तन शक्ति ६९
१४. स्नेह की शक्ति ७१
१५. सत्यता की शक्ति ७३

विभिन्न गुणों प्रति

१. सन्तुष्टता ७६
२. प्रसन्नता ७८
३. ईमानदारी ७९

४. जिम्मेवारी ८१
५. गम्भीरता ८३
६. अहिंसा ८५
७. सहयोग ८७
८. सम्मान ८८
९. त्याग ९०
१०. सादगी ९३
११. स्वतन्त्रता ९५

विभिन्न त्योहारों प्रति

१. शिवरात्रि ९८
२. होली १००
३. रक्षाबंधन १०२
४. दीपावली १०३

विभिन्न स्थानों का महत्त्व

१. मधुबन १०६
२. ज्ञान सरोवर १०८
३. शान्तिवन ११०
४. ग्लोबल हॉस्पिटल ११२
५. भारत ११४
६. दिल्ली ११५
७. राजस्थान ११७
८. डबल विदेशी ११८

विभिन्न-वर्गों प्रति अनमोल अव्यक्त महावाक्य

१- युवकों प्रति

हे युवकों, आप श्रेष्ठ आत्मायें हो, आपमें तन और मन दोनों की विशेष शक्ति है। दृढ़ संकल्प की भी शक्ति है। आप युवक देश से सिर्फ एक मंहगाई नहीं लेकिन डबल महंगाई मिटाकर दिखाओ। महंगाई का आधार है - चरित्र की मंहगाई। जब चरित्र की मंहगाई वा चरित्र के दु:ख अशान्ति की गरीबी मिट जायेगी तब स्वत: ही सर्व आत्मायें धनवान तो क्या विश्व राज्य अधिकारी बन जायेगी। यही शुभ उम्मीदें विश्व की निमित्त आत्माओं की पूरी करके दिखाओ।

विश्व के राज्य नेताओं को यह खुशखबरी सुनाओ कि जिस बात का आप स्वप्न देख रहे हो, जो आपकी चाहना है वह हम पूर्ण करके दिखायेंगे। अपने देश को श्रेष्ठ बनाकर दिखायेंगे। यही दृढ़ संकल्प सभी को सिर्फ सुनाओ नहीं लेकिन परिवर्तन का सेम्पल बनकर दिखाओ। आपका मुख न बोले लेकिन जीवन की श्रेष्ठता बोले।

विनाशकारी के बजाए कल्याणकारी बनो

आज के नेतायें युवा वर्ग से विनाशकारी कर्त्तव्यों के कारण घबराते हैं लेकिन हे युवकों, अब विश्व कल्याणकारी बन सिद्ध कर दो कि हम विश्व को सर्वश्रेष्ठ स्वर्ग का स्थान बनायेंगे। विश्व में फिर से सर्व सम्पन्न, सर्व श्रेष्ठ एक राज्य की स्थापना करेंगे। हे युवकों, मुख द्वारा तुम्हें नहीं बताना है लेकिन करके दिखाना है। कर्म का भाषण स्टेज पर करो। सिर्फ मुख का भाषण नहीं लेकिन आपके नयन, मस्तक और कर्म भाषण के निमित्त बन जायें। कर्म रूहानियत को सिद्ध करें।

हे युवकों, सदा सफलता मूर्त बनने के लिए एक तावीज सदा अपने साथ रखना - दूसरों को रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिकार्ड ही सफलता का अविनाशी रिकार्ड बन जायेगा। सदा मुख पर सफलता का मंत्र हो – ''पहले आप'', ''पहले मैं'' नहीं। मैं पन को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना

सो स्वयं का आगे बढ़ना समझते हुए चलो तो विश्व में नाम बाला कर सकते हो।

हे युवकों, अपने तन की शक्ति और मन की शक्ति को व्यर्थ कार्यों में अर्थात् विनाशकारी कार्यों में नहीं लगाओ। श्रेष्ठ ईश्वरीय कार्यों में उसे सफल करो। किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए ३ शब्द याद रखना **१.** सदा बैलेन्स रखना है। **२.** ब्लिसफुल रहना है। और **३.** सर्व को ब्लैसिंग देना है।

स्व की सेवा और विश्व की सेवा में बैलेन्स रहे। जैसे बैलेन्स द्वारा कलायें दिखाते हैं, ऐसे आप बुद्धि के बैलेन्स से १६ कला सम्पन्न स्वरूप हो जायेंगे। आपका हर कर्म कला हो, देखना भी कला .. क्योंकि रूहानी दृष्टि से देखते हो। सुनना भी कला - क्योंकि आत्मा होकर सुनते हो। बोलना, चलना हर कदम में कला। इन सबका आधार है बैलेन्स। ऐसे ही सदा ब्लिसफुल अर्थात् आनन्द स्वरूप बनो।

हे युवकों, आपमें शारीरिक शक्ति भी है और आत्मिक शक्ति भी है, इसलिए नये विश्व की स्थापना के कार्य में निमित्त बनो।

हर एक युवा के मन में यही उमंग-उत्साह रहे कि हम सभी अपने विश्व को वा देश को, सुख शान्ति के लिए भटकती हुई आत्माओं अर्थात् अपने भाई-बहनों को सुख और शान्ति का अधिकार अवश्य दिलायेंगे। आप सब एक तो श्रेष्ठ आत्मायें, पवित्र आत्मायें हो, पवित्रता की शक्ति है आपमें। दूसरा मास्टर सर्वशक्तिवान् होने के कारण सर्वशक्तियाँ साथ हैं। संगठन की शक्ति है, साथ-साथ त्रिकालदर्शी होने के कारण जानते हो कि अनेक बार हम विश्व परिवर्तक बने हैं। इसलिए कल्प-कल्प के विजयी होने के कारण अब भी विश्व परिवर्तन के कार्य में विजय निश्चित है। होंगे या नहीं होंगे, यह क्वेश्चन ही नहीं है। निश्चयबुद्धि विजयी हो ही।

२- राजनेताओं के प्रति

राजनीति को विश्व के लिए श्रेष्ठ नीति बनानी है तो राज्य के सेवाधारी सेवा करते हुए अपने को निमित्त समझो। जहाँ निमित्त भाव है, मैं पन का भाव नहीं है, वहाँ सदा सफलता है। यही उन्नति को प्राप्त करने का साधन है क्योंकि निमित्त समझने से करावनहार स्वामी की सदा ही स्मृति रहती है और वह आपसे श्रेष्ठ कार्य ही करायेगा। जब राज्य की प्रवृत्ति के गृहस्थी बन जाते हो तब बोझ

अनुभव होता है और बोझ के कारण निर्णय शक्ति काम नहीं करती, इसलिए कार्य व्यवहार में आते अपने को ट्रस्टी समझो। ट्रस्टी समझने से हल्के रहेंगे। निमित्त हैं, हल्के हैं तो यह भावना ही फलदायक है। इसलिए नेता अर्थात् नीति के प्रमाण चलने वाले। धर्म नीति और स्वराज्य नीति के प्रमाण चलने वाले ही सफल नेता हैं।

सच्ची सेवा का पहला फाउन्डेशन है - त्याग और तपस्या। विश्व के सेवाधारी बच्चों को बाप यही श्रेष्ठ शिक्षा देते हैं - बच्चे ''त्यागी और तपस्वी बनो'' तो विजय की माला आपके गले में पड़ी हुई है।

राज्य सत्ता अर्थात् अधिकारी, अथॉरिटी स्वरूप। राज्य सत्ता वाली आत्मा अपने अधिकार द्वारा जब चाहे, जैसे चाहे वैसे अपनी स्थूल और सूक्ष्म शक्तियों को चला सकती है। दूसरा - राज्य सत्ता वाले हर कार्य को ला एण्ड आर्डर द्वारा चला सकते हैं। राज्य सत्ता अधिकारी अर्थात् मात-पिता के स्वरूप में अपनी प्रजा की पालना करने की शक्ति वाले। राज्य सत्ता अर्थात् स्वयं भी सदा सर्व में सम्पन्न और औरों को भी सम्पन्नता में रखने वाले। राज्य सत्ता अर्थात् विशेष सर्व प्राप्ति सम्पन्न। सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम सर्व गुणों के खज़ानों से भरपूर। स्वयं भी और सर्व भी खजानों से भरपूर। जो भी आत्मायें सम्बन्ध वा सम्पर्क में आवें, वे अनुभव करें कि यही श्रेष्ठ आत्मायें हमारे पूर्वज हैं। इन्हीं आत्माओं द्वारा जीवन का सच्चा प्रेम और जीवन की उन्नति का साधन प्राप्त हो सकता है क्योंकि पालना द्वारा ही प्रेम और जीवन की उन्नति प्राप्त होती है। पालना द्वारा आत्मा योग्य बन जाती है। छोटा सा बच्चा भी पालना द्वारा अपने जीवन की मंज़िल को पहुँचने के लिए हिम्मतवान बन जाता है। तो राज्य सत्ता धारी आत्मायें अपनी रूहानी पालना द्वारा आत्माओं को निर्बल से शक्ति स्वरूप बनाओ। अधीनता के संस्कार परिवर्तन कर, अधिकारीपन के संस्कार धारण करो।

आज के विश्व में हर एक नेता की यही शुभ भावना, शुभ कामना है कि हम और हमारा देश उन्नति को प्राप्त हो। दुश्मन से सेफ हो और सदा शान्त सुखी रहे। इस शुभ भावना का प्रत्यक्ष फल देने वाले परमात्मा शिव बच्चों को कहते हैं - मीठे बच्चे, इस भावना का फल पाने के लिए पहले यह जानना आवश्यक है कि उन्नति और अवनति का केन्द्र बिन्दु मनुष्य आत्मा का मन है।

याद रखो मन खुश तो जहान खुश। इसलिए हरेक को पहले अपने मन का लीडर बनना है। मन का लीडर बनने के लिए स्वयं को सुप्रीम पावर परमात्मा की श्रीमत (लीड) पर चल स्वयं का मन शक्तिशाली बनाना है। उसकी सहज विधि है मन का सुप्रीम पावर हाउस परमपिता से कनेक्शन जोड़ना अर्थात् योग लगाना। तो स्वत: ही मन में सर्व शक्तियाँ आ ही जायेंगी और मन-दुरुस्त होने से तनदुरुस्त होता ही है। धन में कम खर्च बाला नशीन बन जाते हैं। एक सुप्रीम बाप के तरफ अटेन्शन होने से मन के सर्व टेन्शन अर्थात् निर्बलता खत्म हो जाती है और एकाग्रता की शक्ति से निर्णय शक्ति बढ़ने के कारण हर कार्य कुशल और सफल हो जाते हैं। इसलिए हरेक लीडर अपने आप से यह दृढ़ संकल्प करें कि हमें सुप्रीम पावर परमात्मा की श्रीमत अर्थात् श्रेष्ठ नीति पर चलने वाला नेता बनना है। धर्म नीति और कर्म नीति दोनों को कम्बाइन्ड कर राज्य सत्ता और ईश्वरीय सत्ता वाले लीडर बनना है। इस दृढ़ता से सफलता सदा है ही है क्योंकि दृढ़ता ही सफलता की चाबी है। यह हीरे तुल्य चाबी सदा गाडली गिफ्ट के रूप में साथ रखना।

३- ज्यूरिस्ट प्रति

सभी सदा स्व को स्वतन्त्र करने और अनेक आत्माओं को अनेक बन्धनों से स्वतन्त्र करने की सर्विस में रहना ही जस्टिस का कार्य है। सभी का जैसे लौकिक कार्य है – कहाँ भी फँसे हुए को छुड़ाने का। वो तो उस गवर्मेन्ट के हिसाब से फँस जाते हैं तो छुड़ाते हो व कोई व्यक्ति विकारों के वशीभूत बुरा काम करते हैं तो छुड़ाते हो वा फँसाते हो। कभी सच, कभी झूठ। यहाँ रूहानी कार्य में सदा हर आत्मा को स्वतन्त्र बनाने वाले हो।

सेल्फ जस्टिस बनो

दूसरों की जजमेंट करने के पहले स्वयं को जज करो। स्वयं में जो भी वेस्टेज़ है उसे समाप्त कर दो तो दूसरों के व्यर्थ को भी समाप्त कर सकेंगे। इसके लिए जज बनो, वकील नहीं। वकील छोटे केस को भी लम्बा कर देते हैं। और जज सेकेण्ड में हाँ वा ना की जजमेंट कर देता है। वकील बनते हो तो काला कोट आ जाता है। है एक सेकेण्ड की जजमेंट, यह बाप का गुण है वा नहीं। नहीं है तो वेस्ट पेपर बाक्स में डाल दो। अगर बाप का गुण है तो बेस्ट के खाते में

जमा करो। संगमयुग पर हर एक को सेल्फ जस्टिस बनना है। कोई भी बात करने के पहले स्वयं जज करो तो न स्वयं का समय जायेगा और न दूसरों का।

जैसे परमात्मा बाप को कहते हैं कि वही जन्म-जन्म के दुखों से छुड़ाने वाले हैं–इसलिए सुख का दाता कहकर महिमा गाते हैं। तो जैसा बाप वैसे बच्चे। जन्म-जन्मान्तर के दुखों से छूटने की जजमेंट दो। सिर्फ एक जन्म के दुखों से छुड़ाने वाले नहीं। वह तो हुआ हाईकोर्ट का या सुप्रीम कोर्ट का जज लेकिन यह है स्प्रीचुअल जज। ऐसा जज बनने के लिए पढ़ाई की वा समय की भी आवश्यकता नहीं है। दो अक्षर ही पढ़ने हैं आत्मा और परमात्मा। बस। इसके अनुभवी बन गये तो स्प्रीचुअल जज बन गये। तो बाप की आज्ञा है स्प्रीचुअल जज भी बनो। डबल जज बनने से अनेक आत्माओं के कल्याण के निमित्त बन जायेंगे। आयेंगे एक केस के लिए और जन्म-जन्म के केस जीतकर जायेंगे। बहुत खुश होंगे।

चीफ़ जस्टिस की जजमेन्ट सदा यथार्थ होती है। जस्टिस के ऊपर चीफ जस्टिस हाँ या ना कर सकते हैं। चीफ जस्टिस के जजमेन्ट की बहुत वैल्यु होती है इसलिए यथार्थ जजमेन्ट देनी है तो हर एक का जैसे वर्तमान स्पष्ट होता है वैसे ही उसका भविष्य भी इतना ही स्पष्ट हो। वर्तमान और भविष्य की समानता द्वारा ही फाइनल हाँ या ना कर सकते हो। इसी स्टेज को बाप समान स्टेज कहा जाता है।

४- डाक्टर्स के प्रति

डबल डाक्टर बनो

रूहानी और जिस्मानी डबल डाक्टर बनो। वह सेवा करते भी मूल कर्तव्य है रुहानी डाक्टर बनना। बार-बार रोगी आये, इससे तो सदा के लिए रोग ही खत्म हो जाए। तो ऐसी दवाई देनी चाहिए। रोगी आता ही है सदा शफा पाने के लिए। सदा शफा होगी – रूहानी सेवा से। तो सभी मिल कर के सेकण्ड में शफा देने की कोई गोली निकालो। आजकल के समय और सरकमस्टान्स प्रमाण अभी सेकण्ड में शफा पाने की इच्छुक अनेक आत्मायें हैं। दो इच्छायें सर्व आत्माओं की हैं - एक तो सदा के लिए शफा हो और दूसरे बहुत जल्दी से जल्दी शफा हो क्योंकि अनेक प्रकार के दुख दर्द सहन करते-करते सब आत्मायें थकी हुई हैं।

तो जैसे स्थूल डाक्टरी द्वारा पेशेन्ट को फेथ में लाते हो, समझते हैं कि यह डाक्टर बड़ा अच्छा है, यहाँ से शफा मिल जायेगी। ऐसे रूहानी डाक्टरी में भी ऐसी शक्तिशाली स्टेज हो जो सबका फेथ हो जाए कि यहाँ पहुँचे हैं तो प्राप्ति अवश्य होगी। आजकल के समय अनुसार दोनों बातें जरूरी हैं क्योंकि बहुत जन्मों के जो हिसाब-किताब अर्थात् कर्मभोग हैं वह भी समाप्त ज़रूर होने हैं। कर्मभोग का हिसाब खत्म करने के लिए स्थूल दवाई और कर्मयोगी बनाने के लिए यह रूहानी दवाई दो। अभी सब भोग-भोग कर खत्म करेंगे। चाहे मंसा द्वारा, चाहे शरीर द्वारा। फिर सभी आत्मायें मुक्तिधाम में जायेंगी। अभी न रोगी रहेंगे, न डाक्टर रहेंगे। इसकी प्रैक्टिस अन्त में भी होगी, जो डाक्टर होते भी कुछ कर नहीं सकेंगे। इतने अधिक पेशन्ट होंगे। उस समय तो सिर्फ अपनी दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा, उनको टैम्प्रेरी वरदान द्वारा शान्ति दे सकते हो। मरेंगे भी बहुत। मरने वालों के लिए जलाने का ही समय नहीं होगा क्योंकि अभी सब अति में जाना है। अति में जाकर अन्त हो जायेगी।

अभी के समाचारों के अनुसार भी देखो कोई नई बीमारी फैलती है तो कितनी फास्ट फैलती है। जब तक डाक्टर उस नई बीमारी की दवाई निकालते, तब तक कई खत्म हो जाते हैं क्योंकि अति में जा रहा है। और जब ऐसा हो तब तो डाक्टर भी समझें कि हमसे भी कोई श्रेष्ठ चीज़ है। अभी तो अभिमान के कारण कहते हैं, आत्मा वगैरा कुछ नहीं है। डाक्टरी ही सब कुछ है। फिर वह भी अनुभव करेंगे। जब कुछ भी कन्ट्रोल नहीं कर पायेंगे तो कहाँ नज़र जायेगी ? अभी तो नई-नई बीमारियां कई आने वाली हैं। लेकिन यह नई बीमारियां नया परिवर्तन लायेंगी।

डाक्टर्स का विशेष कर्त्तव्य

डाक्टर्स का विशेष कर्तव्य है हर आत्मा को खुशी देना। पहली दवाई खुशी है। खुशी आधी बीमारी खत्म कर देती है। तो रूहानी डाक्टर्स अर्थात् खुशी की दवाई देने वाले। एक बार भी खुशी की झलक आत्मा को अनुभव हो जाए तो वह आत्मा सदा खुशी की झलक से आगे उड़ती रहेगी। तो सभी को डबल लाइट बनाए उड़ाने वाले डाक्टर्स बनो। वह बेड में सोने वाले पेशेन्ट को उठा देते हैं, चला देते हैं। आप पुरानी दुनिया से उठाकर नई दुनिया में बिठा दो।

ऐसे प्लैन बनाओ। रूहानी इनस्ट्रूमेन्ट्स यूज़ करने का प्लैन बनाओ। इन्जेक्शन क्या है, गोलियां क्या हैं, ब्लड देना क्या है – यह सब रूहानी साधन बनाओ! किसको ब्लड देने की आवश्यकता है तो रूहानी ब्लड कौन-सा देना है? हार्ट पेशेन्ट को कौन-सी दवाई देनी है? हार्ट पेशेन्ट अर्थात् दिलशिकस्त पेशेन्ट। तो रूहानी सामग्री चाहिए। जैसे वह नई-नई इन्वेंशन साइन्स के साधन से करते हैं। आप साइलेंस के साधनों से सदाकाल के लिए निरोगी बना दो। जैसे उन्हों के पास सारी लिस्ट है-यह इन्सटूमेन्ट् हैं, यह इन्सटूमेन्ट् है। ऐसे ही आपकी भी लिस्ट हो। एवरहेल्दी बनाने के इतने बढ़िया साधन हो। ऐसा आक्यूपेशन अपना बनाओ।

डॉक्टर्स बहुत सेवा कर सकते हैं क्योंकि पेशेन्ट उस समय बिल्कुल भिखारी के रूप में आते हैं। अगर उस समय डाक्टर उन्हें झूठी दवाई भी दे देते, पानी भी दे देते तो भी भावना के कारण वह ठीक हो जाते हैं। उन्हें खुशी की खुराक मिल जाती है, जिससे वह ठीक हो जाते हैं। दवाई से ठीक नहीं होते, खुशी से ठीक हो जाते। तो डॉक्टर्स के पास भिखारी के रूप में आते हैं, दो घड़ी के लिए भी दर्द मिटाओ। आप उस समय उन्हें क्या भी सुनाओ तो सुनने के लिए तैयार हो जाते हैं। तो जैसे इन्जेक्शन लगाकर सेकेण्ड में उसके दर्द की सुधबुध भुला देते हो, ऐसे ज्ञान का इंजेक्शन भी लगाओ जो पुराने संस्कारों की सुधबुध भूल जाएँ। लेकिन जो पहले अपने को इन्जेक्शन लगाकर संस्कारों को भुला सकते हैं, वह अनुभव के आधार से औरों को भी लगा सकेंगे। तो डबल डॉक्टर्स की ऐसी विशेषता होनी चाहिए। डॉक्टर्स तो एक दिन में काफी प्रजा बना सकते हैं, रोज प्रजा बनी-बनाई आपके पास आती है, ढूँढने नहीं जाना पड़ता है।

अपनी निजी शक्तियों द्वारा अलौकिक ऑपरेशन करो

जैसे उन औज़ारों से ऑपरेशन करते हो वैसे अपने में जो शक्तियाँ हैं, उन शक्तियों रूपी यन्त्रों द्वारा कमजोरियों रूपी बीमारी को समाप्त करो। डाक्टर्स अपने ही थियेटर के यन्त्रों द्वारा ऑपरेशन करते हैं, पेशेन्ट के यन्त्र नहीं यूज़ करते, ऐसे आप अपनी शक्तियों के यन्त्र द्वारा बीमारी को ठीक कर दो, कामी को निष्कामी और क्रोधी को निस्क्रोधी बना दो। इसके लिए सहनशक्ति का यन्त्र यूज़ करो। तो ऐसे ऑपरेशन वाले डॉक्टर बनो। जैसे उसमें आँख, नाक सबके

अलग-अलग स्पेशलिस्ट होते हैं, ऐसे यहाँ भी अलग-अलग विशेषतायें हैं। यहाँ भी जितनी कोई डिग्री लेना चाहे तो ले सकता है। जो सर्व विशेषताओं में ऑलराउन्डर हो जाते हैं, वे नामीग्रामी हो जाते हैं।

दवा के साथ-साथ दुआ दो

आजकल दुनिया में भी डॉक्टर्स कहते हैं कि दवाई इतना काम नहीं करेगी जितना दुआ करेगी। वो भी दवाईयों से दिलशिकस्त हो गये हैं क्योंकि जानते हैं ना कि इसकी रिजल्ट क्या है और क्या निकलेगी! इसलिए अभी सबकी नजर दुआओं तरफ जा रही है। अभी योग एक्सरसाइज़ के रूप में चारों ओर बढ़ता जा रहा है। अभी योग तक आये हैं, सहजयोग तक आ जायेंगे।

५- व्यापारी वर्ग

होशियार सौदागर कौन?

भोलानाथ शिव परमात्मा से सौदा करने वाले ही अच्छे होशियार सौदागर (व्यापारी) हैं। आप सबने ऐसे कभी सोचा था कि भगवान से सौदा करेंगे? और सौदा भी इतना बड़ा किया है जो और सौदा करने की आवश्यकता ही नहीं है। कोई वस्तु का सौदा नहीं किया है लेकिन वस्तु के दाता का सौदा कर लिया। उसमें तो सब आ गया ना! दाता को ही अपना बना लिया। भोलानाथ से सौदा कर लिया तो चतुर हो गये ना! यह कितना बड़ा सौदा है? तीनों लोक ही सौदे में ले लिए। आज की दुनिया में सबसे बड़े से बड़ा कोई भी धनवान हो लेकिन इतना बड़ा सौदा कोई नहीं कर सकता, इतनी महान आत्मायें हो। इस महानता को स्मृति में रखकर चलते चलो।

आप सब बड़े ते बड़े व्यापारी हो। विश्व के अन्दर कोई भी इतना बड़ा बिजनेस नहीं कर सकता। जो होशियार बिजनेसमैन होते हैं वे कमाई को बढ़ाते जाते हैं। लौकिक में जब वृद्धि होती है तो एक-एक बिन्दी लगाते जाते हैं। आपको भी बिन्दी लगाना है। मैं भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी। बड़े से बड़े व्यापारी हो लेकिन लगाना है बिन्दी। ६ व ८ लिखने में मुश्किल भी हो सकती है लेकिन बिन्दी तो सब लगा सकते हो। यह सहज भी है और श्रेष्ठ भी। सारे दिन में कितनी बिन्दी लगाते हो? जब क्वेश्चन होता है तो बिन्दी मिट जाती है। बिन्दी के बिना क्वेश्चन भी हल नहीं होता। तो बिन्दी लगाने में सब होशियार हो ना?

बिन्दी लगाने में समय भी नहीं लगता। इसके लिए यह भी कोई नहीं कह सकता कि समय नहीं है। सेकण्ड की बात है। तो जितने सेकण्ड मिलें बिन्दी लगाओ फिर रात में गिनो कितनी बिन्दी लगाई! ज्ञान रत्नों का सौदा कर मालामाल बनो

सारे दिन में ज्ञान रत्नों का धन्धा करते रहो। बुद्धि में सदा ज्ञान रत्नों की प्वाइंटस गिनते रहो। तो रत्नों के सौदागर रत्नों की खानों के मालिक बन जायेंगे। इन ज्ञान रत्नों को जितना कार्य में लगायेंगे उतना बढ़ते ही जायेंगे। सौदा करना अर्थात् मालामाल बनना। तो नम्बरवन सौदागर बनो। लक्ष्य तो सभी का नम्बर वन है लेकिन नम्बरवन सदा ज्ञान रत्नों में इतना बिज़ी रहेगा जो और कोई बातों को देखने, सुनने और सोचने की फुर्सत ही नहीं होगी। माया भी उसे बिजी देख वापस चली जायेगी। माया को बार-बार भगाने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

सारे कल्प के अन्दर ऐसा कोई बिजनेसमैन नहीं होगा जो इतनी कमाई करे। तो सदा यही समझो कि हम इतने बड़े बिजनेसमैन हैं, इतनी ही कमाई में बिजी रहो। सदा बिजी रहने से किसी भी प्रकार की माया वार नहीं करेगी क्योंकि बिजी होंगे तो माया बिजी देखकर लौट जायेगी, वार नहीं करेगी। सहज मायाजीत बनने का यही साधन है कि सदा कमाई करते रहो और कराते रहो।

६- मीडिया वर्ग

अखबारों द्वारा सेवायें

आगे चलकर तुम्हारा मैसेज सभी आत्माओं तक पहुँचना है। अखबारों द्वारा बहुत सुनेंगे। कितने गांव हैं, सबको पैगाम देना है। मैसेन्जर, पैगम्बर तुम ही हो। सबको यह सन्देश मिलेगा कि बाबा आया है, उनसे यह वर्सा पाओ। दिन-प्रतिदिन तुम्हारा नाम अखबारों द्वारा बाला होता जायेगा। अखबारें तो सब तरफ जाती हैं। तो एक दिन अखबारों में छपेगा कि भगवान कहते हैं – मुझे याद करने से ही तुम पतित से पावन बन जायेंगे। जब विनाश नजदीक होगा तब अखबारों द्वारा यह आवाज़ सभी के कानों में जायेगा। अन्त में सबको यह भी निश्चय हो जायेगा कि बरोबर इस पतित दुनिया का विनाश ज़रूर होना है। साउथ, नार्थ, ईस्ट, वेस्ट कितना बड़ा विश्व है। सारे विश्व को मीडिया द्वारा ही सन्देश पहुँचेगा। किसी एक की बुद्धि में आ गया तो अखबारों में डालते रहेंगे। जैसे गीता का प्रचार सारी दुनिया में बहुत है। ऐसे तुम्हारे ज्ञान का प्रचार भी

अखबारों द्वारा होगा। अखबारों द्वारा घर बैठे भी चारों तरफ यह ज्ञान सुनेंगे। यह लिखत अखबार में पढ़ेंगे कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो और वर्से को याद करो।

वह समय भी आयेगा जब यह समझानी और चित्र आदि सब अखबारों में छपेंगे। सीढ़ी भी अखबार में छपेगी। अखबारों द्वारा विलायत (विदेश) के कोने-कोने तक पता लग जायेगा। इस सीढ़ी आदि से झट समझ जायेंगे। एक दिन बड़े अखबारों में भी तुम्हारे चित्र छपेंगे। विलायत तक तो अखबारें जाती हैं ना। चित्रों से समझ जायेंगे, यह नॉलेज तो गॉड फादर की है। विलायत वाले यह नॉलेज सुनकर बहुत पसन्द करेंगे। बहुत खुश होंगे। समझेंगे हम भी बाप के साथ योग लगायेंगे तो विकर्म विनाश हो जायेंगे।

जैसे शुरू में विलायत तक अखबारों द्वारा नाम गया। अब फिर यह भी पड़ेगा कि खुद गॉड फादर आकर सबको लिबरेट कर रहे हैं। कहते हैं और सब तरफ से बुद्धियोग तोड़ो, मुझ एक बाप को याद करो तो तुम पावन बन मुक्तिधाम में चले जायेंगे। कोई तो अच्छी रीति समझ कर याद करने लग पड़ेंगे। धर्म के बड़े जो होंगे वह फिर नम्बरवार आते जायेंगे। तुम अखबार वा मैगजीन में ऐसी वण्डरफुल बातें लिखो। आगे चलकर तुम नई-नई टॉपिक्स पर भाषण करते रहेंगे और अखबार में भी निकलता रहेगा। यह अखबारें ही तुम्हारे काम में आयेंगी। अखबारों में पड़ता जायेगा।

अब नई दुनिया के लिए नया ज्ञान चारों ओर फैलाओ। ऐसा आवाज निकले जो चारों ओर पेपर्स में यह धूम मच जाए कि यह ब्र.कु. दुनिया से नया ज्ञान देती हैं। ज्ञान क्या देती हैं, उसका आधार क्या मानती हैं, उनको सिद्ध कैसे करती हैं – यह जब अखबारों में आयेगा तब समझो ज्ञान दाता का नगाड़ा बजा।

७- धर्म नेताओं प्रति

धर्म सत्ता अर्थात् हर धारणा की शक्ति स्वयं में अनुभव करने वाली आत्मा। धर्म सत्ता वाली आत्माओं में पवित्रता की धारणा के साथ-साथ हर गुण की विशेषता समाई हुई होगी। धर्म सत्ता अर्थात् धारणा की सत्ता। ऐसी धर्म सत्ता वाली आत्माओं में दो विशेषतायें होती हैं – धर्म सत्ता स्व को और सर्व को सहज परिवर्तन कर लेती है। उनमें परिवर्तन शक्ति स्पष्ट होगी। सारे चक्र में जो

धर्म सत्ता वाली आत्मायें आई हैं उन्हों की विशेषता है - मनुष्य आत्माओं को परिवर्तन करना। साधारण मनुष्य से परिवर्तन हो कोई बौद्धी, कोई क्रिश्चयन बना, कोई मठ पंथ वाले बने। लेकिन परिवर्तन तो हुए ना! तो धर्म सत्ता अर्थात् परिवर्तन करने की सत्ता। पहले स्वयं को फिर औरों को।

धर्म सत्ता की दूसरी विशेषता है - परिपक्वता। वे हिलने वाली नहीं होती। परिपक्वता की शक्ति द्वारा ही परिवर्तन कर लेती हैं। चाहे सितम हों, ग्लानि हो, आपोजीशन हो लेकिन अपनी धारणा में परिपक्व रहते हैं। यह हैं धर्म सत्ता की विशेषतायें।

धर्म सत्ता वाली आत्मायें हर कर्म में निर्माण होती हैं। जितना ही गुणों की धारणा सम्पन्न होती अर्थात् गुणों रूपी फलस्वरूप होती उतना ही फल सम्पन्न होते भी निर्माण होती हैं। अपनी निर्माण स्थिति द्वारा ही हर गुण को प्रत्यक्ष करती हैं।

धर्म सत्ता वाली आत्मायें आपके ज्ञान से इतना प्रभावित नहीं होंगी। उन्हें प्रैक्टिकल जीवन की विशेषता दिखाओ। जब वह लोग प्रैक्टिकल अनुभव सुनेंगे तो अनुभव के आधार पर आकर्षित होंगे। तो यह नवीनता दिखाओ। जो पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले बच्चे हैं वह अपने अनुभवों द्वारा उनकी सेवा के निमित्त बन सकते हैं। प्यार से उन्हों की सेवा करनी है। उन्हों को महान-महान कहते हुए अपनी महानता दिखानी है। पहले उनकी महिमा करो फिर अपने जीवन की महानता दिखाओ क्योंकि फिर भी विकारी दुनिया को पिलर्स देकर ठहराने का काम तो किया है ना। तो जो किया है उसकी महिमा करो। अच्छा-अच्छा कहते, अच्छा बनाते जाओ। उन्हों का आवाज तो बड़ा होता है। माइक बड़े होते हैं, इसलिए ऐसे-ऐसे को सम्पर्क में लाओ। जिसका नाम अच्छा हो, बड़ा हो। आप उन्हों को इस स्थापना के बड़े कार्य में सहयोगी बनाओ। इसके लिए जब कोई बड़ा प्रोग्राम करते हो तो उसमें ऐसे वी.आई.पीज को कोई पोजीशन देकर बुलाने की कोशिश करो। उन्हों को इस कार्य में सहयोगी बनाओ। उनके पास कोई अनुभवी परिवार ले जाओ तो उसके प्रैक्टिकल लाइफ का प्रभाव उन पर ज़्यादा पड़ेगा क्योंकि वह भी प्रूफ देखने चाहते हैं कि यह क्या करते हैं।

बापदादा से वा आप सर्वश्रेष्ठ आत्माओं से सर्व धर्म की आत्मायें एक

मुख्य चीज़ जरूर चाहती हैं। ज्ञान और योग की बातें हर धर्म में अलग-अलग हैं, जिसको कहा जाता है मान्यतायें। लेकिन एक बात सब धर्मों में एक ही है, सर्व आत्मायें दया वा कृपा जिसको वे अपनी भाषा में ब्लैसिंग कहते हैं, यह सब चाहते हैं। आप सभी आत्माओं से अब लास्ट जन्म में भी आपके भक्त यही चाहते हैं - ज़रा-सी कृपा दृष्टि कर लो। ज़रा हमारे ऊपर भी दया कर लो। सर्व धर्मों की मूल निशानी दया मानते हैं। अगर कोई भी धर्मी आत्मा दयालु नहीं वा दया दृष्टि वाला नहीं तो उसको धर्मी नहीं मानते हैं। धर्म अर्थात् दया। तो हर आत्मा पर दया की दृष्टि रखो। दयालु और कृपालु बनो।

आप सब भी अपने को आदि सनातन प्राचीन धर्म की श्रेष्ठ आत्मायें अर्थात् धर्मात्मा तो मानते ही हो। तो हे धर्मात्मायें, आप सबका पहला धर्म अर्थात् धारणा है ही स्व के प्रति, ब्राह्मण परिवार के प्रति और विश्व की सर्व आत्माओं के प्रति दया भाव और कृपा दृष्टि रखना। तो अपने आप से पूछो कि सदा दया की भावना और कृपा दृष्टि रहती है ?

सारे विश्व व लोक को, जानते हुए व न जानते हुए, देखते हुए व न देखते हुए सबसे ज्यादा पसन्द कौन है ? धर्म पितायें अपने धर्म की आत्माओं के प्रिय हैं लेकिन धर्म पिताओं का भी प्रिय एक ही बाप परमपिता है। इसलिए सबके मुख से समय प्रति समय भिन्न-भिन्न भाषा में एक बाप की ही पुकार निकलती है। तो हर एक को सत्य बाप की पहचान दो।

अभी तक यह आवाज़ आती है कि ज्ञान ऊँचा है लेकिन ज्ञान के साथ-साथ चलन की भी महिमा करें। दोनों के बैलेन्स का अटेन्शन रखने से सेवा होगी। धर्म नेताओं तक सन्देश देने का यही साधन है, इससे ही चारों ओर आवाज़ फैलेगा। सारे विश्व में जो भी अन्य आत्माएं धर्म के क्षेत्र में वा राज्य के क्षेत्र में महान वा नामी-ग्रामी बने हैं, धर्म-पिताएं बने हैं, जगत् गुरु कहलाने वाले बने हैं; लेकिन मात-पिता के सम्बन्ध से, अलौकिक जन्म और पालना किसी को भी प्राप्त नहीं होती है। तो उन्हें भी इसकी अनुभूति कराओ।

८- वैज्ञानिकों प्रति

इस सृष्टि का परिवर्तन करने के लिए वैज्ञानिक लोग स्थूल साधन इन्वेन्ट करने के निमित्त बने हुए हैं, अपनी इन्वेन्शन को रिफाइन कर रहे हैं। वैज्ञानिक

बड़ी लगन से समय और प्रकृति के तत्वों के ऊपर विजय प्राप्त करने की, सर्व तत्वों को अपने वशीभूत करने की इच्छा में लगे हुए हैं। हर वस्तु को रिफाइन करने में वह अपनी विजय समझते हैं। विज्ञानी आत्मायें आप योगी आत्माओं के लिए, स्वर्ग के साधन बनाने में खूब व्यस्त हैं। जो आपके श्रेष्ठ योग की प्रारब्ध आपको प्राप्त होनी है। वे आप होवनहार देवताओं के लिए प्रकृति के सतोप्रधान श्रेष्ठ साधनों की इन्वेन्शन करने में आपकी ही सेवा में लगे हुए हैं। वैज्ञानिक साइंस बल द्वारा सृष्टि को स्वर्ग बनाने के इच्छुक हैं। स्वर्ग अर्थात् जिसमें अप्राप्त कोई वस्तु न हो।

विज्ञानी आत्मायें बहुत ही सच्चाई सफाई से सेवा कर रही हैं। अगर उन्हों का कार्य देखो, लगन देखो तो अनुभव करेंगे कि सेवा के कार्य में अच्छा ही वफ़ादारी से दिन रात लगे हुए हैं। एक ही लगन में मगन हैं। वह आप श्रेष्ठ आत्माओं के लिए रिफाइन चीजें तैयार कर आपको गिफ्ट रूप में दे जायेंगे। उन आत्माओं का भी कितना त्याग है, मेहनत खुद करते और प्रारब्ध आपको देते हैं। तो उन आत्माओं को भी आफरीन और थैंक्स देंगे ना। तो उनके भी कल्याण की विधि निकालो। यह समझकर नहीं छोड़ दो कि यह तो नास्तिक हैं। नास्तिक हों या आस्तिक फिर भी बच्चे तो हैं ना। आपके भाई तो हैं। ब्रदरहुड के नाते से भी उन आत्माओं को भी किसी प्रकार से वर्सा तो मिलेगा ना। विश्व-कल्याणकारी के रूप में उस तरफ आपके कल्याण की नज़र तो जायेगी। हर एक के अधिकार लेने का अपना-अपना रूप है।

साइन्स वाले बच्चों ने जो इतना समय, इनर्जी, मनी खर्च करके साधन बनाये हैं, बाप भी बच्चों की मेहनत देख खुश होते हैं, सेवा के साधन अच्छे बनाये हैं। फिर भी बच्चे हैं ना तो बाप बच्चों की इन्वेन्शन देख खुश होते हैं। जिस भी कार्य में लगे हुए हैं उसी कार्य में सफलता पा रहे हैं। चाहे अल्पकाल की हो लेकिन सफलता तो है ना। यह एटम एनर्जी जिसे साइंस वाले बच्चे रिफाइन करने में लगे हुए हैं, यह सतयुग में काम आयेगी। यह आप लोगों को कोई दुख नहीं देगी। एक्सीडेंट आदि नहीं होंगे। स्पीड के लिमिट की कोई आवश्यकता नहीं होगी। एक ही दिन में सारा चक्कर लगा लेंगे। सारा वर्ल्ड एक दिन में घूम आयेंगे।

बड़े से बड़ा विज्ञान योग

हद का विज्ञान हद के स्थूल साधनों द्वारा सुख, आराम की अनुभूति कराता है। आपका विज्ञान है योग शक्ति। योग बड़े से बड़ा विज्ञान है। वहाँ है साधन और यहाँ है साधना। आत्मा को मन और बुद्धि की साधना द्वारा कितना दूर ले जाते हो। हद के विज्ञानी सूर्य तक नहीं पहुंच सकते और बेहद के विज्ञानी चन्द्रमा, सूर्य से भी पार पहुंच जाते हैं। वह विज्ञान एयरकन्डीशन द्वारा सुख देता, आराम देता और आप साधना द्वारा जब चाहो तब शीतल स्थिति का अनुभव करो। जब चाहो तब ज्वाला रूप का, शक्ति रूप का अनुभव कर सकते हो। अभी बड़े-बड़े साइंस वाले भी नाउम्मीद होने लगे हैं। उन्हें आप साइलेंस वालों की किरणें दिखाई देंगी, वहाँ ही नज़र जायेगी। आपके आत्म (एटम) से ही उन्होंने एटम बनाया है। कापी तो आपकी ही की है। अगर आत्मिक शक्ति नहीं होती तो यह एटामिक बाम्बस बनाने वाले कहाँ होते।

साइंस और साइलेन्स

साइंस और साइलेन्स का आपस में बहुत गहरा कनेक्शन क्या है। साइंस वाले हर कार्य में प्राप्ति के गति को तीव्र बना रहे हैं, वे लोग आवाज की गति से भी तेज जाने चाहते हैं। सब कार्य सेकेण्ड की गति से भी आगे करना चाहते हैं। इतने सारे विश्व का विनाश कितने थोड़े समय में करने के लिए तैयार हो गये हैं। तो स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्मायें साइलेन्स की शक्ति द्वारा सेकेण्ड में करना, सेकेण्ड में पाना, ऐसी तीव्र गति के अनुभवी बनो।

जैसे साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, सम्पत्ति और शस्त्र कम से कम खर्च हों। पहले विनाश के कार्य में कितनी बड़ी सेना, कितने शस्त्र और कितना समय लगता था और अब विस्तार को सार में लाया है। साइंस वाले बच्चे साइंस के आधार पर कहाँ हरियाली की फीलिंग दिलाते हैं, कहाँ सागर की, पानी की फीलिंग दिलाते हैं। ऐसा स्थान बनाते हैं जो वहाँ जाते ही अनुभव होता है कि सागर में आ गये हैं, पहाड़ी पर आ गये हैं। इसी रीति आप साइलेन्स के आधार पर ऐसा वातावरण बनाओ जो हर एक अनुभव करे कि सुख के वा शान्ति के स्थान पर पहुँच गये हैं।

जैसे साइंस के साधनों द्वारा समय और आवाज़ कितना भी दूर होते समीप हो गया है। जैसे प्लेन द्वारा समय कितना नज़दीक हो गया है, थोड़े समय में कहाँ से कहाँ पहुँच सकते हैं। टेलीफोन द्वारा आवाज़ कितना समीप हो गया है। लण्डन के व्यक्ति का आवाज़ भी ऐसे सुनाई देगा जैसे सम्मुख बात कर रहे हैं। ऐसे ही टेलीवीज़न के साधनों द्वारा कोई भी दृश्य वा व्यक्ति दूर होते हुए भी सम्मुख अनुभव होता है। यह साइन्स तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचयिता हो। साइलेन्स की शक्ति से आप सब भी विश्व की किसी भी दूर रहने वाली आत्मा का आवाज़ सुन सकते हो।

सतोप्रधान बुद्धि से, नालेज की शक्ति से साइंस को यथार्थ रूप से प्रयोग करो तो नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त यह साइंस बनेगी। आज वह नालेज न होने के कारण विनाश की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन साइंस की शक्ति को साइलेन्स की शक्ति के आधार से अच्छे कार्य में लगाने के निमित्त बन सकते हो।

९- पवित्र प्रवृत्ति वालों के प्रति

* प्रवृत्ति में रहते आप सब पवित्र आत्मायें, महान आत्मायें हो। आप आग-कपूस इकट्ठे रह अपनी जीवन द्वारा सबको पवित्रता का पाठ पढ़ाने वाले एग्ज़ाम्पल हो। आपका हर कदम व हर कर्म चरित्र के रूप में गाया जायेगा। प्रवृत्ति में रहकर आप सबने हर प्रकार के अनुभव कर लिये। तो अनुभवी कभी भी धोखा नहीं खाते। पास्ट के भी अनुभवी और वर्तमान के भी अनुभवी। एक-एक प्रवृत्ति वाला अपने-अपने अनुभवों द्वारा अनेकों का कल्याण कर सकते हो।

* आप सबकी गाड़ी दो पहिये की है, इसमें दोनों पहिये समान हों। एक पहिया आगे चले दूसरा पीछे, तो ठीक नहीं। आप सबकी यही विशेषता हो जो एक दो से आगे भी रहो और एक दो को आगे करने वाले भी। एक दो को आगे रखना ही आगे होना है। ऐसे नहीं समझो कि मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है। नहीं। आप पाण्डव हो, वह शक्ति है। दोनों ही बाप के सहयोगी हो। पाण्डव अर्थात् सर्वशक्तिवान् बाप के साथी। पाण्डव अर्थात् सदा विजयी रत्न। उन्हें पहले से ही निश्चय होता है कि हमारी जीत है। संकल्प भी नहीं उठ सकता कि जीत होगी या नहीं।

* प्रवृत्ति में रहने वाले पाण्डवों की विजय का मुख्य आधार ही है -'एक

बाप दूसरा न कोई।' पाण्डवों का संसार ही बाप था। यह आपका यादगार हर कल्प गाया जाता है। संसार ही बाप है, जहाँ देखो वहाँ बाप ही नज़र आये। संसार में संबंध और सम्पत्ति होती है तो सम्बन्ध भी बाप में है और सम्पत्ति भी बाप में है तो बाकी रहा ही क्या!

* प्रवृत्ति में रहते सदा सहजयोगी बनने के लिए मेरे-पन को समाप्त करो, मेरा बच्चा, मेरा पोत्रा – मेरे में ममता रहती है। मेरापन समाप्त होना अर्थात् ममता समाप्त होना। एक बाप में शुद्ध मोह रखो। बाप सदा शुद्ध है इसलिए मोह बदलकर प्यार हो जायेगा। एक बाबा से प्यार है तो स्वत: याद सहज हो जायेगी।

* प्रवृत्ति में रहते सदा डबल लाइट स्थिति का अनुभव करो। शरीर के भान का भी बोझ न हो। ट्रस्टी होकर रहने से सब बातों में हल्के रह सकेंगे। जब तन-मन-धन सब बाप को दे दिया फिर अपनापन कहाँ से आया। देकर फिर लेते हो तब बोझ लगता है। अभी-अभी दिया, अभी-अभी लिया... यह खेल समाप्त करो। प्रवृत्ति में रहते त्रिकालदर्शी होकर रहो। माया क्यों आती है, उसे भगाने का तरीका क्या है...यह सब जानकर विजयी बनो। महावीर माया से घबराते नहीं – विजयी बनते हैं। माया आ गई, क्या करें... ऐसे घबराने वाले नहीं। प्रवृत्ति में रहते सदा पर-वृत्ति रहे अर्थात् गृहस्थीपन की वृत्ति से परे (दूर) रहो। ऐसी स्थिति बनाने से ही अज्ञानी आत्मायें भी आपकी चलन से, आपके बोल से, नयनों से न्यारी प्यारी स्थिति का अनुभव कर सकेंगी। वृत्ति न्यारी नहीं बनी है तो प्यारे नहीं बन सकते। दुनिया के बीच रहते हुए ऐसी न्यारी स्थिति बनाओ तो प्यारी स्थिति स्वत: बन जायेगी। ऐसी प्यारी स्थिति अनेक आत्माओं को आपकी तरफ स्वत: ही आकर्षित करेगी।

* आप हर एक के लौकिक घरों से पवित्रता की खुशबू आनी चाहिए। जिस प्रकार अगरबत्ती की खुशबू चारों ओर फैलती है, इसी प्रकार पवित्रता की खुशबू दूर-दूर तक फैलनी चाहिए, तब कहेंगे पवित्र प्रवृत्ति। घर मन्दिर लगे, गृहस्थी नहीं। जैसे मन्दिर का वायुमण्डल सबको आकर्षित करता है ऐसे सबको आकर्षण हो।

* प्रवृत्ति में रहते परमार्थ और व्यवहार दोनों का बैलेन्स रखो। कई बार व्यवहार में आते जहाँ देखते थोड़ी ज्यादा प्राप्ति होती है तो उस प्राप्ति के पीछे

इतना लग जाते हो जो इस ईश्वरीय कमाई को कम कर देते हो। इस तरफ अटेन्शन कम कर उस तरफ की प्राप्ति तरफ ज़्यादा अटेन्शन गया तो यह भी लोभ का अंश है। इस अंश को भी खत्म करो। प्रवृत्ति में रहते नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने का लक्ष्य रखो। जहाँ मेरापन नहीं है वहाँ नष्टोमोहा स्वत: हो जाते हैं। जो सदा निर्मोही हैं वह सदा श्रेष्ठ सुखी हैं। मोह में दुख होता है इसलिए नष्टोमोहा बनो। निमित्त मात्र लौकिक संबंध निभाते स्मृति में अलौकिक और पारलौकिक संबंध रहे। कभी भी पानी वा कीचड़ की बूंद स्पर्श न करे। ऐसे कमल आसन पर सदा विराजमान रहो।

१०- छोटे-छोटे बच्चों प्रति

धरती के चैतन्य सितारे

छोटे बच्चों को कहा जाता है - यह नन्हें मुन्ने बच्चे ही कल के तकदीर की तस्वीर हैं। बापदादा इन छोटे-छोटे बच्चों को धरती के चमकते हुए सितारे कहते हैं। यही लकी सितारे विश्व को नई रोशनी देने के निमित्त बनेंगे। स्थापना के समय जो छोटे बच्चे आये वह आज शिवशक्ति पाण्डव सेना के रूप में विश्व परिवर्तन का कार्य कर रहे हैं। आज उन्हीं जगे हुए दीपकों से आप सभी दीपमाला बन बाप के गले के हार बन गये हो। तो आप छोटे बच्चों में विश्व के कल की तकदीर की तस्वीर दिखाई देती है। आप एक-एक बच्चा अनेक आत्माओं को बाप का परिचय दे बाप के वर्से के अधिकारी बनाने वाले हो।

छोटे बच्चे-महात्मा समान

बच्चों को महात्मा कहा जाता है। सच्चे-सच्चे महान आत्मायें अर्थात् श्रेष्ठ पवित्र आत्मायें आप सब हो। तो अपना यह श्रेष्ठ जीवन सदा याद रखना। हर एक बच्चा विश्व की सर्व आत्माओं के श्रेष्ठ परिवर्तन के निमित्त है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी उठानी है। इसके लिए अमृतवेले से लेकर रात तक सहज योगी, श्रेष्ठ योगी जो भी श्रेष्ठ जीवन के लिए दिनचर्या मिली हुई है, उसी प्रमाण चलना। यह अटेन्शन अभी से दृढ़ संकल्प के रूप में रखना। आप योगी बच्चे हो, तो योगियों की बैठक, चलन और दृष्टि हो। चंचलता कभी नहीं करना। जो दुनिया वाले करते हैं वह आप नहीं कर सकते।

आप महान आत्मायें ऐसे शान्त स्वरूप रहो जो भल कितने भी बड़े-बड़े हों

लेकिन आप शान्त स्वरूप आत्माओं को देख शान्ति की अनुभूति करें और यही दिखाई दे कि यह साधारण बच्चे नहीं लेकिन सभी अलौकिक बच्चे हैं। न्यारे हैं और विशेष आत्मायें हैं। अभी से यह परिवर्तन करना। किसी के भी संगदोष में नहीं आना।

पढ़ते हो, खेलते हो, चलते हो लेकिन याद रहे कि हम महान आत्मायें हैं, सदा यह नशा रखो कि हम ऊँचे ते ऊँचे भगवान के बच्चे हैं। तो सदा शान्त, योगी जीवन में रहना और रोज सुबह उठकर **गुडमार्निंग ज़रूर** करना। ऐसे नहीं देरी से उठो और जल्दी-जल्दी तैयार होकर स्कूल चले जाओ। ३ मिनट भी याद में बैठकर गुडमार्निंग जरूर करो। यह व्रत कभी भी भूलना नहीं। गुडमार्निंग करके फिर भोजन खाना। उस पढ़ाई के साथ यह ज्ञान की पढ़ाई पढ़ो, अच्छे गुण धारण करो तो विश्व में आप रूहानी गुलाब बन खुशबू फैलायेंगे। गुलाब के फूल सदा खिले रहते हैं और सदा खुशबू देते हैं। तो ऐसे ही खुशबूदार फूल बनना। खाओ-पियो, चलो फरिश्ता बन करके, किसी भी प्रकार की चंचलता नहीं करो।

एक-एक बच्चा वा बच्ची बहुत बड़ा कार्य कर सकते हैं। विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बन सकते हैं। बापदादा ने विश्व परिवर्तन का कार्य बच्चों को दिया है। तो सदा बाप और सेवा की याद में रहो। विश्व परिवर्तन करने की सेवा के पहले अपना परिवर्तन करो। जो पहले की जीवन थी उससे बिल्कुल बदलकर बस श्रेष्ठ आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, महान आत्मा हूँ, भाग्यवान आत्मा हूँ, इसी याद में रहो। यह याद स्कूल या कालेज में जाकर भूलना नहीं। संग के रंग में नहीं आना। कभी खाने-पीने की तरफ आकर्षित नहीं होना। थोड़ा बाहर का बिस्कुट या आइस्क्रीम खा लें, ऐसी इच्छा भी न हो। याद में रहकर बनाया हुआ भोजन ब्रह्मा-भोजन खाना।

छोटे-पन से लेकर ईश्वरीय सेवा के शौक में रहो। पढ़ाई भी पढ़ो और पढ़ाना भी सीखो। छोटेपन में होशियार हो जायेंगे तो बड़े होकर चारों ओर की सेवा में निमित्त बन जायेंगे। स्थापना के समय भी छोटे-छोटे थे, वह अब कितनी सेवा कर रहे हैं, आप लोग उनसे भी होशियार बनना। कल की तकदीर हो। कल भारत स्वर्ग बन जायेगा तो कल की तकदीर आप हो। कोई भी आपको देखे तो अनुभव करे कि यह साधारण नहीं, विशेष हैं।

योग अभ्यास के लिए भिन्न-भिन्न स्थितियाँ

१- साक्षी दृष्टा स्थिति

* साक्षी दृष्टा अर्थात् न्यारा होकर हर एक के पार्ट को देखना। शरीर से न्यारे होकर कर्मेन्द्रियों से कर्म कराते स्वयं को इस ड्रामा के अन्दर विशेष पार्टधारी समझकर पार्ट बजाना - यही साक्षी दृष्टा स्थिति है।

* मैं साक्षी-दृष्टा हूँ, इस स्मृति से ही समर्थी आ जाती है और जिसके पास समर्थी है उसकी स्व-स्थिति को कोई भी परिस्थिति डगमग नहीं कर सकती। उन्हें परीक्षायें एक खेल अनुभव होती हैं। वे किसी भी प्रकार का नया दृश्य वा आश्चर्यजनक दृश्य देखते मुरझाते नहीं। तूफानों को भी ड्रामा का तोहफ़ा समझ, स्वभाव-संस्कारों की टक्कर को आगे बढ़ने का आधार समझ, माया को परखते हुए सहज पार कर लेते हैं।

* साक्षी दृष्टा के स्थिति की सीट पर बैठकर हर दृश्य देखने वा निर्णय करने से बहुत मजा आता है, भय नहीं लगता। जैसेकि अनेक बार देखी हुई सीन फिर से देख रहे हैं। वह वायुमण्डल को भी डबल लाइट बना देते हैं। उन्हें पहाड़ समान पेपर राई के समान अनुभव होता है।

* कर्म करने के पहले त्रिकालदर्शी स्टेज पर स्थित हो तीनों कालों को जानने वाले बन कर्म के आदि, मध्य, अन्त को जानकर हर कर्म करने वा साक्षी-दृष्टा हो पार्ट बजाने से वर्तमान वा भविष्य में पूज्य स्वरूप बन अनेक आत्माओं के आगे दृष्टान्त रूप बन जायेंगे।

* साक्षी दृष्टा बन कर्म करने से कोई भी कर्म के बन्धन में कर्मबन्धनी आत्मा नहीं बनेंगे। कर्म का फल श्रेष्ठ होने के कारण कर्म सम्बन्ध में आयेंगे, बन्धन में नहीं। सदा कर्म करते हुए भी न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करेंगे, ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अभी भी अनेक आत्माओं के सामने दृष्टान्त अर्थात् एक्जैम्पुल बनते हैं – जिसको देखकर अनेक आत्मायें स्वयं भी कर्मयोगी बन जाती हैं।

* साक्षी-दृष्टा की स्थिति और साथीपन की विशेषता से, ड्रामा के हर पार्ट

बजाने से टेंशन मुक्त बन जाते हैं। कभी किसी भी बात में क्या और क्यों का प्रश्न नहीं उठता। यह क्या और क्यों के प्रश्न ही टेन्शन पैदा करते हैं। लेकिन संगमयुगी श्रेष्ठ पार्टधारी, नालेजफुल आत्मायें जो साक्षी दृष्टा स्थिति बना लेती हैं, वह सब बातों को जानने के कारण निश्चित रहती हैं। टेन्शन में नहीं आती। यदि किसी आत्मा का तमोगुणी अर्थात् अज्ञान का पार्ट है, तो शुभभावना और शुभकामना से उनके पार्ट को साक्षी हो देखते हुए शान्ति और शक्ति का दान देना है, घबराना नहीं है। अपने सतोप्रधान पार्ट में स्थित रहना है। निश्चय बुद्धि बन, साक्षी होकर अपना वा दूसरों का पार्ट देखेंगे तो विचलित नहीं होंगे।

* एक तो हरेक के संस्कार भिन्न-भिन्न हैं, दूसरा कोई-न-कोई माया का रूप बनकर भी आते हैं। यह तो खत्म होगा ही नहीं लेकिन उसमें स्वयं कमल पुष्प के समान सेफ रहने के लिए साक्षीपन की स्थिति में रहने का अभ्यास करो। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए भी टक्कर न हो, इसके लिए नालेजफुल हो जाओ।

* विनाश लीला के विकराल रूप को देखने के लिए देह, सम्बन्ध, पदार्थ, संस्कार इन सबकी आकर्षण से परे, प्रकृति की हलचल की आकर्षण से परे, फरिश्ता बन ऊपर की, साक्षी दृष्टा स्थिति में स्थित रहने से ही शान्ति और शक्ति की किरणें सर्व आत्माओं के प्रति दे सकेंगे।

* जैसे ड्रामा की सीन सीट पर स्थित हो देखने में ही मज़ा आता है, ऐसे साक्षीपन की सीट पर सदा स्थित रहो तो हार और जीत के दृश्य को देखकर कभी भी डगमग नहीं होंगे। सदा एकरस रहेंगे।

ऐसी साक्षी दृष्टा स्थिति बनाने के लिए

१- सदा स्वचिंतन चलता रहे।

२- सदा शुभ चिन्तन और शुभ चिंतक हो। जरा भी व्यर्थ बातों में समय व्यर्थ न जाए। ३- चलते-फिरते अपने को निराकारी आत्मा और कर्म करते अव्यक्त फरिश्ता समझो। इस देह की दुनिया में कुछ भी होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखते, सकाश अर्थात् सहयोग देते हैं। सकाश देना ही निभाना है। जब ऐसी साक्षी दृष्टा की स्टेज पर रहेगी तब किसी भी प्रकार के वातावरण का सेक नहीं आयेगा।

२-विश्व-कल्याणकारी स्थिति

* विश्व की सर्व आत्माएँ आपका परिवार हैं क्योंकि बेहद के बाप के बच्चे हो; तो बेहद के परिवार के हो। इसलिए रहमदिल बन सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनना ही विश्व-कल्याणकारी स्थिति है। स्मृति रहे मैं विश्व के मालिक का बालक हूँ, मास्टर रचयिता बन विश्व की रेख देख करना वा विश्व की परिक्रमा लगाना, यही विश्व कल्याणकारी स्थिति है। जैसे पहले के योग्य राजायें सदा अपने राज्य का चक्र लगाते थे। प्रजा को सदा सुखी और सन्तुष्ट रखते थे। ऐसे मास्टर रचयिता बन विश्व की रेख-देख करनी है।

* विश्व-कल्याणकारी बच्चे स्वप्न में भी फ्री नहीं हो सकते। उन्हें स्वप्न में भी सेवा ही दिखाई देगी। जो दिन-रात सेवा में बिज़ी रहते हैं, उन्हें स्वप्न में भी कई नई-नई बातें, सेवा के प्लैन व तरीके दिखाई देते हैं। विश्व-कल्याणकारी का अर्थ ही है विश्व के आधारमूर्त, वे कभी अलबेले नहीं हो सकते।

* जैसे बाप के आगे स्वयं को समर्पण करते हो, वैसे अपना समय और सर्व प्राप्तियाँ, ज्ञान, गुण और शक्तियाँ विश्व की सेवा अर्थ समर्पण करो। जो संकल्प उठता है उसे चेक करो कि विश्व सेवा प्रति है? जब सेवा प्रति स्वयं को सम्पूर्ण समर्पण करेंगे तब विश्व कल्याणकारी स्थिति में स्थित हो सकेंगे।

* विश्व-कल्याणकारी वह है जिसका हर बोल रूहानी साज़ के समान उत्साह और उमंग दिलाये। उदास आत्मा खुशी में नाचने लगे, जिसका हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य हो। हर सेकेण्ड का सम्पर्क आत्मा को सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव कराये। कोई आत्मा को शक्ति का, कोई को शान्ति का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन से अधिकारी बनने का, उदास से हर्षित होने का, छत्रछाया का अनुभव कराये।

* इतने बड़े विश्व का कल्याण करने के लिए एक ही समय पर हर सेकेण्ड मन, वाणी और कर्म तीनों द्वारा साथ-साथ सर्विस करनी है। जब तीनों ही रूपों से सेवा हो तब यह सेवा का कार्य समाप्त हो सकेगा। एक ही समय तीनों रूपों से सेवा करने वाले विश्व-कल्याणकारी हैं।

* विश्व-कल्याणकारी स्थिति में स्थित रहने से सदा अथक और निरन्तर सेवाधारी होंगे। सदा एवररेडी, आलराउन्डर होंगे। कैसी भी अवगुण वाली आत्मा

के प्रति, कड़े संस्कार वाली आत्मा के प्रति, कम बुद्धि वाली आत्मा के प्रति, ग्लानि करने वाली आत्मा के प्रति भी कल्याणकारी अर्थात् लॉफुल और लवफुल होंगे। उनके सामने कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो, कैसी भी अज्ञानी पतित आत्मा हो, उसकी बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते क्षमा करेंगे, दिल पर नहीं रखेंगे।

* जैसे बाप के संकल्प वा बोल में, नयनों में सदा ही कल्याण की भावना व शुभ कामना भरी हुई है। ऐसे चाहे कोई भी काम कर रहे हो हद की प्रवृत्ति को अथवा कोई भी सेवा-केन्द्र चलाने अर्थ निमित्त हो लेकिन अन्दर सदा विश्व-कल्याण की भावना भरी हुई हो। सदा सामने विश्व की सर्व आत्मायें इमर्ज हों। कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा को अपनी श्रेष्ठ भावना व श्रेष्ठ कामना के आधार से सेकण्ड में शान्ति व शक्ति की किरणें देना, मास्टर ज्ञान सूर्य बन विश्व को कल्याण की रोशनी देना ही विश्व-कल्याणकारी स्थिति है।

* विश्व-कल्याणकारी सर्विसएबुल बच्चों के संकल्प कभी भी व्यर्थ नहीं हो सकते क्योंकि वह विश्व की स्टेज पर एक्ट करने वाले होते, उन्हें सारी विश्व कॉपी करती है। अगर एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो अपने प्रति नहीं किया लेकिन अनेकों के प्रति निमित्त बन गए। जैसे आपको सेवा के लिफ्ट की गिफ्ट मिलती है, अनेकों की सेवा का शेयर मिल जाता है। वैसे ही अगर कोई ऐसा कार्य करते हो तो अनेकों को व्यर्थ सिखाने के निमित्त भी बन जाते हो। इसलिए अब व्यर्थ का खाता समाप्त हो।

विश्व-कल्याणकारी स्थिति बनाने के लिए

* पहले स्व-कल्याण सैम्पुल के रूप में दिखाओ। मधुरता और नम्रता का गुण पहले स्वयं धारण करो।

* विश्व-कल्याण करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण की आवश्यकता है। जो बोलते हो, वह प्रैक्टिकल स्वरूप में देखें। यदि कहते हो हम मास्टर सर्वशक्तिवान् हैं, मायाजीत हैं तो व्यर्थ संकल्प को सेकण्ड में समाप्त करो। पहले स्वयं को सम्पन्न बनाओ। सम्पूर्णता के आइने में स्वयं का स्वरूप देखो, तब कहेंगे विश्व-कल्याणकारी।

* जैसे बीज द्वारा स्वत: ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है, ऐसे आप

जब बीजरूप स्टेज पर स्थित होते हो तो आटोमेटिकली विश्व को लाइट का पानी मिल जाता है। जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर होते हुए चारों ओर अपनी लाइट फैलाते हैं, ऐसे लाइट हाउस बनो तो विश्व-कल्याणकारी बन जायेंगे।

* हर संकल्प में विश्व-कल्याण की स्मृति रहे। जब लक्ष्य रहता है कि हम विश्व-कल्याणकारी हैं तो अकल्याण का कर्तव्य हो नहीं सकता, जैसा कार्य होता है वैसी अपनी धारणायें होती हैं, अगर कार्य याद रहे तो सदा रहमदिल, सदा महादानी रहेंगे। विश्व-कल्याणकारी की स्मृति से स्वयं प्रति भी हर कदम कल्याणकारी की स्मृति, वृत्ति से चलेंगे और चलायेंगे।

* विश्व-कल्याणकारी बनने के लिए बेहद की स्थिति चाहिए। सम्बन्ध, संस्कार, स्वभाव सब बेहद में हों, हद के नहीं। हद निमित्त मात्र, सारा अटेन्शन बेहद की सेवा में हो। तन-मन और प्राप्त धन सदा विश्व सेवा में अर्पण हो। मस्तक और नयनों में विश्व की सर्व आत्मायें स्मृति वा दृष्टि में रहें। अप्राप्त आत्माओं को तृप्त, भिखारी आत्माओं को सम्पन्न बनाने की धुन लगी रहे। दिन-रात बाप द्वारा शक्तियों का वरदान लेते हुए सर्व को देने वाले दाता बनो।

३-विघ्न-विनाशक स्थिति

आपका यादगार विघ्न-विनाशक (गणेश) के रूप में आज तक भी पूजा जाता है। कोई भी विघ्न का विनाश करने के लिए शक्तियों की आवश्यकता है, इसलिए सब शक्तियों से सम्पन्न बनो। विघ्न प्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस पहनकर रहो। मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनो, साथ-साथ सर्व गुणों के गहनों से सजे रहो। विशेष ८ शक्तियों के शस्त्रों से सदा अष्ट शक्ति शस्त्रधारी सम्पन्न मूर्ति बनकर रहो।

* अमृतवेले जब चारों ओर तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर विशेष रूप से ज्ञान-सूर्य की लाईट और माइट की किरणों का स्वयं पर अनुभव करो। बुद्धि रूपी कलष में शक्तियों का अमृत धारण कर लो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे, स्थिति विघ्न-विनाशक बन जायेगी।

* मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ, इससे वायुमण्डल पॉवरफुल बनेगा। जो मन्सा सेवा करना जानते हैं वो स्वयं भी विघ्न-विनाशक स्थिति में रहते हैं और

सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न रहता है। वहाँ किसी आत्मा के विघ्न रूप बनने की हिम्मत भी नहीं हो सकती है।

* माया शेर के रूप में भी विघ्न लेकर सामने आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती है।

* विघ्न-विनाशक स्थिति का अनुभव करने के लिए सर्व की दुआयें लो। पहले हैं मात-पिता की दुआएं और साथ में सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व द्वारा दुआएं। जिन्हें सर्व की दुआयें मिलती हैं उन्हें कोई भी विघ्न जरा भी स्पर्श नहीं कर सकता है। हर कर्म, बोल और संकल्प में सहज ही योगयुक्त, युक्तियुक्त बन जायेंगे।

* विघ्न-विनाशक स्थिति का अनुभव करने के लिए परखने की शक्ति को बढ़ाओ। माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है, इसकी रिजल्ट क्या है? यह परख लो तो परीक्षाओं में फेल नहीं हो सकते। विघ्नों को एक सेकेण्ड में खत्म करना है तो सिर्फ दो अक्षर याद रखना कि जो कहते हैं वो करना है।

* जितना योगबल और ज्ञानबल दोनों को समानता में लायेंगे उतना विघ्न-विनाशक स्थिति का अनुभव होगा। दृढ़ निश्चय के आगे कोई रुकावट आ नहीं सकती।

* विघ्न विनाशक स्थिति का अनुभव करने के लिए निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। इसके लिए बापदादा के हर कर्तव्य वा चरित्रों की कसौटी को सामने रखो। जो भी कर्म वा संकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है? व्यर्थ है वा समर्थ है? तो जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा। इस कसौटी को साथ रखो तो विघ्न-विनाशक स्थिति का अनुभव करेंगे।

४- बेहद के वैराग्य की स्थिति

* बेहद के वैरागी अर्थात् राजऋषि। स्वराज्य मिला तो राजा भी हो और साथ-साथ पुरानी दुनिया का ज्ञान मिला तो पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी भी

हो, इसलिये ऋषि भी हो। एक तरफ़ राज्य, दूसरे तरफ़ ऋषि अर्थात् बेहद के वैरागी। यही तपस्या का सदा और सहज फाउन्डेशन है।

* बेहद का वैराग्य अर्थात् चारों ओर के किनारे छोड़ देना। समय प्रमाण प्यारे बनो लेकिन श्रीमत पर निमित्त बनी हुई आत्माओं के इशारे प्रमाण सेकेण्ड में बुद्धि प्यारे से फिर न्यारी बन जाए। न्यारा बनना ही किनारा छोड़ना है और किनारा छोड़ना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति है।

* मन-बुद्धि और संस्कार सब वश में रहें, कहाँ भी संकल्प मात्र थोड़ा भी लगाव न हो। इस पुरानी दुनिया का लगाव सोनी हिरण (स्वर्ण-मृग)के समान है, यह शोक वाटिका में ले जाता है इसलिए इसमें जरा भी बुद्धियोग न जाए। एक बाप दूसरा न कोई–इस स्मृति में रहना ही बेहद के वैराग्य की स्थिति है।

* बेहद की वैराग्य वृत्ति के लिए अपना असली निराकारी घर और मधुबन साकारी घर की सदा याद रहे। हम परमधाम निवासी आत्मा इस व्यक्त देश में ईश्वरीय कर्तव्य करने के निमित्त आये हुए हैं, हम अवतार अवतरित हुए हैं–इस स्मृति से बेहद के वैरागी बन जायेंगे। दूसरा साकार घर मधुबन की स्मृति से मधुरता के साथ-साथ बेहद के वैराग्य की वृत्ति स्वत: रहेगी।

* मेरेपन के भाव से भी वैराग्य हो क्योंकि माया वर्तमान समय नये-नये प्रकार के मेरेपन की छाया डाल रही है। नये-नये प्रकार के छोटे-छोटे लगाव का विस्तार बहुत बड़ा होता जाता है, जिससे सार छिप गया है। इसलिए बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ।

* बेहद के वैरागी सदा उपराम रहेंगे। अपनी देह से भी उपराम और साक्षी दृष्टा। एक तो अपनी बुद्धि से उपराम, संस्कारों से भी उपराम। मेरे संस्कार हैं – इस मेरेपन से भी उपराम। मैं यह समझती हूँ, इस मैं-पन से भी उपराम। मैं तो यह समझती हूँ, नहीं, लेकिन समझो बापदादा की यही श्रीमत है। ज्ञान की बुद्धि के बाद जो मैं-पन आता है, वह मैं-पन बहुत नुकसान करता है। एक तो मैं शरीर हूँ यह छोड़ना है, दूसरा मैं समझती हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा हूँ, मैं बुद्धिमान हूँ, यह मैं पन भी मिटाना है। जहाँ मैं शब्द आता है वहाँ बापदादा याद आये और जहाँ मेरी समझ आती है वहाँ श्रीमत याद आये – तब बेहद का वैराग्य स्थाई रह सकता है।

* बेहद के वैरागी अर्थात् संगठन में रहते भी न्यारे और सर्व के प्यारे। साथ भी रहो और अकेले रहने का भी अभ्यास हो। बाहर का अकेला पन और अन्दर का साथ। बाहर के साथ से अकेलापन भूल जाते हैं। लेकिन बाहर से अकेले अन्दर से अकेले नहीं। जो ऐसे न्यारे-प्यारे होते हैं उनको बापदादा का सहारा मिलता है। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं, न्यारे बनने का पुरुषार्थ करो। पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से वैराग्य हो। जैसे कहाँ भी जाना होता है तो जिन चीज़ों को छोड़ना होता है उनसे पीठ करनी होती है। अगर पीठ कर दिया तो सहज ही उनकी आकर्षण से बच जायेंगे।

* सारी दुनिया में आजकल का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है इसलिए वैरागी नहीं बन पाते। इसके लिए स्वार्थ शब्द के अर्थ स्वरूप में टिकने का पुरुषार्थ करो। स्वार्थ अर्थात् स्व का यह जो रथ है उसे स्वाहा करो अर्थात् देह अभिमान, देह की स्मृति वा देह का लगाव जो लगा हुआ है इस स्वार्थ को खत्म करो। स्वार्थ गया तो न्यारे बन ही जायेंगे। ऐसे जो बेहद के वैरागी होंगे वह रूह को ही देखेंगे।

* जैसे कोई बड़े-बड़े महात्माएं बहुत समय गुफाओं में रहने के बाद सेवा के लिए सृष्टि पर आते हैं, ऐसे आप भी जब स्टेज पर आओ तो यह अनुभव होना चाहिए कि यह आत्माएँ बहुत समय के बाद अन्तर्मुखता, रूहानियत की गुफा से निकल कर सेवा के लिए आई हैं। आपके चेहरे से आपका तपस्वी रूप वा बेहद के वैराग्य की रेखायें दिखाई दें।

५- रहमदिल स्थिति

* जैसे लौकिक रूप में भी हद का रचयिता अपनी रचना को दु:खी व तड़पता हुआ देख नहीं सकता। ऐसे आप बच्चे भी जब अपने को मास्टर रचयिता समझ रहमदिल स्थिति में स्थित होंगे तो अपनी रचना के दु:ख के विलाप व तड़पन को देख नहीं सकेंगे। उस समय उन्हें कुछ देना पड़ेगा। अनेक प्रकार के विनाशी सुख-शान्ति में विचलित हुई आत्माएँ, जो बाप को और अपने आप को भूल चुकी हैं, ऐसी भूली हुई आत्माओं पर कल्याण की भावना द्वारा उन्हें भी यथार्थ मंजिल बताकर अविनाशी प्राप्ति की अंचलि देना यही रहमदिल

स्थिति है।

* जब तक स्वयं प्रति बाप द्वारा रहम लेने की आवश्यकता व इच्छा है, तब तक अन्य आत्माओं के प्रति रहमदिल नहीं बन सकते। जो स्वयं ही लेने वाला है, वह देने वाला दाता नहीं बन सकता। हाँ अल्पकाल के लिए कुछ शक्तियों के आधार से, उन्हों पर थोड़े समय के लिए प्रभाव डाल सकते हो। लेकिन सदाकाल के लिए और सर्व में सम्पन्न नहीं बना सकते, इसलिए पहले स्वयं सर्व खजानों से सम्पन्न तृप्त आत्मा बनो।

* अब समय-प्रमाण सप्ताह कोर्स के बजाए अपने वरदानों द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों के द्वारा सेकेण्ड का कोर्स कराओ; तब ही सर्व आत्माओं को रूहों की दुनिया में बाप के साथ ले जा सकेंगे। स्मृति द्वारा निर्बल आत्माओं को समर्थी स्वरूप बनाओ। ऐसी रॉयल्टी और पर्सनाल्टी स्वयं में प्रत्यक्ष रूप में लाओ, तब स्वयं को व बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे! इसलिए अब विशेष रहमदिल का स्वरूप इमर्ज करो। स्वयं के साथ सर्व पर रहम करो। जैसे द्वापर में आप सबने बाप की ग्लानि की, लेकिन बाप ने ग्लानि भी गायन समझ कर स्वीकार की और ग्लानि के रिटर्न में भक्ति का फल-ज्ञान दिया, न कि घृणा की। रहम-दिल बने। ऐसे फ़ालो फ़ादर करो।

* अगर कोई कुछ राँग कर रहा है तो उसको परवश समझ कर रहम की दृष्टि से परिवर्तन करो, डिसकस नहीं करो। अगर कोई कारण रूपी पत्थर से रुक जाता है, तो अपना काम है पास करके चले जाना या उसको साथी बना कर पार ले जाना। अगर इतनी हिम्मत नहीं है तो खुद तो नहीं रुको। क्रास करते हुए चलते जाओ। देखते हुए भी कमज़ोरी को समाकर सहयोग देते रहो। तिरस्कार नहीं करो लेकिन तरस की भावना रखो। किसी ने जो कुछ किया, मानो राँग भी किया, लेकिन संगठन प्रमाण वा अपने संस्कारों प्रमाण व समय प्रमाण उसने जो किया उसका भी जरूर कोई भाव-अर्थ होगा। संगठित रूप में जहाँ सर्विस है, वहाँ उसके संस्कारों को भी रहमदिल की दृष्टि से देखते हुए, संस्कारों को सामने न रख इसमें भी कोई कल्याण होगा इसको साथ मिलाकर चलने में ही कल्याण है – ऐसा फैथ जब संगठन में एक दूसरे के प्रति हो, तब ही सफलता हो सकती है।

* कोई की भी कमी देखकर के उनके वातावरण के प्रभाव में नहीं आ जाओ। उस आत्मा के प्रति रहम की दृष्टि-वृत्ति हो, सामना नहीं करो। यह आत्मा भूल के परवश है इसका दोष नहीं है, इस संकल्प से उस वातावरण का व बात का प्रभाव आप आत्मा पर न हो तब कमल-पुष्प समान न्यारा बन उस पर रहमदिल बन सकेंगे।

* बेहद के बाप के बच्चे बेहद परिवार के हो। तो अपने परिवार प्रति रहम दिल बनो। मास्टर रचता बनो। स्वयं कल्याणकारी नहीं, लेकिन विश्व-कल्याण-कारी बनो। अपने जमा की हुई शक्तियों वा ज्ञान के खज़ाने को मास्टर ज्ञान-सूर्य बन, वृत्ति, दृष्टि और स्मृति के अर्थात् शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, अपने जीवन में गुणों की धारणाओं द्वारा, इन सब साधनों की किरणों द्वारा अशान्ति को मिटाओ।

* जैसे सूर्य एक स्थान पर होते हुए भी अपने किरणों द्वारा चारों ओर का अन्धकार दूर करता है, ऐसे मास्टर ज्ञान-सूर्य बन दु:खी आत्माओं पर रहम करो। कैसी भी कोई आत्मा, चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सम्पर्क में आये, लेकिन सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि न हो।

* आप विश्व-कल्याणकारी अर्थात् रहमदिल आत्मायें हो इसलिए कैसी भी अवगुण वाली आत्मा हो, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, पत्थर बुद्धि हो, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो, सर्व आत्माओं के प्रति कल्याणकारी अर्थात् लाफुल और लवफुल बनो। रहम के बजाए कभी वहम भाव पैदा न हो। यह संकल्प न आये कि ये तो हैं ही ऐसे, सब तो राजा बनने वाले नहीं हैं। दूसरा– – रहम भाव के बदले अहम् भाव भी न आये कि ये तो कुछ नहीं कर सकते, मैं सब कुछ कर सकता हूँ। इस प्रकार का अहम् भाव अर्थात् मैं-पन का अभिमान न आये।

* कैसी भी अवगुणधारी आत्मा हो, कैसी भी अज्ञानी पतित आत्मा हो, ब्राह्मण परिवार की पुरुषार्थहीन आत्मा हो। आप बेहद की दाता आत्मा, विश्व परिवर्तन अधिकारी आत्मा सदा उन आत्माओं की बुराई वा कमजोरियों को कल्याणकारी होने के नाते पहले क्षमा करो। रहमदिल बाप के बच्चे रहमदिल बन,

कमजोर आत्माओं को शक्ति दे आगे बढ़ाओ। सम्पन्न मूर्त बन सेवा करो तो सफलता मिलेगी।

* जैसे दु:खी आत्माओं के ऊपर रहमदिल बनते हो वैसे कमजोरियों के ऊपर भी रहमदिल बनो। कभी किसी प्रकार की आत्मा के प्रति संकल्प मात्र भी रोब नहीं आये। यह 'ऐसा क्यों', 'ऐसा करना नहीं चाहिए', 'होना नहीं चाहिए', 'ज्ञान यह कहता है क्या', यह भी सूक्ष्म रोब का अंश है। इसलिए रहमदिल दाता स्वमानधारी बन सभी को मान देकर ऊपर उठाओ। अगर कोई पुरुषार्थी अपनी कमज़ोरी से या अलबेलेपन के कारण अपनी स्टेज से नीचे आ जाते हैं अथवा गिर जाते हैं तो भी आप स्वमानधारी पुण्य आत्मा का काम है – गिरे हुए को उठाना, सहयोगी बनना न कि 'क्यों गिरा', 'गिरना ही चाहिए', 'कर्मों का फल भोग रहे हैं', 'करेंगे तो ज़रूर पायेंगे', आप रहमदिल स्वमानधारियों के संकल्प में भी किसी के प्रति ऐसा संकल्प या बोल नहीं निकल सकता।

* कल्प पहले वाली भक्त आत्मायें आप इष्ट देवों का आह्वान कर रही हैं। ''आ जा, आ जा'' की धुन लगा रही हैं। आप सभी को राजी करने के अनेक साधन अपना रही हैं। तो चैतन्य में गुप्त रूप में सुनते हुए, देखते हुए उनके प्रति रहम उत्पन्न हो। इसके लिए स्वयं को जगत-माता व जगत-पिता के रूप में अनुभव करो। संगठित रूप में सबके अन्दर रहम की भावना, विश्व-कल्याण की भावना, सर्व-आत्माओं को दु:खों से छुड़ाने की शुभ कामनाएं दिल से उत्पन्न हों तब विश्व-परिवर्तन होगा। संगठित रूप में ऐसे एक संकल्प को अपनाओ अर्थात् दृढ़ संकल्प की इकट्ठी अंगुली सभी दो, तो यह कलियुगी पर्वत परिवर्तन करके गोल्डन वर्ल्ड को ला सकेंगे।

६- दानी, महादानी, वरदानी स्थिति

* विशेष वाणी द्वारा सेवा करने के साथ-साथ मन्सा अर्थात् संकल्प द्वारा शुभ भावना और शुभकामना द्वारा सेवा करो – यही है महादानी-वरदानी स्थिति।

* आपके अनादि, आदि और अविनाशी संस्कार दातापन के हैं। देवता अर्थात् देने वाले। संगम पर मास्टर दाता हो। आधाकल्प देवता रूप से देने वाले हो। द्वापर से आपके जड़ चित्र देने वाले देवता कहलाते हैं। तो दाता पन के संस्कारों वाली हे सम्पन्न आत्मायें, शहनशाह के बच्चे अब महादानी-वरदानी

स्थिति में स्थित रह महादान और वरदान दो। आपके भाई अल्पकाल की इच्छाओं में भटक रहे हैं। इच्छाओं के चक्र में मकड़ी की जाल मुआफ़िक फँसी हुई आत्माओं को आप महादानी-वरदानी आत्मायें इच्छा मात्रम् अविद्या बनाओ। उन्हें श्रेष्ठ शान की स्मृति दिलाओ कि आप ईश्वर के बच्चे हो, सर्व प्राप्तियाँ आपका जन्म सिद्ध अधिकार हैं। यह स्मृति दिलाकर उनकी सर्व परेशानियां समाप्त करो।

* जैसे भाग्य विधाता बाप ने ब्रह्मा द्वारा भाग्य बांटा, ऐसे आप ब्राह्मण बच्चे भी महादानी बन भाग्य बांटते रहो। जिसे भाग्य प्राप्त हुआ उसे सब कुछ प्राप्त हो जायेगा। वैसे अगर आज किसी को कपड़ा देंगे तो कल अनाज की कमी पड़ जायेगी, कल अनाज देंगे तो पानी की कमी पड़ जायेगी। एक एक चीज़ कहाँ तक बांटेंगे, उससे तृप्त नहीं हो सकते। लेकिन अगर भाग्य बांटा तो जहाँ भाग्य है वहाँ सब कुछ है।

* स्वयं प्रति सर्व खज़ानों को कम यूज करो, सेवा के प्रति अधिक, क्योंकि अनेक आत्माओं के प्रति महादानी बन देना ही लेना है। सर्व प्रति कल्याणकारी बनना ही स्वयं कल्याणकारी बनना है। धन देना अर्थात् एक से सौगुणा जमा करना। वर्तमान समय स्वयं के प्रति छोटी-छोटी बातों में वा चींटी समान आने वाले विघ्नों में अपने सर्व खजाने स्वयं प्रति लगाने का समय नहीं है। बेहद के सेवाधारी बनो तो स्वयं की सेवा सहज हो जायेगी। फ्राकदिल से उदारचित होकर प्राप्ति के खजाने बांटते जाओ। उदारचित बनने से स्वयं का उद्धार हो जायेगा।

* सबसे बड़े ते बड़ी देन है दाता के बच्चे बन सर्व को सहयोग देना। बिगड़े हुए कार्य को, बिगड़े हुए संस्कारों को, बिगड़े हुए मूड को शुभ भावना से ठीक करने में सदा सर्व के सहयोगी बनना ही महादानी-वरदानी स्टेज है। किसी में कोई भी शक्ति की कमी हो तो अपने सहयोग से उसे भर दो। अपनी वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाने का सहयोग दो। स्मृति द्वारा मास्टर समर्थ शक्तिवान् स्वरूप की स्मृति दिलाओ। वाणी द्वारा आत्माओं को स्वदर्शन चक्रधारी मास्टर त्रिकालदर्शी बनने का सहयोग दो। कर्म द्वारा सदा कमल पुष्प समान रहने का वा कर्मयोगी बनने का सन्देश दो। बाप से सर्व सम्बन्धों की अनुभूति द्वारा सर्व आत्माओं को सर्व सम्बन्धों का अनुभव करने का सहयोग दो। अपने रूहानी सम्पर्क द्वारा रूहानी सम्पर्क में लाने का सहयोग दो। यह सहयोग

देना ही महादान है।

* वरदानी स्थिति द्वारा सेवा करने के लिए पहले स्वयं में शुद्ध संकल्प धारण करो। सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सागर में लहराते रहो और जिस समय चाहे शुद्ध संकल्पों के सागर के तले में जाकर साइलेन्स स्वरूप हो जाओ। अब सन्तोषी माँ बन अपने पुकारते हुए भक्तों को सन्तुष्टता का वरदान दो। सन्तुष्टता वा सन्तोष ही सर्व प्राप्तियों का आधार स्वरूप है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ अप्राप्ति का अभाव है। सन्तुष्टता वाले का धन दो रुपया भी दो लाख के समान है। करोड़पति हो लेकिन सन्तुष्टता नहीं तो करोड़, करोड़ नहीं। तो ऐसी असन्तुष्ट आत्माओं को सुख, शान्ति, पवित्रता वा ज्ञान की अंचली दो।

७- निर्माण (नम्रचित्त) और निर्वाण स्थिति

* हर संकल्प वा कर्म निमित्त बनकर करना ही नम्रचित्त बनना है। नम्रचित्त बनना अर्थात् झुकना। झुकना अर्थात् सर्व की दुआयें लेना। सर्विस की सफलता का मुख्य आधार नम्रता है। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता के गुण से सब आपके आगे नमन करेंगे। नम्रता वाले ही नव-निर्माण का कार्य कर सकते हैं। नम्रता की विशेषता वाले सदा ''पहले आप'' का महामन्त्र याद रखते हैं।

* जितना ही स्मृति में श्रेष्ठ स्वमान हो उतना ही कर्म वा नयनों में नम्रता हो क्योंकि नम्रता के बिना विश्व का कल्याण नहीं हो सकता। तो जितना ऊंच, उतने निर्मान–यह बैलेन्स रखने से कभी भी नुकसान नहीं होगा। ईश्वरीय मर्यादाओं प्रमाण एक दो के विचारों को रिगार्ड देना ही निर्मान बनना है। निर्मान बन सबको रिगार्ड देना अर्थात् रिगार्ड लेना।

* निमित्त बनने के साथ-साथ स्नेही बनने से ही नम्रचित्त बन सकेंगे। लेकिन अति स्नेही बनने से कभी-कभी नम्रता का गुण नुकसान भी करता है इसलिए नम्रता के साथ-साथ मालिकपन का भी नशा रहे।

* नम्रता का गुण धारण करने से निरहंकारी स्वतःबन जायेंगे। देह-अहंकार समाप्त हो जायेगा। फिर अपनी निर्वाण स्थिति में सहज स्थित हो सकेंगे। वाणी में भी आयेंगे तो शब्द कम होंगे लेकिन यथार्थ और शक्तिशाली ज्यादा होंगे। निमित्त और निर्मान स्थिति में स्थित रहने से एक शब्द में सर्व ज्ञान के राज़ समाये हुए होंगे।

* सदा स्मृति रहे कि मैं मास्टर विश्व-निर्माता हूँ। इसी स्मृति से हर संकल्प वा कर्म करने से निर्मानता वा सरलता का गुण स्वत:आ जायेगा। जो निमित्त और निर्मान होते हैं वे कभी क्या, क्यों, कैसे का प्रश्न नहीं करते।

* निर्माणचित स्थिति में रहने से ही मास्टर सुखदाता बन सकेंगे क्योंकि निर्माणता से देह का अभिमान वा घमण्ड समाप्त हो जाता है। जो सच्चे सेवाधारी हैं उनकी विशेषता है–नम्रता। उनके कर्म में चलते फिरते, बोलते रूहानियत दिखाई देगी।

* लोक संग्रह अर्थ यदि किसी भी बात का डायरेक्शन मिलता है तो नम्रचित्त आत्मायें सदैव हाँ जी, जी हाज़िर करने के कारण माननीय बन जाती हैं। वे अपने मान, शान वा पर्सनालिटी का भी त्याग कर देती हैं क्योंकि बड़ों को मान देना ही स्वमान लेना है। यह झुकना वा नीचे होना नहीं लेकिन ऊँचा जाना है।

* निर्मानता महानता की निशानी है। जो निर्मान हैं वे सबके दिलों में महान बन जाते हैं। निर्मानता सच्चे दिल की दुआयें प्राप्त करने का सहज साधन है। इसलिए वृत्ति, वाणी, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें निर्मानचित स्थिति बनाओ।

* निर्मानता की विशेषता हर कार्य में सहज सफलता प्राप्त करने का आधार है। निर्मानता ही आगे बढ़ने का सहज साधन है। निर्मान बनना अर्थात् सर्व को अपनी विशेषता और प्यार में झुका देना। निमित्त बनने के साथ-साथ भावना वा श्रृद्धा के आधार पर दृढ़ता से निर्मानता की विशेषता को धारण करो।

* निर्माण स्थिति में वही रह सकता है जिसकी बुद्धि में यह स्मृति रहती है कि करनकरावनहार बाबा है। सेवाओं में स्वमान भी जरूरी है लेकिन स्वमान के साथ निर्मानता का बैलेन्स नहीं तो स्वमान देह-अभिमान में बदल जाता है इसलिए स्वमान और निर्मान के बैलेन्स से सर्व की ब्लैसिंग प्राप्त करो। संगठन में सफलता प्राप्त करने का आधार नम्रता है। नम्रता रूपी कवच पहनकर रखो तो माया के वार से बच जायेंगे। नम्रता ही विश्व नव निर्माण का आधार है।

८-शुभचिंतक स्थिति

* वर्तमान समय सर्व की चिंताओं को मिटाने के लिए शुभ-चिंतक मणियों की आवश्यकता है। शुभचिंतक बनना –यही सहज रूप की मन्सा सेवा है, जो

चलते फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो। आप सबके शुभचिंतक बनने के वायब्रेशन वायुमण्डल को वा चिंतामणी आत्मा की वृत्ति को सहज परिवर्तन कर सकते हैं।

* सर्व के प्रति शुभचिंतक बनने के लिए सदा शुभ-चिंतन चलता रहे। जिसका सदा शुभचिंतन रहता है वही शुभचिंतक है। अगर कभी-कभी व्यर्थ चिंतन व परचिंतन होता है तो सदा शुभचिंतक भी नहीं रह सकते। इसलिए शुभचिंतक बन औरों के भी व्यर्थ चिंतन वा परचिंतन को समाप्त करो।

* शुभचिंतक स्थिति बनाने के लिए सर्व ज्ञान-रत्नों से भरपूर ज्ञान सम्पन्न दाता बनो। सदा अपनी सम्पन्नता के नशे में रहो और अपने शुभ चिंतक स्वरूप द्वारा दूसरों प्रति देते जाओ तो भरता जायेगा।

* आपकी शुभचिंतक स्थिति चिंता की चिता पर बैठी हुई आत्माओं को, दिलशिकस्त आत्माओं को दिलखुश करने वाली है। जैसे डूबे हुए मनुष्य को तिनके का सहारा भी दिलखुश कर देता है, हिम्मत में ले आता है। ऐसे आपकी शुभ-चिंतक स्थिति सर्व को सहारे का अनुभव करायेगी। जलती हुई आत्माओं को शीतल जल की अनुभूति करायेगी।

* सर्व का सहयोग प्राप्त करने का आधार भी शुभचिंतक स्थिति है। शुभचिंतक भावना औरों के मन में सहयोग की भावना सहज और स्वत: उत्पन्न कर देती है क्योंकि शुभचिन्तक आत्माओं के प्रति हर एक के दिल में स्नेह उत्पन्न होता है और स्नेह ही सहयोगी बना देता है। जहाँ स्नेह होता है वहाँ समय, सम्पत्ति, सहयोग सदा न्यौछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसलिए सदा शुभचिंतन से सम्पन्न रहो और शुभचिंतक बन सर्व को स्नेही, सहयोगी बनाओ।

* शुभचिंतक आत्मा सर्व की सन्तुष्टता का सहज सर्टीफिकेट ले सकती है। शुभचिंतक ही सदा प्रसन्नता की पर्सनालिटी में रह सकता है, वह विश्व के आगे विशेष पर्सनालिटी वाला पूज्यनीय बन जाता है।

* शुभचिंतक बन नाउम्मींदवार को उम्मींदवार बना दो। अपने शुभचिंतन के खजाने से कमज़ोर को भी भरपूर कर आगे बढ़ाओ। यह नहीं सोचो कि इसमें तो ज्ञान ही नहीं है, यह ज्ञान के पात्र ही नहीं है। यह ज्ञान में चल ही नहीं सकते।

लेकिन आप अपनी शुभचिंतक वृत्ति से बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग देकर, लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बनो।

* शुभचिंतक बन किसी की कमजोरी को जानते हुए भी उस आत्मा की कमजोरी को भुलाकर अपनी विशेषता के शक्ति की समर्थी दिलाकर उसे समर्थ बना दो। किसी के प्रति घृणा दृष्टि न हो। सदा गिरी हुई आत्मा को ऊंचा उड़ाने की दृष्टि हो।

* शुभचिंतक बन अपने खजानों को मन्सा द्वारा, वाचा द्वारा, अपने रूहानी सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा अन्य आत्माओं प्रति सेवा में लगाने वाले सच्चे सेवाधारी बनो। वृत्ति और दृष्टि सबके प्रति शुभ हो।

* आपके शुभचिंतक बनने से जो सर्व को प्राप्ति होती है–खुशी की, सहारे की, हिम्मत के पंखों की, उमंग-उत्साह की..यह प्राप्ति की दुआयें किसको अधिकारी बच्चे बना देंगी, किसी को भक्त आत्मा बना देंगी। इसलिए प्रतिज्ञा करो कि:-

* सदा के लिए हर आत्मा के प्रति और अनेक प्रकार की भावनायें परिवर्तन कर एक शुभ चिंतक भावना ही रखेंगे।

* सर्व को स्वयं से आगे बढ़ाने, आगे रखने का श्रेष्ठ सहयोग सदा देते रहेंगे।

* सर्व प्रति श्रेष्ठ कामना द्वारा सहयोगी बन सारे विश्व को श्रेष्ठ बनायेंगे।

* सदा व्यर्थ चिंतन, परचिंतन को समाप्त कर अर्थात् बीती बातों को बिन्दी लगाए, बिन्दी अर्थात् मणि बन सर्व को अपनी श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना, स्नेह की भावना, समर्थ बनाने की भावना की किरणों से रोशनी देते रहो।

९- खुशनुम: स्थिति

* इस जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना है ही खुशी। अगर खुशी है तो सब-कुछ है और खुशी नहीं तो कुछ भी नहीं। इसलिए कभी आँखों से वा मन से रोना या उदास नहीं होना। उदास होने से खुशी गायब हो जाती है। अविनाशी, अखुट प्राप्तियों के आगे यदि थोड़ा बहुत कुछ नुकसान होता भी है तो वो क्या बड़ी बात है! इसलिए कुछ भी हो जाये लेकिन कभी भी खुशी का खजाना गंवाना नहीं। भल शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये, तब कहेंगे खुशनुम:

* संगमयुग पर एक तो बाप के मिलन की खुशी, दूसरा-अपने भाग्य की खुशी, तीसरा-इतना बड़ा परिवार मिला है – इसकी खुशी! तो आँख खुलते ही अमृतवेले उठने से रात को सोने तक खुशी के झूले में झूलते रहो।

* मेरेपन के अधिकार से बाप को याद करो तो निरन्तर खुशी में रहेंगे। 'अनेक मेरे-मेरे' को 'एक मेरा बाबा' में बदल दो। यही सहज विधि है–खुश-नुम: बनने की।

* ब्राहमण जीवन का श्वांस ही खुशी है, अगर खुशी नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं। इसलिए सदा खुश रहो। बाप मिला अर्थात् सब-कुछ मिला। खुशी गायब तब होती है जब कोई अप्राप्ति होती है। प्राप्ति की निशानी है ही खुशी। तो स्वयं भी सदा खुश रहो और सबको खुशी का खजाना बांटों, इसके लिए खुशी का स्टॉक फुल करो।

* सदा खुश रहना और दूसरों को भी खुशी बांटना – यही सबसे बड़ी शान है। जब दाता के बच्चे हो तो सदा देने वाले बनो, लेने वाले नहीं। बाप से तो बिना मांगे मिलता ही रहता है। तो जो खुशी का खजाना मिला है उसे बांटने वाले महादानी बनो, इसी सेवा में सदा बिज़ी रहो। इससे स्वप्न भी बदल जायेंगे, सदा सुख के, खुशी के, सेवा के, मिलन मनाने के ही स्वप्न आयेंगे।

* सदा मन में श्रेष्ठ खुशी के संकल्प इमर्ज करो क्योंकि संकल्प ही खुशी वा गमी का आधार हैं जब संकल्प करते हो कि मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ तो श्रेष्ठ स्थिति और श्रेष्ठ अनुभूति होती है और संकल्प करते हो कि मैं तो कमजोर आत्मा हूँ, मेरे में कोई शक्ति नहीं है, तो सेकण्ड के संकल्प से खुशी गायब हो जाती है। परेशानी के चिन्ह स्थिति में अनुभव होते हैं। खुशी गायब होना, परेशानी का अनुभव होना, मन उदास रहना, अपने जीवन से मज़ा नहीं आना–ये सब व्यर्थ संकल्प की निशानियाँ हैं।

* दिल से सदा बाप के साथ रहो तो साथ की खुशी में भोजन भी ठण्डा-गर्म नहीं लगेगा, बहुत प्यारा लगेगा। खुशी से ही पेट भर जाता है। तो स्थूल वा साधारण कैसा भी कार्य करते, चेहरे और चलन से सदा खुशी की झलक दिखाई दे। निरन्तर खुशी में मन नाचता रहे।

* खुशी का खज़ाना अपना खज़ाना है इसलिए सदा खुशी के गीत गाते

रहो। चाहे किसी भी रूप में माया आये लेकिन खुशी गुम न हो। निश्चयबुद्धि बच्चे सदा ही विजय की खुशी में रहते हैं, उनके अन्दर सदा खुशी के बाजे बजते रहते हैं।

* मन और बुद्धि से सदा अपने श्रेष्ठ स्थिति की सीट पर सेट रहो तो खुशी का अनुभव करते रहेंगे क्योंकि जब कोई अपसेट होते हैं तो परेशानी का अनुभव होता है और जब सेट हो जाते हैं तो खुशी महसूस करते हैं। आप बच्चों को जब ड्रामा की यथार्थ नालेज मिली हुई है तो सदा नथिंग न्यु की स्मृति से, खेल समझकर हर सीन को देखो तो खुशनुमः रहेंगे।

* आज के विश्व में और सब-कुछ मिल सकता है लेकिन सच्ची खुशी नहीं मिल सकती। और आपको सच्ची खुशी मिली है। बाप ने खुशी का खजाना दे दिया। चाहे कोई पदम खर्च करे लेकिन उसे यह खुशी नहीं मिल सकती। और आपने सिर्फ 'बाबा' कहा और खजाना मिला! बिन कौड़ी बादशाह बन गये! ''मेरा बाबा'' के स्मृति की प्रैक्टिकल निशानी 'खुशी' है।

* गाया हुआ है–'खुशी' सबसे बड़ी खुराक है, खुशी जैसी और कोई खुराक नहीं। जो खुशी की खुराक खाने वाले हैं वो सदा तंदरुस्त, हेल्दी रहते हैं, कभी कमजोर नहीं होते। खुशी है मन की खुराक। उनका मन कभी कमज़ोर नहीं हो सकता, जिसका मन और बुद्धि सदा शक्तिशाली है तो स्थिति भी शक्तिशाली होगी।

* सदा खुशनुमः वही रह सकता है जो सबके साथ एडजस्ट हो जाता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा–बच्चों से बच्चा बनकर एडजस्ट हो जाता, बड़ों से बड़ा बनकर एडजस्ट हो जाता। चाहे बेगरी लाइफ, चाहे साधनों की लाइफ, दोनों में एडजस्ट होना और खुशी-खुशी से होना, सोचकर नहीं। सोचने वाले को एडजस्ट होने के मजे में कुछ समय लग जाता है। इसलिए कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे अच्छी हो, चाहे हिलाने वाली हो लेकिन हर समय, हर सरकमस्टांस के अन्दर अपने को एडजस्ट कर लो।

* जो खुश होगा वो राज़ी होगा, जो राज़ी होगा वो खुश होगा। एक-दो से पूछते हैं ना कि खुश-राजी हो? तो सदा राज़ को जानने वाले अर्थात् सदा खुश रहने वाले–खुश-राजी। सदा सन्तुष्ट रहने वाला ही सदा खुश रहता है

क्योंकि सन्तुष्टता का फल है प्रसन्नता। सदा सन्तुष्ट, सदा प्रसन्न चित्त बनो।

१०- अव्यक्त व फ़रिश्ता स्थिति

* अव्यक्त का अर्थ ही है व्यक्त भाव और व्यक्त भावना से परे। सर्व के प्रति कल्याण की भावना, सदा स्नेह और सहयोग देने की भावना, हिम्मत-हुल्लास बढ़ाने की भावना, अपनेपन की भावना और आत्मिक स्वरूप की भावना रखना – यही सद्‌भावना है। ऐसी भावना रखना ही अव्यक्त स्थिति बनाने का आधार है।

* फ़रिश्ता स्थिति अर्थात् देह, सम्बन्ध वा पदार्थ का कोई भी लगाव नीचे न लाये। जो वायदा है यह तन, मन, धन सब तेरा तो लगाव क्यों? फ़रिश्ता बनने के लिए यह प्रैक्टिकल अभ्यास करो कि यह सब सेवा अर्थ है, अमानत है, मैं ट्रस्टी हूँ।

* बुद्धि रूपी पाँव पृथ्वी पर न रहें। जैसे कहावत है कि फ़रिश्तों के पाँव पृथ्वी पर नहीं होते। ऐसे बुद्धि इस देह रूपी पृथ्वी अर्थात् प्रकृति की आकर्षण से परे रहे। प्रकृति को अधीन करने वाले बनो न कि अधीन होने वाले।

* लगाव की रस्सियों को चेक करो। बुद्धि कहीं कच्चे धागों में भी अटकी हुई न हो। कोई सूक्ष्म बंधन भी न हो, अपनी देह से भी लगाव न हो, ऐसी स्वतन्त्र आत्मा ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकती है।

* सम्पूर्ण फ़रिश्ता वा अव्यक्त फ़रिश्ता की डिग्री लेने के लिए सर्व गुणों में फुल बनो। नालेजफुल के साथ-साथ फैथफुल, पावरफुल, सक्सेसफुल बनो। अभी नाज़ुक समय में नाज़ों से चलना छोड़ विकर्मों और व्यर्थ कर्मों को अपने विकराल रूप (शक्ति रूप) से समाप्त करो।

* अभ्यास करो कि इस स्थूल देह में प्रवेश कर कर्मेन्द्रियों से कार्य कर रहे हैं। जब चाहे प्रवेश करो और जब चाहे न्यारे हो जाओ। एक सेकेण्ड में धारण करो और एक सेकेण्ड में देह के भान को छोड़ देही बन जाओ।

* अमृतवेले उठने से लेकर हर बात में रेग्युलर बनो। एक भी बोल ऐसा न निकले जो व्यर्थ हो। जैसे बड़े आदमियों के बोलने के शब्द फिक्स होते हैं ऐसे आपके बोल फिक्स हों। हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ भाव को धारण करने का विशेष अटेन्शन रखो तब अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर

सकेंगे।

११- बीजरूप स्थिति

* बीजरूप स्थिति बनाने के लिए – कार्य करते हुए बीच-बीच में संकल्पों की ट्राफिक को स्टॉप करने का अभ्यास करो। एक मिनट के लिए संकल्पों को, चाहे शरीर द्वारा चलते हुए कर्म को रोककर बिन्दू रूप में स्थित हो जाओ। यह एक सेकेण्ड का भी अनुभव सारा दिन बीजरूप स्थिति बनाने में मदद करेगा।

* बीजरूप स्थिति में स्थित होने के पहले अशुद्ध संकल्पों को शुद्ध संकल्पों से हटाओ। जैसे कोई एक्सीडेन्ट होने वाला होता है। ब्रेक नहीं लगती है तो मोड़ना होता है। बिन्दी रूप है ब्रेक। अगर वह नहीं लगती तो व्यर्थ संकल्पों से बुद्धि को मोड़कर शुद्ध संकल्पों में लगाओ। कोशिश करो कि सारा दिन शुद्ध संकल्पों के सिवाय कोई व्यर्थ संकल्प न चलें। जब यह सब्जेक्ट पास करेंगे तो फिर बिन्दी रूप की स्थिति सहज रहेगी।

* जैसे शुरू-शुरू में अव्यक्त स्थिति का अभ्यास करने के लिए कितना एकान्त में बैठ अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ करते थे। वैसे ही इस फाइनल स्टेज का भी पुरुषार्थ बीच-बीच में समय निकालकर करना चाहिए – यह है फाइनल सिद्धि की स्थिति। इस स्थिति तक पहुँचने के लिए विशेष बचत की स्कीम बनाओ। जैसे आजकल वह गवर्मेंट लक्ष्य रखती है कि सभी बातों में जितना हो सके उतनी बचत हो। समय बचे, पैसे बचें, इनर्जी बचे। इनर्जी कम लगे और कार्य ज्यादा हो। ऐसे ही आप भी सब चीज़ों की बचत करो।

* दिन प्रतिदिन सर्विस भी बढ़नी है तो समस्यायें भी बढ़नी है और संकल्पों की जो स्पीड है वह भी बढ़ेगी। अभी एक सेकेण्ड में जो दस संकल्प करते हो उसकी डबल, ट्रिबल स्पीड हो जायेगी। ईविल स्प्रिट्स (आत्माओं) की भी वृद्धि होगी। इन सबका सामना करने के लिए समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति की बचत ... यह योजना बनाकर बीच-बीच में बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रुप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्प्रिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा और आप लोगों का शक्ति रूप ही उन्हों को मुक्त करेगा।

* बिन्दु रूप स्थिति बनाने के लिए सर्व प्रकार के बिखरे हुए विस्तार

अर्थात् अनेक शाखाओं के वृक्ष को बीज में समाकर बीजरूप स्थिति अर्थात् बिन्दू में सबको समाना पड़े। देह के हिसाब की शाखा, देह के सम्बन्धों की शाखायें, देह के भिन्न-भिन्न पदार्थों में बन्धनी आत्मा बनने की शाखा, भक्ति मार्ग और गुरुओं के बन्धनों की शाखायें, भिन्न-भिन्न प्रकार के विकर्मों के बन्धनों की शाखायें, कर्मभोग की शाखायें, जब इन शाखाओं के विस्तार को समाप्त कर दो तो बाकी रह जायेगा बिन्दु आत्मा वा बीज आत्मा। जब ऐसे बिन्दु, बीज स्वरूप बनो तब आवाज़ से परे बीजरूप बाप के साथ चल सको।

* जैसे स्थूल शरीर के वस्त्र और वस्त्र धारण करने वाला शरीर अलग अनुभव होता है, ऐसे मुझ आत्मा का यह शरीर वस्त्र है, मैं वस्त्र धारण करने वाली आत्मा हूँ – ऐसा स्पष्ट अनुभव हो। जब चाहे इस देहभान रूपी वस्त्र को धारण करें, जब चाहे इस वस्त्र से न्यारे अर्थात् देहभान से न्यारे स्थिति में स्थित हो जायें। देह से अलग होना नहीं है, लेकिन मैं हूँ ही अलग–इस स्मृति को बढ़ाओ तब सार स्वरूप अर्थात् बीजरूप स्थिति का अनुभव कर सकेंगे।

* बीजरूप स्थिति में स्थित होने के लिए – जो भी देखा वा सुना उसके सार को जानकर, सेकेण्ड में समा देने का वा परिवर्तन करने का अभ्यास करो। क्यों, क्या के विस्तार में नहीं जाओ क्योंकि कोई भी चीज़ का विस्तार होगा तो शक्ति का भी विस्तार हो जाता है और विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति दोनों ही व्यर्थ चली जाती है। इसलिए बीजरूप की श्रेष्ठ स्थिति बनाने के लिए सदा विस्तार को समाकर सार में स्थित रहने का अभ्यास करो। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियों को एक सेकेण्ड में जैसे और जहाँ करना चाहो, कर सकते हो, उन पर अधिकार है। ऐसे बुद्धि के ऊपर और संकल्पों के ऊपर भी पूरा अधिकार हो। जैसे बीज में वृक्ष के विस्तार को समाने की शक्ति है। ऐसे यह बीज स्वरूप स्थिति में स्थित होना अर्थात् विस्तार को समा लेना।

* बीजरूप की स्थिति टॉप की स्थिति है जिस स्टेज पर स्थित होने से सारा विश्व ऐसे दिखाई देता है जैसे छोटा बाल है।

१२- कर्मातीत स्थिति

* कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे। कर्तापन के भान से न्यारे, कर्म के फल को प्राप्त करने में भी न्यारे, उसका भी स्पर्श न हो,

बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसेकि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया। किसी ने कराया और मैं निमित्त बनी। कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन हो। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। कर्म अपनी तरफ आकर्षित न करे। मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं। इसे कहा जाता है कर्मातीत स्थिति।

* आत्मा की जो विशेष शक्तियां मन, बुद्धि, संस्कार हैं यह तीनों ही हल्के होते जायें। संकल्प भी बिल्कुल ही हल्की स्थिति का अनुभव कराये। बुद्धि की निर्णय शक्ति भी ऐसा निर्णय करे जैसे कि कुछ किया ही नहीं, और कोई भी संस्कार अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे। जैसे बाप के संस्कार कार्य कर रहे हैं। ऐसा हल्कापन अनुभव हो जो सबके दिल से, मुख से निकले कि जैसे बाप, वैसे बच्चे न्यारे और प्यारे हैं।

* कर्मातीत अर्थात् कर्म के बन्धन से मुक्त, सब हिसाब-किताब से मुक्त, सिवाए सेवा के स्नेह के और कोई बन्धन नहीं। सेवा में भी सेवा के बन्धन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। हद की रॉयल इच्छायें सेवा में हिसाब-किताब बना देती हैं, जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

* लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त। पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब वा वर्तमान पुरुषार्थ के कमजोरी के कारण किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से मुक्त। कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति, स्वस्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग न करे। पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये - इससे भी मुक्त। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है।

* कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे, इसको कहते हैं कर्मातीत। कर्मयोगी स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है।

* जैसे ब्रह्मा बाप ने तीन बोल (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी) से

कर्मातीत अवस्था को पाया, ऐसे फालो फादर। विश्व के आगे आदि पिता के समान शक्ति और शान्ति स्तम्भ बनो। कितना भी सेवा में बिज़ी हो, कार्य की चारों ओर की खींचतान हो, बुद्धि सेवा के कार्य में अति बिज़ी हो – ऐसे टाइम पर अशरीरी बनने का अभ्यास करो। सेवा करते भी उपराम रहो। याद रखो मेरी सेवा नहीं, बाप ने दी है तो निर्बन्धन रहेंगे। 'ट्रस्टी हूँ, बन्धन मुक्त हूँ' ऐसी प्रैक्टिस करो। अति के समय अन्त की स्टेज हो। तेरे को मेरे में समा दो, तब अन्त के समय पास विद् ऑनर बन सकेंगे।

* जब देह के, सम्बन्ध के, वैभवों के बन्धन से स्वतन्त्र होंगे, कोई भी बन्धन अपनी ओर आकर्षित नहीं करेगा तब कहेंगे बाप समान कर्मातीत, इसके लिए प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत। जैसे आपकी रचना, कछुआ, सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। ऐसे एक सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में स्थित हो जाओ।

* जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज़ निकलती है-''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो, जो हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं। इसको कहा जाता है कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन। सेवा के कर्म के भी बन्धन में न आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है। इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे।

विभिन्न शक्तियाँ

१- संकल्प की शक्ति

* संकल्प की शक्ति सबसे श्रेष्ठ मूल शक्ति है। सबसे तीव्र गति की भाषा संकल्प की भाषा है जिससे कितना भी कोई दूर हो, कोई साधन न हो लेकिन संकल्प की भाषा द्वारा किसी को भी मैसेज दे सकते हो। अन्त में जब साइन्स के सब साधन फेल होंगे तब यह साइलेन्स का साधन काम आयेगा लेकिन कोई भी कनेक्शन जोड़ने के लिए लाइन सदा क्लीयर चाहिए, उसमें व्यर्थ संकल्पों की डिस्टरबन्स न हो।

* संकल्प शक्ति आपके मुख के आवाज की गति से भी तेज गति से कार्य करती है इसलिए श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति को ऐसा स्वच्छ बनाओ जो जरा भी व्यर्थ की अस्वच्छता न हो। तब इस संकल्प शक्ति द्वारा बहुत ही कार्य सफल होने की सिद्धि का अनुभव होगा। जिन आत्माओं को, जिन स्थूल कार्यों को वा सम्बन्ध सम्पर्क में आने वाली आत्माओं के संस्कारों को मुख द्वारा वा अन्य साधनों द्वारा परिवर्तन करते हुए भी सम्पूर्ण सफलता अनुभव नहीं होती वे सब उम्मीदें संकल्प शक्ति द्वारा सम्पूर्ण सफल हो जायेंगी।

* इस मरजीवे जन्म का विशेष खजाना वा विशेष इनर्जी है ही संकल्प। मरजीवा बनने का आधार शुद्ध संकल्प है। मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, इस संकल्प ने कौड़ी से हीरे तुल्य बना दिया। मैं कल्प पहले वाला बाप का बच्चा हूँ, वारिस हूँ... इस संकल्प ने मास्टर सर्वशक्तिवान् बनाया। तो इस विधि से संकल्प के महत्व को जानकर कार्य में लगाओ तब हर संकल्प सिद्ध होंगे और सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

* स्व परिवर्तन वा विश्व परिवर्तन का कार्य एक दृढ़ संकल्प से ही सम्पन्न होता है। एक सेकण्ड का एक ही संकल्प धारण किया कि मैं आत्मा हूँ–तो इसी संकल्प ने सभी बातों को परिवर्तन में लाया। ऐसे ही जब संकल्प करते हो कि हम विश्व के आधार और उद्धारमूर्त हैं अर्थात् विश्व-कल्याणकारी हैं तो इसी संकल्प से विश्व को बदल लेते हो।

संकल्प शक्ति जमा करने की विधि

* संकल्प शक्ति जमा करने के लिए कोई भी बात देखते वा सुनते विस्तार

को समाकर सार में स्थित हो जाओ। सार रूप बनने से अन्य आत्माओं को भी एक सेकण्ड में सारे ज्ञान का सार अनुभव करा सकेंगे। विस्तार में जाने से समय और संकल्प की शक्ति व्यर्थ चली जाती है। इसलिए सदा सार स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास करो।

* संकल्पों को शक्तिशाली बनाने के लिए उसकी गति को धैर्यवत् बनाओ। किसी भी प्रकार का बोझ वा प्रेशर न हो। एक मिनट में एक संकल्प द्वारा अनेक संकल्पों को जन्म नहीं दो। यदि संकल्प की गति बहुत तीव्र है, एक से एक संकल्प चलते ही रहते हैं तो यह भी भाग्य की इनर्जी वेस्ट जाती है। जैसे मुख द्वारा अति तीव्र गति से और सदा बोलते रहने से शरीर की शक्ति वा इनर्जी वेस्ट होती है ऐसे ही संकल्पों की गति रूहानी इनर्जी को वेस्ट करती है। इसलिए संकल्प की गति को तीव्र नहीं बनाओ।

* जैसे मुख के बोल के लिए श्रीमत मिली हुई है कि दस शब्द के बजाए दो शब्द बोलो, वो दो शब्द भी ऐसे समर्थ हों जो १०० बोल का कार्य सिद्ध कर दें। ऐसे संकल्प भी वही चलें जो आवश्यक हों। संकल्प रूपी बीज सफलता के फल से सम्पन्न हो। खाली बीज न हो जिससे फल न मिले। इसे कहा जाता है सदा समर्थ संकल्प। समर्थ संकल्प की संख्या कम होगी लेकिन शक्तिशाली होगी।

* अब ऐसे महारथी बनो जो कोई भी सामने आये तो यही इच्छा रखे के यह महान आत्मा मेरे प्रति श्रेष्ठ संकल्प सुनाये, आशीर्वाद के दो बोल बोले। संकल्प और बोल से आशीर्वाद के संकल्प और बोल बोलो, अमृतवाणी बोलो, लौकिक वाणी नहीं।

२- साइलेन्स (शान्ति) की शक्ति

* वर्तमान समय विश्व में सबसे आवश्यक है - साइलेन्स की शक्ति। सर्व समस्याओं का हल इसी साइलेन्स की शक्ति से होना है। साइलेन्स अर्थात् शान्त स्वरूप आत्मा एकान्तवासी होने के कारण सदा एकाग्र रहती है और एकाग्रता के कारण उसे विशेष दो शक्तियां प्राप्त होती हैं – एक परखने की और दूसरी निर्णय करने की। यही दो विशेष शक्तियाँ व्यवहार वा परमार्थ दोनों की सर्व समस्याओं को हल करने का सहज साधन हैं।

* परमार्थ मार्ग में विघ्न-विनाशक बनने के लिए साइलेन्स की शक्ति द्वारा परखने और निर्णय करने की शक्ति को अपनाओ। यदि माया के भिन्न-भिन्न रूपों को परख नहीं सकेंगे तो उसे भगा भी नहीं सकेंगे क्योंकि परमार्थी बच्चों के सामने माया रॉयल ईश्वरीय रूप रच कर आती है जिसको परखने के लिए एकाग्रता की शक्ति चाहिए। एकाग्रता की शक्ति साइलेन्स की शक्ति से ही प्राप्त होती है।

* शान्ति की शक्ति बहुत महान् शक्ति है, उसकी महानता को जानकर मास्टर शान्ति देवा बनो। कैसी भी अशान्त आत्मा को शान्त स्वरूप होकर शान्ति की किरणें दो तो अशान्त भी शान्त हो जायेंगे। शान्त स्वरूप रहना ही सबको शान्ति की किरणें देना है। इसके लिए विशेष शान्ति की शक्ति को बढ़ाओ। स्वयं के लिए भी और औरों के लिए भी शान्ति के दाता बनो – यही सबसे बड़े से बड़ा महादान है। जहाँ शान्ति होगी, वहाँ सर्व गुण एवं शक्तियाँ स्वत: होंगे।

* आजकल चारों ओर मैजारिटी आत्माओं को सुख से भी अधिक शान्ति चाहिए। वह एक घड़ी भी शान्ति का अनुभव इतना श्रेष्ठ मानते हैं जैसे भगवान की प्राप्ति हो गई। तो एक सेकण्ड में शान्ति का अनुभव कराने वाले स्वयं शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहो।

* अनेक आत्माओं को सहज शान्ति का अनुभव कराना–यह पुण्य का कार्य है, इसलिए पुण्यात्मा बन पुण्य की पूंजी सेवा द्वारा जमा करते रहो। यह सेवा भी खुशी को बढ़ाती है। तो पहले स्वयं शान्ति की शक्ति के अनुभवी बनो फिर दूसरों को अनुभव कराओ। कभी किसी के संस्कारों से टक्कर नहीं खाना है, संस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गड़बड़ भी करे तो भी आप शान्त रहो, आप गड़बड़ नहीं करो, और ही उसको शान्ति का सहयोग दो।

* आजकल के समय के प्रमाण क्रोध से काम बिगड़ता है और आत्मिक-प्यार से, शान्ति से बिगड़ा हुआ कार्य भी ठीक हो जाता है। अशान्त वा क्रोधित होना–यह भी एक बहुत बड़ा विकार है, इसलिए क्रोध-जीत बनना अति आवश्यक है।

साइलेन्स शक्ति की महानता

साइलेन्स की शक्ति. . . . . .

* क्रोध अग्नि को शीतल कर देती है।

* व्यर्थ संकल्पों की हलचल को समाप्त कर देती है।

* कैसे भी पुराने संस्कारों को परिवर्तन कर देती है।

* अनेक प्रकार के मानसिक रोग सहज समाप्त कर देती है।

* तड़फती हुई आत्माओं को जीयदान दे सकती है।

* अनेक आत्माओं का शान्ति के सागर बाप से मिलन करा सकती है।

* अनेक जन्मों से भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की अनुभूति करा सकती है।

* महान् पुण्य आत्मा, धर्मात्मा बना सकती है।

* सेकेण्ड में तीनों लोकों की सैर करा सकती है।

* कम मेहनत, कम खर्च बालानशीन बना सकती है।

* समय के ख़ज़ाने में भी इकॉनॉमी करा सकती है अर्थात् कम समय में अधिक सफलता दिला सकती है।

* हाहाकार से जयजयकार करा सकती है। सफलता की मालायें पहना सकती है।

* रेत में भी हरियाली कर सकती है। पहाड़ को राई बना सकती है।

* साइंस की शक्ति से विनाश होगा, साइलेन्स की शक्ति से नये विश्व की स्थापना होगी।

यह महान् शक्ति जब आपके संकल्प, बोल और कर्म में निरन्तर आ जायेगी तब मास्टर शान्ति देवा बनेंगे।

३- पवित्रता की शक्ति

* पवित्रता की परिभाषा अति सूक्ष्म है, सिर्फ कामजीत बनना यही पवित्रता की सम्पूर्ण स्टेज नहीं है। लेकिन काम विकार का अंश हद की सर्व कामनायें हैं। तो कामजीत अर्थात् सर्व कामना जीत बनने से ही पवित्रता की शक्ति जमा होगी।

* सम्पूर्ण पवित्र उन्हें कहा जाता है जो ब्रह्मचर्य के साथ-साथ ब्रह्माचारी

बनते हैं। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के हर आचरण पर चलने वाले, ब्रह्मा बाप के हर कर्म रूपी कदम पर कदम रखने वाले बच्चों में पवित्रता की शक्ति आ जाती है। सम्पूर्ण पवित्र आत्मायें सदा सुख की शैया पर आराम से, शान्ति स्वरूप में विराजमान रहती हैं। उनके मन में कभी भी क्यों, क्या और कैसे की उलझन उत्पन्न नहीं होती। सदा स्वयं भी सुख-शान्ति स्वरूप और दूसरों को भी सुख-शान्ति की प्राप्ति का अनुभव कराते हैं।

* दिल से सच्चाई और सफाई को धारण करने वाले बच्चों में पवित्रता की शक्ति होती है। वे कभी मनमत वा परमत पर अपने समय को, वाणी को, कर्म को, श्वास वा संकल्प को व्यर्थ तरफ नहीं गंवा सकते।

* पवित्रता की सबसे बड़ी स्टेज है–ऑनेस्ट रहना। ऑनेस्ट उसे कहा जाता जो सदा सर्व के प्रति शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हैं। संकल्प, बोल वा कर्म द्वारा सदा निर्माण का कार्य करते हैं। वे हर कदम में चढ़ती कला का अनुभव करते हैं। ऐसे ऑनेस्ट बच्चों का फाउन्डेशन किसी भी बातों के आधार पर नहीं बल्कि अनुभव वा प्राप्तियों के आधार पर होता है।

* पवित्रता की शक्ति की अनुभूति तब होगी जब कभी व्यर्थ संकल्पों की हलचल न हो। संकल्प में भी कभी अपवित्रता के संस्कार इमर्ज न हों। सदा आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की श्रेष्ठ स्मृति रहे। मस्तक पर सदा भाई-भाई की स्मृति अर्थात् आत्मिक स्मृति का तिलक चमकता रहे। जिस्म को देखते हुए भी नहीं देखो, रूह को देखने का अभ्यास हो। होठों पर प्रभु प्राप्ति और सर्व प्राप्तियों की मुस्कान हो। चेहरे पर मात-पिता वा श्रेष्ठ परिवार से मिलने के सुख की लाली हो। वाणी में सदा महान् बन महान् बनाने के बोल हों, सदा सत्यता और मधुरता हो। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता हो।

* पवित्रता की शक्ति जमा करने के लिए सदा यह स्लोगन याद रखो कि न बुरा देखना है, न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है..देहधारी के प्रति सोचना व संकल्प करना बुरा है। देहधारी को देहधारी समझ उससे बोलना बुरा है। इसलिए हर आत्मा को सदा त्यागी, तपस्वी की दृष्टि से देखो न कि दैहिक दृष्टि से। हर एक के प्रति सदा श्रेष्ठ दृष्टि रखो। जिस संबंध की आकर्षण पवित्रता में बाधक बनती है उसी सम्बन्ध की रसना एक बाप से लेने का अनुभव करो। बाप से सर्व

सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव होने से वृत्ति, दृष्टि में अपवित्रता आ नहीं सकती।

पवित्रता की महानता

* पवित्रता की शक्ति धारण करने से सदा परमपूज्य बन जाते हो।
* पवित्रता की शक्ति से इस पतित दुनिया को परिवर्तन कर लेते हो।
* पवित्रता की शक्ति विकारों की अग्नि में जलती हुई आत्माओं को शीतल बना देती है।
* पवित्रता की शक्ति आत्मा को अनेक जन्मों के विकर्मों के बन्धन से छुड़ा देती है।
* पवित्रता की शक्ति नेत्रहीन को तीसरा नेत्र दे देती है।
* पवित्रता की शक्ति से इस सारे सृष्टि रूपी मकान को गिरने से थमा सकते हैं।
* पवित्रता पिलर्स हैं - जिसके आधार पर द्वापर से यह सृष्टि कुछ न कुछ थमी हुई है।
* पवित्रता लाइट का क्राउन है।

पवित्रता की शक्ति धारण करने के लिए अभ्यास (कामेन्ट्री)

* मैं ज्योतिर्बिन्दू आत्मा हूँ... मैं लाइट हूँ... मैं माइट हूँ...। मैं अपने स्वरूप में पवित्र हूँ... शुद्ध हूँ... निर्मल हूँ...। मैं परमधाम में, अखण्ड ज्योति तत्व में, निर्विकार हूँ... निर्विकल्प हूँ... कर्मातीत हूँ... मुक्त हूँ...। प्यारे शिवबाबा, आपने हमें पवित्रता का अनमोल वरदान देकर धन्य-धन्य कर दिया है... मैं आप पर बलिहार हूँ... न्योछावर हूँ....।

* शिवबाबा आप परम पावन हैं और पतित-पावन हैं... आप पवित्रता का वरदान देने वाले हैं... आपने मुझे भी अब पवित्रता का वरदान देने के निमित्त बना दिया है... मैं आधारमूर्त हूँ, मैं उद्धारमूर्त हूँ, मैं मास्टर पतित-पावन हूँ। मैं ज्योतिबिन्दू आत्मा अपने पवित्रता के वायब्रेशन्स से प्रकृति को पवित्र कर रही हूँ। लाइट और माइट, पवित्रता और प्रकाश की किरणें मुझ पर उतरकर और मुझसे निकल-निकल कर फैल रही है... मैं लाइट हूँ... मैं शुद्ध हूँ...।

४- एकाग्रता की शक्ति

* एकाग्रता अर्थात् एक ही संकल्प में टिक जाना। एक ही लग्न में मगन हो जाना। एकाग्रता अनेक तरफ का भटकना सहज ही छुड़ा देती है। जितना समय एकाग्रता की स्थिति में स्थित होंगे उतना समय देह और देह की दुनिया सहज भूली हुई होगी क्योंकि उस समय के लिए संसार ही वह होता है जिसमें मगन होते हैं।

* एकाग्रता अर्थात् सदा एक बाप दूसरा न कोई। ऐसे निरन्तर एकरस स्थिति में स्थित होने का विशेष अभ्यास हो। इसके लिए व्यर्थ संकल्पों को शुद्ध संकल्पों में परिवर्तन करो। दूसरा-माया के आने वाले अनेक प्रकार के विघ्नों को अपनी ईश्वरीय लग्न के आधार से सहज समाप्त करते हुए आगे बढ़ते चलो।

एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने की विधि और उसे लाभ

* एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने के लिए अपने कमजोर स्वभाव और संस्कार को परिवर्तन करो। जब यह संकल्प आये कि मेरा स्वभाव ऐसा है तो इस स्वभाव शब्द के श्रेष्ठ अर्थ में टिक जाओ। स्व-भाव अर्थात् स्व प्रति व सर्व प्रति आत्मिक भाव और जब संस्कार शब्द कहते हो तो अपने अनादि आदि संस्कारों को स्मृति में लाओ।

* एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने के लिए मन-बुद्धि को श्रेष्ठ स्थितियों का स्थान दो। जैसे शरीर को बिठाने के लिए स्थूल स्थान देते हो ऐसे अच्छी स्थितियों के अनुभव में स्थित हो जाओ। मन-बुद्धि को एकाग्र करो, भिन्न-भिन्न स्थितियों में भटकाओ मत।

* एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने के लिए सिवाए एक बाप के और कोई भी संकल्प में न हो। एक बाप में सारे संसार की सर्व प्राप्तियों की अनुभूति हो। एक ही एक हो। जब ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बन जाती है तो हर संकल्प बाप समान का अनुभव कराता है। अभी इस रूहानी शक्ति का प्रयोग करो। इसके लिए एकान्त का साधन अपनाओ। एक के अन्त में खो जाओ।

* एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने के लिए विशेष समय निकालो, ऐसे नहीं समय मिले तो करेंगे, नहीं। जो भी समय मिले, एक सेकण्ड भी मिले तो वह

अभ्यास के लिए जमा करते जाओ, इकट्ठा ५ मिनट भी नहीं निकल सकता, तो भी सेकण्ड-सेकण्ड इकट्ठा करो तो आधा घण्टा भी बन जायेगा। चलते-फिरते के अभ्यासी बनो। जैसे चातक एक-एक बूंद के प्यासे होते हैं। ऐसे स्व-अभ्यासी चात्रक एक-एक सेकण्ड अभ्यास में लगायें तो अभ्यास स्वरूप बन ही जायेंगे।

* एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाने में अब अलबेले मत बनो। इसी अभ्यास द्वारा फ़र्स्ट डिवीजन में आ सकेंगे। साइलेन्स के स्थान और परिस्थिति में एकाग्र होना यह तो साधारण बात है लेकिन चारों प्रकार की हलचल के बीच एक अन्त में खो जाओ अर्थात् एकान्तवासी हो जाओ। एकान्तवासी हो एकाग्र स्थिति में स्थित हो जाओ-यही है महान पुरुषार्थ।

* वर्तमान समय के प्रमाण अभी वानप्रस्थ अवस्था के समीप हो। वानप्रस्थी एकान्त और सिमरण में ही रहते हैं। तो आप सब बेहद के वानप्रस्थी सदा एक के अन्त में अर्थात् निरन्तर एकान्त में सदा एकाग्रचित होने का अभ्यास करो। सदा एक की याद में समाये रहो। समान बनना ही समाना है।

* यह एकाग्रता की शक्ति सहज निर्विघ्न बना देगी। मेहनत की आवश्यकता नहीं रहेगी। सहज एकरस स्थिति बन जायेगी। यह एकाग्रता सदा सर्व के प्रति कल्याण की वृत्ति, भाई-भाई की दृष्टि स्वत: सहज बना देगी। हर आत्मा के सम्बन्ध में स्नेह, सम्मान, स्वमान के कर्म सहज अनुभव करा देगी।

* यह एकाग्रता की शक्ति किसी भी आत्मा तक आपका मेसेज पहुँचा सकती है। इस शक्ति से किसी भी आत्मा का आह्वान कर सकते हो। किसी भी आत्मा की आवाज़ को केच कर सकते हो। किसी भी आत्मा को दूर बैठे सहयोग दे सकते हो। इसलिए विशेष अटेन्शन देकर एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ। एकाग्रता में ही दृढ़ता होती है और दृढ़ता द्वारा ही सफलता गले का हार बन जाती है।

* एकाग्रता की शक्ति से ही परवश स्थिति को परिवर्तन कर मालिकपन के स्थिति की सीट पर सेट हो सकते हो। एकाग्रचित होने से मन-बुद्धि सदा आपके आर्डर अनुसार चलेंगे। स्वप्न में भी सेकण्ड मात्र भी हलचल नहीं होगी। मन, मालिक को परवश नहीं बना सकेगा। आत्मा सदा सुख, चैन, आनंद की

अनुभूति करती रहेगी।

५- वाचा की शक्ति

आप सत-वचन वाली महान आत्मायें हो, आप अपने एक बोल से किसी के भाग्य की रेखा भी खींच सकते हो और श्रापित भी कर सकते हो इसलिए वाचा पर विशेष अटेन्शन दो। सुख देने वाले बोल बोलो। युक्तियुक्त बोल बोलो और काम का बोलो, व्यर्थ नहीं बोलो। बोल की वेल्यु समझो। अपशब्द नहीं बोलो, सदा शुभ बोलो।

* आप सबसे बड़े ते बड़ी सिद्धि स्वरूप आत्माएँ हो। आपके हर संकल्प और बोल सिद्ध होने वाले हैं, इसलिए त्रिकालदर्शी बन करके बात सुनो और बोलो। हर कर्म वा बोल के परिणाम को नॉलेजफुल होकर जानो और फिर बोलो।

* आप रूहानी रॉयल आत्मायें हो इसलिए मुख से कभी व्यर्थ वा साधारण बोल नहीं बोलो। हर बोल युक्तियुक्त हो, व्यर्थ भाव से परे अव्यक्त भाव वाला हो तब रॉयल फेमिली में आयेंगे।

* आप ज्ञान स्वरूप आत्मायें हो आपका हर संकल्प, बोल और कर्म समर्थ हो, व्यर्थ नहीं। अगर आप एक व्यर्थ बोल बोलेंगे तो उसे सिद्ध करने के लिए अनेक बोल बोलने पड़ेंगे और वाचा की शक्ति व्यर्थ चली जायेगी। इसलिए हर बोल में मधुरता, सन्तुष्टता, सरलता की नवीनता हो, कोई भी बोल साधारण न हो।

* अपने आपको हल्का करने के लिए यह नहीं कहो कि–मैंने तो हंसी में कहा, मेरा भाव नहीं था, ऐसे ही बोल दिया। ब्राह्मण जीवन की मौज में रहो लेकिन मौज में रहने का अर्थ यह नहीं कि जो आया वह बोला, जो आया वह कर लिया। अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो। एनर्जी, संकल्प, बोल ज्यादा खर्च नहीं करो। कम बोल हों लेकिन उस कम बोल में स्पष्टीकरण ज्यादा हो–तब कहेंगे ''कम खर्च बालानशीन।''

वाचा शक्ति जमा करने के लिए

* सभ्यता पूर्वक बोल, सभ्यता पूर्वक चलन हो। हर बोल में अगर सत्यता और सभ्यता है तो सफलता मिलती है। इसलिए जब कोई असत्य बात देखते वा

सुनते हो तो इधर-उधर बोलकर असत्य वायुमण्डल नहीं फैलाओ। वर्तमान समय व्यर्थ को समाप्त करने का अटेन्शन रखो। सेकण्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टॉप लगाकर परिवर्तन करो।

* जो सोचो, जो करो, जो बोलो, आगे-पीछे सोच-समझ करके करो। ऐसे नहीं कि अभी-अभी संकल्प आया, अभी-अभी बोल लिया, अभी-अभी कर लिया। संकल्प, बोल, कर्म की गति का जोश इतना तीव्र होता है जो श्रेष्ठ संकल्प, कर्म, मर्यादा, ब्राह्मण जीवन की महानता का होश समाप्त कर देता है। व्यर्थ का जोश सत्यता का होश, यथार्थता का होश समाप्त कर देता है। इसलिए अब व्यर्थ से इनोसेंट बनो।

* अगर बोल में शुभ भाव, श्रेष्ठ भावना नहीं है तो अवश्य माया की भावनायें–ईर्ष्या, द्वेष, घृणा किसी न किसी परसेन्ट में समाई होती है। समर्थ बोल का अर्थ ही है–जिस बोल में किसी आत्मा प्रति प्राप्ति का भाव वा सार भरा हुआ हो। बोल द्वारा ऐसी मज़ाक नहीं करो जिससे दूसरे की स्थिति डगमग हो जाए।

* व्यर्थ बोल जो किसको भी अच्छे नहीं लगते, उन्हें सदा के लिए समाप्त करो। अपशब्द, व्यर्थ शब्द, ज़ोर से बोलना..... अनेकों को डिस्टर्ब करना है। ये नहीं बोलो–मेरा तो आवाज़ ही बड़ा है। आवाज़ को कन्ट्रोल करो। दो शब्दों की बात आधा घण्टा बोलते ही नहीं रहो। जो चार शब्दों में काम हो सकता है वो १२-१५ शब्द में नहीं बोलो।

* यह स्लोगन सदा याद रहे ''कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो।'' बोल की इकॉनॉमी करो, अपने बोल की वेल्यु रखो। सदा मधुर, कम, धीरे एवं कटाक्ष रहित बोल हों।

* हर बोल स्वमान युक्त, उत्साह दिलाने वाला अनमोल हो।

* हर एक आत्मा की विशेषता को बुद्धि में रख समय प्रमाण, योगयुक्त होकर सम्मानुयक्त, युक्तियुक्त बोल बोलें।

* व्यर्थ की हंसी-मजाक, टेबुलटाक (भोजन पर वार्तालाप) अपमानजनक वा दु:ख अनुभव कराने वाले बोल न हों।

* टकराव की स्थिति से किनारा कर लो, हर आत्मा प्रति शुभ भावना रख श्रेष्ठ संकल्प से शान्ति का दान दो। वाद-विवाद में न आओ।

* कार्य-व्यवहार में रहते अन्तर्मुखी रहने का विशेष अटेन्शन हो। साधारण बोल की बचत करो।

६- सहनशक्ति

संगठन में विशेष सहनशक्ति को धारण करने से ही सफल हो सकते हो। दूसरों को बदलने के लिए सहनशक्ति की जरूरत है। अगर कोई एक के लिए कुछ बोलता है तो दूसरा चुप रहे। इससे बोलने वाला आपेही चुप हो जायेगा। सिर्फ १० बारी सुनने की हिम्मत चाहिए। दो बारी में ही दिलशिकस्त नहीं हो जाओ। १०-१२ बार भी सुनकर सहन करो। ब्रह्मा बाप ने भी सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया तो फालो फादर। सिर्फ हिम्मत की बात है, सब सहज हो जायेगा। सिर्फ पहले थोड़ा लगता है कि कैसे होगा। कहाँ तक सहन करेंगे। हिम्मत नहीं हारो। कहाँ तक होगा यह नहीं सोचो, संकल्प में दृढ़ता लाओ। सर्विस की सफलता का आधार सहनशक्ति है। फाइनल पेपर जो विनाश का है उसमें पास होने के लिए भी सहन शक्ति चाहिए। इसलिए सहनशक्ति को बढ़ाओ।

सहनशक्ति को बढ़ाने की विधि

* स्नेही बनो। जितना-जितना स्नेही बनेंगे, जितना जिसके प्रति स्नेह होता है तो उस स्नेह में सहन करने की शक्ति आ जाती है। जैसे माँ का बच्चे से स्नेह होता है तो उस स्नेह के कारण उसमें सहनशक्ति आ जाती है। बच्चे के लिए सब कुछ सहन करने के लिए तैयार हो जाती है। स्नेह में अपने तन का वा परिस्थितियों का भी फिक्र नहीं रहता है। तो ऐसे ही अगर निरन्तर बाप के स्नेही रहो तो उस स्नेही के प्रति सहन करना कोई बड़ी बात नहीं लगेगी।

* मन, वाणी, कर्म में सरल और सहनशील बनो तो श्रेष्ठ बन जायेंगे। अगर सरलता है, सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। सहनशीलता के बिना सरलता भी भोलापन माना जाता है। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति रूप कहा जाता है।

* चलते-चलते पुरुषार्थी जीवन में समस्यायें वा परिस्थितियाँ तो ड्रामा अनुसार आनी ही हैं, जन्म लेते ही आगे बढ़ने का लक्ष्य रखना अर्थात् परीक्षाओं और समस्याओं का आह्वान करना। जब रास्ता तय करते हैं तो रास्ते के नजारे न

हों यह कैसे हो सकता। जो नजारों को देख रुक जाते हैं वह मंजिल दूर अनुभव करते हैं। जो नजारों को पार करने के बाजाए करेक्शन करने में बिजी हो जाते हैं, वह क्यों, ऐसा क्यों... तो करेक्शन से बाप की याद का कनेक्शन लूज हो जाता है। मनोरंजन के बजाए मन को मुंझा देते हैं। फिर थकावट का अनुभव होता है। थकावट के कारण सहज मार्ग सहन करने का मार्ग अनुभव होता है। लेकिन सहन करना ही आगे बढ़ना है। वास्तव में किसी भी बात में सहन करना नहीं होता। अपनी कमजोरी के कारण सहन अनुभव होता है। जैसे आग का गुण है जलाना लेकिन उसके गुण का ज्ञान न होने के कारण उससे लाभ लेने के बजाए नुकसान कर देते हैं तो सुख के बजाए सहन करना पड़ता है। ऐसे ही समस्याएँ वा परिस्थितयाँ आने का ज्ञान न होने के कारण आगे बढ़ने के सुख के अनुभव के बजाए सहन करने का अनुभव करते हैं।

७- परखने की शक्ति

* जिन आत्माओं की सर्विस करते हो पहले उनकी पूरी परख चाहिए – उसको जो चाहिए, जिस रूप से उसकी तकदीर जग सकती है, वह देने से ही सफल हो सकेंगे।

* खास भविष्य में आने वाली बातों को भी परखने की शक्ति चाहिए। जितनी परखने की शक्ति होगी उतना ही परीक्षाओं में पास हो सकेंगे। जब परख नहीं सकते हैं कि यह किस प्रकार का विघ्न है, माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है! यह परख कम होने के कारण परीक्षाओं में फेल हो जाते हैं। परख अच्छी होगी तो पास हो सकेंगे। हरेक विघ्न का सामना करने के लिए परखने की शक्ति बढ़ाओ। जब परख लेंगे तब सहन कर सकेंगे।

* जितना-जितना परखने की शक्ति बढ़ती जायेगी उतना कोई भी आत्मा को उसके वायब्रेशन द्वारा परख लेंगे। संस्कारों द्वारा, वाणी द्वारा, चलन द्वारा परखना – यह तो कामन बात है लेकिन संकल्प के वायब्रेशन द्वारा दूर होते हुए भी ऐसे परख लो जैसे सामने वाले को परखा जाता है। इसे ही शक्तियों की सिद्धि कहा जाता है।

* वर्तमान जो समय आने वाला है उसमें अगर परखने की शक्ति नहीं होगी तो धोखे में आ जायेंगे क्योंकि कई ऐसी आत्मायें आपके सामने आयेंगी

जो अन्दर एक और बाहर दूसरी होंगी, परीक्षा के लिए आयेंगी। इसलिए ध्यान रखना है कि यह किसलिए आया है। परखने से उसका सामना कर सकेंगे।

परखने की शक्ति बढ़ाने के लिए

* परखने की शक्ति को बढ़ाने के लिए बुद्धि की सफाई चाहिए। संकल्पों को ब्रेक लगाने की अथवा मोड़ने की शक्ति चाहिए। अगर ब्रेक न दे सके तो भी ठीक नहीं। अगर टर्न नहीं कर सके तो भी ठीक नहीं। यदि ब्रेक देने और मोड़ने की शक्ति है तो बुद्धि की शक्ति वेस्ट न होकर जमा होती जायेगी। जितनी जमा होगी उतना ही परखने वा निर्णय करने की शक्ति बढ़ेगी।

* जब आप बच्चे ज्ञान और योग की ज्योतिष विद्या सीख जायेंगे तो हरेक के मुखड़े से, नयनों से, मस्तक से उसे परख सकेंगे। किसको परखना यह भी ज्योतिष विद्या है। कोई भी व्यक्ति सामने आये तो एक सेकण्ड में उनके तीनों कालों को परख लो। एक तो पास्ट में उसकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति दृष्टि क्या है और भविष्य में कहाँ तक वह अपनी प्रालब्ध बना सकते हैं।

* परखने की शक्ति को तीव्र बनाने के लिए पहले तो अपनी बुद्धि व्यर्थ संकल्पों से बिल्कुल फ्री चाहिए। बुद्धि में एक बाप की याद हो। एक के ही कार्य में और एकरस स्थिति में बिजी रहो तब दूसरों को जल्दी परख सकेंगे। जिसकी बुद्धि में ज्यादा संकल्प उत्पन्न होते हैं उनकी बुद्धि दूसरों को परखने के समय भी अपने व्यर्थ संकल्पों से ग्रस्त होगी। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन रहे। एक की याद को छोड़ अनेक तरफ बुद्धि जाने के कारण शक्तिशाली नहीं रहती। वैसे भी जब बुद्धि बहुत कार्य तरफ लगी हुई होती है तो बुद्धि में थकावट वा कमजोरी महसूस होती है और फिर कोई भी निर्णय यथार्थ नहीं कर सकते। इसी रीति व्यर्थ संकल्प विकल्प जो चलते हैं वह भी बुद्धि को थकावट में लाते हैं। थकी हुई आत्मा न परख सकेगी न निर्णय कर सकेगी। कितना भी कोई होशियार हो लेकिन थकावट में परखने, निर्णय करने का फर्क पड़ जाता है।

८- निर्णय शक्ति

माया की हार वा वार से बचने के लिए अपने में निर्णय शक्ति वा परखने की शक्ति को बढ़ाना है। जैसा समय वैसी बात और वैसा अपना स्वरूप बनाने के लिए निर्णय शक्ति चाहिए। जब पहले से जान लो कि कौन सा समय है और उस प्रमाण कौन सा स्वरूप होना चाहिए तब ही विजयी बन सकेंगे।

* ज्ञान और शक्तियों से सर्व प्राप्ति करने के लिए भी निर्णय शक्ति चाहिए। निर्णय शक्ति न होने से जहाँ समाने की शक्ति यूज़ करनी चाहिए वहाँ सामना करने की शक्ति यूज़ कर लेते, जहाँ समेटने की शक्ति यूज़ करनी चाहिए वहाँ विस्तार करने की शक्ति यूज़ कर लेते, इसलिए संकल्प प्रमाण सफलता नहीं होती है।

निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए

* अपनी श्रेष्ठ स्थिति निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी और निर्विकल्प चाहिए। इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। श्रेष्ठ ही स्पष्ट होता है, इसलिए अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए चारों बातों में सम्पन्न बनो। तब बाप के समान सर्वगुणों के मास्टर का अनुभव कर सकेंगे।

* निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिए जितना हो सके अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारे रहने का अभ्यास करो। निराकारी वा अशरीरी अवस्था तो हुई बुद्धि तक लेकिन कर्म से न्यारा भी रहे और निराले भी रहें। जो हर कर्म को देख करके लोग भी समझें कि यह तो निराला है। यह लौकिक नहीं अलौकिक है। इससे ही निर्णय शक्ति बढ़ेगी। निर्णय करने से विघ्नों को भी मिटा सकेंगे और जो सृष्टि पर आने वाले विघ्न हैं, उनसे बच सकेंगे।

* निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए बुद्धि की लगन वा बुद्धि की सच्चाई और सफाई चाहिए। कोई भी चीज जितनी साफ होती है उतना ही उसमें सब स्पष्ट दिखाई देता है अर्थात् निर्णय सहज हो जाता है। लेकिन यहाँ सिर्फ सच्चाई ही नहीं, सफाई के साथ सच्चाई भी चाहिए। जितनी-जितनी बुद्धि की लगन में स्वच्छता अर्थात् सच्चाई और सफाई धारण की हुई है, उतना निर्णय शक्ति

सहज आ जायेगी। जितनी निर्णय शक्ति उतनी सफलता होगी।

९- समेटने की शक्ति

* बाप समान एवररेडी बनने के लिए समेटने की शक्ति चाहिए। बुलावा हुआ और सेकण्ड में अपना रहा हुआ सभी कुछ समेट कर जम्प दे दें। ऐसा एवररेडी बनना है। जब चारों ओर हलचल की परिस्थितयाँ होंगी उस समय एक सेकेण्ड में हलचल होते अचल बनने के लिए समेटने की शक्ति के आधार पर ही फुलस्टाप लगा सकते हो। फाइनल पेपर में पाँचों तत्वों का विकराल रूप होगा। एक तरफ प्रकृति का विकराल रूप दूसरे तरफ विकारों का अन्त होने के कारण अति विकराल रूप होगा। सब अपना लास्ट वार अजमाने वाले होंगे। तीसरी तरफ आत्माओं के भिन्न-भिन्न रूप होंगे – एक तरफ तमोगुणी आत्माओं का वार होगा, दूसरे तरफ भक्त आत्माओं की भिन्न-भिन्न पुकार होगी। चौथे तरफ – पुराने संस्कारों का वार होगा। संस्कार किसी के पास कर्मभोग के रूप में आयेंगे। किसी के पास कर्म सम्बन्ध के बन्धन के रूप में आयेंगे, किसी के पास व्यर्थ संकल्प के रूप में आयेंगे। किसी के पास अलबेलेपन और आलस्य के रूप में आयेंगे। ऐसे चारों ओर हलचल का वातावरण होगा – तो ऐसे समय पर फुल स्टाप लगाने की शक्ति अर्थात् समेटने की शक्ति चाहिए। देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। प्रकृति की हलचल देख प्रकृतिपति बन प्रकृति को शांत करो। अपने फुल स्टाप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टाप करो। इसके लिए समेटने की शक्ति अपने पास जमा चाहिए। अभ्यास करो – अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। इन तीनों स्टेज में स्थित होना सहज हो – तब कहेंगे एवररेडी।

* जैसा समय वैसी स्थिति बनाने के लिए समेटने की शक्ति आवश्यक है। देह-अभिमान के संकल्प को, देह के दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, क्या होगा... इस हलचल के संकल्प को समेटने का अभ्यास चाहिए। उस समय शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को भी समेटना है, घर जाने के संकल्प के सिवाए अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो। बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। शरीर का कोई भी सम्बन्ध वा सम्पर्क नीचे ना ला सके। प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिए स्वयं की स्थिति अकालतख्त

नशीन बनने की चाहिए। अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ उस स्वरूप में सामना कर सकेंगे। ज़रा सा भी देह-भान होगा तो अकाले मृत्यु के समान अचानक के वार में हार खा लेंगे।

* समेटने की शक्ति अर्थात् शार्ट करने की शक्ति। जो दस बोल बोलने हैं उनको शार्ट कर दो। समेटने की शक्ति तब आयेगी जब स्वभाव सरल होगा। जो सरल स्वभाव वाला होता है वह सभी का सहयोगी भी होता है, स्नेही भी होता है इसलिए उनको सबके द्वारा सहयोग प्राप्त होता है। इसलिए वह सभी बातों का सामना भी सहज कर सकते और समेट भी सहज ही सकते हैं। सरल स्वभाव वाले के व्यर्थ संकल्प नहीं चलते हैं। उनका समय व्यर्थ नहीं जाता है। व्यर्थ संकल्प न चलने के कारण उनकी बुद्धि विशाल और दूरंदेशी रहती है। दूसरों के संकल्पों को समझने के लिए अपने संकल्पों को समेटने की शक्ति चाहिए। इसके लिए पहले संकल्पों का बिस्तर बदं चाहिए। जितना स्वयं के संकल्पों को समेटने की शक्ति होगी उतना औरों के संकल्पों को समझने की भी शक्ति होगी।

१०- संगठन की शक्ति

विश्व परिवर्तन के लिए संगठन की शक्ति चाहिए। जब संगठित रूप में एक ही वृत्ति होगी तो वृत्ति और वायब्रेशन द्वारा सारे विश्व का वायुमण्डल परिवर्तन कर सकेंगे। सर्व ब्राह्मण आत्माओं की एक ही वृत्ति की अँगुली चाहिए। एक ही संकल्प की अंगुली हो तब बेहद का विश्व परिवर्तन होगा। जब संगठित रूप में पुराने संस्कार, स्वभाव व पुरानी चलन के तिल जौ स्वाहा करेंगे तब यज्ञ की समाप्ति होगी। जब यज्ञ की समाप्ति होती है तब सभी इकट्ठे स्वाहा कर देते हैं। अगर एक भी आहुति नहीं पड़ी तो अच्छा नहीं मानते हैं। तो अब संगठित रूप में स्वाहा करो। अगर किसी के कुछ पुराने संस्कार रहे हुए हैं, वह स्वयं स्वाहा नहीं कर सकते हैं तो संगठित रूप में सहयोगी बनो। कैसे ? अगर करने वाला कर रहा है या बोल रहा है तो सुनने वाले देखेने वाले देखे नहीं, सुने नहीं तो उसको करना समाप्त हो जायेगा। कोई गीत गाने वाला गा रहा है, डांस वाला डांस कर रहा है। देखने सुनने वाला कोई न हो तो स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। तो ऐसा सहयोग दो। इसको कहा जाता है स्वाहा जब ऐसे सहयोगी बनेंगे तब

ही संगठित रूप में विश्व परिवर्तन कर सकेंगे। हर संकल्प सेवा प्रति स्वाहा, बोल भी विश्व कल्याण प्रति स्वाहा, हर कर्म भी विश्व परितर्वन प्रति स्वाहा। तो अपनापन अर्थात् पुरानापन स्वाहा हो जायेगा। अपने देह की स्मृति सहित स्वाहा होने से एक सेकण्ड में वायब्रेशन द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन कर सकेंगे।

संगठन को मजबूत बनाने के लिए

* संगठन में आते हुए सर्व आत्माओं के प्रति सदा दया भाव और कृपा दृष्टि रखो। इसी विधि से आपोजीशन वाला भी अपनी पोजीशन में टिक जायेगा। विरोधी आत्मा इस विधि से गले मिलने वाली बन जायेगी।

* संगठन में हर एक के संस्कार तो भिन्न-भिन्न रहेंगे ही इसलिए यह नहीं सोचो कि इसके संस्कार बदल जाएं लेकिन उन संस्कारों का प्रभाव हमारे ऊपर न हो, यह ध्यान दो। संस्कार भिन्न-भिन्न होते हुए टक्कर न हो, इसके लिए नॉलेजफुल बनो। कोई रांग करता है तो उसे परवश समझ रहम की दृष्टि से परिवर्तन करो, डिस्कस नहीं करो।

* अगर कोई गाली दे, इन्सल्ट करे तो आप सेंट बन जाओ। नम्रता का कवच पहनकर रहो। अगर आपसे कोई टक्कर लेता है तो आप उसे स्नेह का पानी देते जाओ जिससे अग्नि पैदा न हो।

* हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखो, शुभ भावना सफलता को अवश्य प्राप्त करायेगी। जैसे बाप अपकारियों पर भी उपकार करता है, ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो, अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन करो।

* एक-दूसरे की कमजोरी का न तो वर्णन करना है, न उसे स्वयं में धारण करना है। अगर कोई किसी की कमजोरी आपको सुनाये तो शुभ भावना से उससे किनारा कर लो। बीती हुई बात को रहमदिल बन समा लो।

* अगर कोई ग़लत कार्य कर रहा है, आप जानते हो यह ग़लत है तो उस समय समाने की शक्ति यूज़ करो। एक-दो को श्रेष्ठ भावना का सहयोग दो। ग़लती को नोट न करो, उसे सहयोग का नोट दो ताकि वह दुबारा ग़लती न करे।

* किसी भी आत्मा के कमजोर संस्कारों को देखते हुए उस आत्मा के प्रति अशुभ वा व्यर्थ नहीं सोचना है। कमजोर आत्मा को भी सदा उमंग-उल्हास के

पंख दे शक्तिशाली बनाकर उड़ाना है। किसी के प्रति घृणा दृष्टि नहीं रखनी है।

* लोक संग्रह अर्थ यदि किसी बात के लिए कोई श्रीमत मिलती है तो उस समय अपनी मत नहीं चलानी है। अपने को राइट सिद्ध नहीं करना है। भल आप राइट भी हो लेकिन श्रीमत पर अटेन्शन देना है क्योंकि सत्यता महानता है और जो महान् है वह झुकता है। इसलिए कभी भी क्यों, क्या में न जाकर फुल स्टॉप लगा दो अर्थात् स्वयं को मोल्ड कर लो। एक ने कहा, दूसरे ने माना तो अनेकों को सुख देने के निमित्त बन जायेंगे।

* संगठन रूपी किले को मजबूत बनाने के लिए अगर एक के लिए दूसरा कुछ बोलता है तो वह चुप रहे। दूसरे को बदलने के लिए सहन करना होता है। जैसे ब्रह्मा बाप जो इतनी बड़ी अथॉरिटी थे, उन्होंने भी इनसल्ट सहन की । छोटे-छोटे बच्चों से भी सुना, अज्ञानियों से भी सुना। जब बाप ने सब कुछ सहन कर परिवर्तन किया। तो फालो फादर।

* संगठन में हरेक की राय को सम्मान देना है। यह कैसे होगा, यह नहीं हो सकता – ऐसे कट करना भी अपमान करना है। इसके बजाए कहो – हाँ, बहुत अच्छा है, इस पर विचार करेंगे। ऐसे उसे सम्मान दो तो वह सहयोगी बन जायेगा।

* अगर कोई डिस-युनिटी का कार्य करता है तो आप युनिटी में रहो। दूसरों को नहीं देखो। आप युनिटी में होंगे तो दूसरे स्वत: आ जायेंगे। हर बात में, हर संकल्प बोल और कर्म में सदा एक-दो में युनिटी दिखाई दे। ब्राह्मण माना ही युनिटी।

* सामना करने की शक्ति आपस में यूज़ नहीं करनी है। वो माया के सामने यूज़ करनी है। परिवार से सामना करने की शक्ति यूज करने से संगठन एकमत नहीं हो सकता। इसलिए एक ने कहा, दूसरे ने स्वीकार किया। अगर कोई बात नहीं भी जंचती है तो भी कट नहीं करना है, सत्कार देना है।

* आपस की भाषा भी अव्यक्त भाव की होनी चाहिए। किसी की सुनी हुई ग़लती को संकल्प में भी न तो स्वीकार करना है, न कराना है। संगठन में विशेष अनुभवों की लेन-देन करनी है।

* संगठन को जोड़ने का धागा है फेथ। किसी ने जो कुछ किया, मानो रांग

ही किया लेकिन जरूर उसका कोई भाव अर्थ होगा। उनके संस्कारों को रहमदिली की दृष्टि से देखते हुए उसमें भी कल्याण की भावना रखकर चलना है। बीते हुए संस्कारों की कभी भी वर्तमान समय से तुलना नहीं करनी है।

* दूसरे की ग़लती को अपनी ग़लती समझना – यह है संगठन को मजबूत करना। यह तब होगा जब एक-दो में फेथ होगा। परिवर्तन करने का फेथ या कल्याण करने का फेथ रखो।

११- एकता की शक्ति

* विश्व में विजय का नगाड़ा तब बजेगा जब आप सभी बच्चों के सर्व संकल्प एक संकल्प में समा जायेंगे। सभी के संगठित रूप की अंगुली से यह कलियुगी पर्वत उठना है। संगठित रूप में एक संकल्प, एकमत और एकरस स्थिति की निशानी चित्रों में अंगुली दिखाते हैं। तो आपके इस दैवी संगठन की एकरस स्थिति द्वारा ही विश्व में बापदादा की प्रत्यक्षता होगी।

* संगठन में व माला में एक भी मणका भिन्न प्रकार का होता है तो माला की शोभा नहीं होती। इसलिए भिन्नता को मिटाकर एकमत द्वारा संगठन की शक्ति को प्रत्यक्ष करो क्योंकि परमात्म ज्ञान की विशेषता ही एकता है इससे ही विश्व में एक धर्म, एक राज्य, एक मत की स्थापना होती है।

* मोती वा मणके की वैल्यु माला में पिरोने से होती है। जब मोती संगठन में आता है तो शक्तिशाली हो जाता है। ऐसे आप भी जब एक से दो आपस में मिल जाते हो तो दो मिलकर ११ हो जाते हैं। यह एकता की निशानी है। इसके लिए कभी किसी की कमजोरी देखकर उससे किनारा नहीं करो। शुभचिंतक भावना से सहयोगी साथी बन उसे परिवर्तन करो, दूसरे की कमजोरी स्वयं के अन्दर नहीं जानी चाहिए।

* जैसे साकार बाप सदा बच्चों के प्रति रिगार्ड के बोल बोलते थे। अथॉरिटी होते हुए भी अथॉरिटी को यूज़ नहीं किया, ऐसे आप बच्चे भी एक दो को रिगार्ड दो। किसी की सुनी हुई गलती को संकल्प में भी स्वीकार न करो। जब एकमत का धागा हो और संस्कारों की समीपता हो तब ही माला शोभेगी।

* जैसे कोई अपनी गलती महसूस भी करते हैं लेकिन उसको कभी फैलायेंगे नहीं, बल्कि उसे समायेंगे। यदि दूसरा उसे फैलायेगा तो भी बुरा लगेगा।

इसी प्रकार दूसरे की गलती को भी अपनी गलती समझ फैलाना नहीं चाहिए। व्यर्थ संकल्प नहीं चलाने चाहिए, बल्कि स्नेह की शक्ति से उसे ठीक कर देना चाहिए। बीते हुए संस्कारों की भेंट कभी भी वर्तमान से नहीं करनी है, जब पास्ट को प्रजेन्ट से मिलाते हो तब संकल्पों की क्यू लगती है और संगठित रूप में एकरस स्थिति नहीं बनती। इसलिए व्यर्थ संकल्पों को फुलस्टॉप दो।

* एकता के लिए दो बातें प्रैक्टिकल में लानी है–एक तो एकनामी बन सदैव हर बात में एक का ही नाम लेना दूसरा इकॉनॉमी करना अर्थात् समय की, संकल्पों की, ज्ञान के खज़ाने की एकॉनॉमी करना। जब सभी प्रकार की इकॉनॉमी सीख जायेंगे तब अनेक प्रकार की भिन्नता एक बाप में समा जायेगी। इकॉनामी करने से न तो व्यर्थ संकल्प चलेंगे और न टक्कर होगी।

* जैसे सभी देखने वाले आने वाले यही वर्णन करते हैं कि यहाँ एक-एक आत्मा का उठना, बोलना, चलना, ज्ञान सुनाना...सब एक जैसा है–यही विशेषता गायन करते हैं तो उसी प्रमाण अपने आपको चेक करो कि ऐसी एकता है? एक ही गति, एक ही रीति, एक ही नीति है? कोई भी कारण कमजोरी से पैदा होते हैं, इसलिए उस कारण का निवारण करो, तब एकमत के संगठन द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होगी।

* कोई क्या भी करे, आपके आगे विघ्न रूप भी बनें लेकिन आपका भाव उस आत्मा के प्रति भी शुभ चिंतक का हो। यदि किसी का आपके प्रति शुभ भाव है और आप भी उसके प्रति शुभ भाव रखते हो तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। अपकारी पर उपकार करने वाले का गायन है। कोई बार-बार गिराने की कोशिश करे, आपके मन को डगमग करे, फिर भी उसके प्रति सदा शुभचिंतक का अडोल भाव हो। बात पर भाव न बदले। सदा अचल अटल भाव हो–तब एकमत का संगठन तैयार होगा और विश्व में जय-जयकार होगी।

१२- मनन शक्ति

जैसे शरीर की शक्ति के लिए सबसे ज्यादा पाचन शक्ति अर्थात् हज़म करने की शक्ति आवश्यक है वैसे आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए मनन शक्ति भी इतनी ही आवश्यक है। मनन शक्ति से बाप द्वारा सुना हुआ ज्ञान स्व का अनुभव बन जाता है। जैसे पाचन शक्ति द्वारा भोजन शरीर की शक्ति खून

के रूप में समा जाती है। भोजन की शक्ति अपने शरीर की शक्ति बन जाती है। ऐसे ज्ञान की हर पांइट मनन शक्ति द्वारा स्व की शक्ति बन जाती है। मनन शक्ति से मेहनत समाप्त हो जाती है। मनन शक्ति द्वारा अनुभव स्वरूप हो जाना यही आत्मिक शक्ति है। मनन शक्ति द्वारा हर पांइट के अनुभवी सदा शक्ति-शाली माया प्रूफ, विघ्न प्रूफ सदा अंगद के समान अचल हो जायेंगे।

आत्मा में किसी भी प्रकार की कमी हो तो उसे भरने का साधन है मनन शक्ति। सिर्फ श्रोता स्वरूप वा भाषण करता स्वरूप से आत्मा शक्तिशाली नहीं बनेगी। ज्ञान स्वरूप अर्थात् अनुभव स्वरूप। अनुभव को बढ़ाओ। उसका आधार है मनन शक्ति। मनन वाला स्वत: ही मगन रहता है। मगन अवस्था में योग लगाना नहीं पड़ता लेकिन लगा हुआ अनुभव होता है।

माया पहले-पहले बुद्धि पर ही वार करती है। माया का विशेष बाण है व्यर्थ संकल्प। इस बाण द्वारा वह दिव्य बुद्धि को कमजोर बनाती है। कमजोर होने के कारण परवश हो जाते हैं। कमजोर व्यक्ति जो चाहे वह कर नहीं पाता। इस कमजोरी को समाप्त करने के लिए बापदादा द्वारा मनन शक्ति मिली है। उस मनन शक्ति को यूज़ करो। मनन शक्ति ही दिव्य बुद्धि की खुराक है।

मनन शक्ति का विस्तार बहुत बड़ा है। जब से ब्राह्मण जन्म हुआ है तब से अब तक डायरेक्ट बाप द्वारा ब्राह्मण जीवन के जो अनेकानेक टाईटल्स मिले हैं अगर रोज़ अमृतवेले अपने एक टाईटिल को स्मृति में लाओ और मनन करते रहो तो मनन शक्ति से बुद्धि शक्तिशाली रहेगी। शक्तिशाली बुद्धि के ऊपर माया का वार हो नहीं सकता। तो बुद्धि की कमजोरी का निवारण है मनन शक्ति।

मनन शक्ति अर्थात् अपने अनेक टाइटिल्स अर्थात् स्वरूपों को स्मृति में रखना। अनेक गुणों का श्रृंगार बुद्धि में रखना। अनेक प्रकार की खुशी की प्वाइंटस स्मृति में रखना। रचयिता बाप के परिचय की प्वाइंट बुद्धि में रखना। रचना के विस्तार की प्वाइंट स्मृति में रखना। मनन शक्ति का बहुत सहज साधन है। जो चाहे वह मनन करो। मनन करते मगन अवस्था सहज हो जायेगी। परवश के बजाए मायाजीत बनने का वशीकरण मन्त्र सदा साथ रहेगा और माया सदा के लिए नमस्कार कर लेगी। इसका सहज साधन - मनन शक्ति को बढ़ाओ।

१३- परिवर्तन की शक्ति

परिवर्तन ही प्रगति का सहज साधन है। ब्राह्मण बनते ही जब स्मृति का परिवर्तन किया तो आपकी जीवन चेंज हुई, उसके बाद दैहिक दृष्टि बदल गई। आत्मा भाई-भाई की दृष्टि से फिर सृष्टि बदल गई। युग भी परिवर्तन हो गया। कलियुगी से संगमयुगी बनें तो प्रगति हुई। लेकिन इस परिवर्तन के बाद सदा प्रगति होती रहे–इसके लिए तीन बातें ध्यान पर रहें: १- स्वभाव को सरल बनाना है। २- सब बातें देखते, सुनते सदा पॉजीटिव भाव रखना है और ३- हर आत्मा के प्रति कल्याण की भावना रखनी है।

बापदादा के हर डायरेक्शन को अमल में लाने के लिए – विशेष स्व का परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। परिवर्तन करने की शक्ति से जहाँ भी होंगे वहाँ सफल रहेंगे। सदा स्व परिवर्तन का लक्ष्य रखो। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ - नहीं। दूसरा बदले या न बदले मुझे बदलना है। हे अर्जुन मुझे बनना है। सदा परिवर्तन करने में पहले मैं। जब इसमें पहले मैं करेंगे तब सबमें पहला नम्बर हो जायेंगे। अपने को मोल्ड करना अर्थात् रीयल गोल्ड बनना।

कोई भी आत्मा हो, कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति है तो सफल सेवाधारी बन सकेंगे। परिवर्तन शक्ति के आधार से विशेष आत्मा बन जायेंगे। जब तक परिवर्तन करने की शक्ति नहीं होगी तब तक निर्णय को भी प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हो क्योंकि हर स्थान पर, हर स्थिति में चाहे स्वयं के प्रति वा सेवा के प्रति हो, परिवर्तन जरूर करना पड़ता है। जैसे सफलता मूर्त बनने के लिए संस्कार स्वभाव परिवर्तन करना पड़ता है। वैसे ही सेवा में अपने विचारों को कहीं न कहीं परिवर्तन करना पड़ता है। परिवर्तन शक्ति वाला कैसी भी परिस्थिति में सफल हो जाता है।

संगमयुग पर विशेष खेल परिवर्तन का है। विश्व परिवर्तन के निमित्त बनने के पहले स्वयं का परिवर्तन आवश्यक है। बापदादा द्वारा डायरेक्शन मिले कि एक सेकण्ड में अपनी स्मृति को परिवर्तन कर लो अर्थात् स्वयं को देह नहीं आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर देखो तो स्वयं की स्मृति एक सेकेण्ड में परिवर्तन कर लो। अपने स्वभाव संस्कार को, वृत्ति को सेकण्ड में परिवर्तन कर लो। अपने सेकण्ड के संकल्प को सेकण्ड में व्यर्थ से समर्थ में परिवर्तन कर लो।

अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को सेकेण्ड में साधारण से तीव्र कर लो। सेकण्ड में साकार वतन से पार निराकारी परमधाम के निवासी बन जाओ... इसको कहा जाता है परिवर्तन शक्ति। सर्व प्राप्तियों का अधार परिवर्तन शक्ति है। जो स्वयं का परिवर्तन नहीं कर सकते हैं वह ऊँचा लक्ष्य रखते हुए भी उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। परिवर्तन शक्ति न होने के कारण साधन अपनाते हुए भी, संग करते हुए भी यथाशक्ति नियमों पर चलते हुए भी स्वयं को ब्राह्मण कहलाते हुए भी अपने आप से सन्तुष्ट नहीं रहते। एक परिवर्तन शक्ति ही सर्वशक्तिवान् बाप और श्रेष्ठ आत्माओं के समीप जाने का साधन बन जाती है। परिवर्तन शक्ति नहीं तो हर प्राप्ति से वंचित अपने को किनारे पर खड़ा हुआ अनुभव करेंगे। सदा स्नेह, सहयोग और शक्ति का अनुभव करने के प्यासे रहेंगे। अनेक प्रकार की स्वयं के प्रति इच्छाओं का वह आशाओं का और कामनाओं का विस्तार तूफान के समान आता ही रहेगा। इस तूफान के कारण प्राप्ति की मंजिल सदा दूर नजर आयेगी। फाइलन पेपर में पास होने का आधार परिवर्तन शक्ति है। अकाले मृत्यु के नज़ारों को देखने और सुनने के लिए परिवर्तन शक्ति को बढ़ाओ। जिस समय भयानक दृश्य सामने हो, प्रकृति के तत्व का वार हो रहा हो उस समय भय न लगे, सेफ हो जाएं उसके लिए उसी सेकेण्ड परिवर्तन शक्ति यूज़ करो – कि मैं अकेला नहीं, मेरे साथ स्वयं बाप है। मैं कम्बाइन्ड हूँ। एक सेकेण्ड में परिवर्तन करो क्योंकि खेल ही एक सेकण्ड के आधार पर है। परिवर्तन शक्ति न होने के कारण अनेक प्रकार की कामनायें अन्दर में रह जाती हैं – जैसे हम चाहते तो हैं फिर पता नहीं क्यों नहीं होता। यह होना तो चाहिए लेकिन होता नहीं। बहुत पुरुषार्थ कर लिया। इस तूफान से निकलने का साधन परिवर्तन शक्ति को बढ़ाओ तो प्रत्यक्षफल की प्राप्ति कर सकेंगे। सदैव यह स्मृति में रखो कि मैं बाप का सहयोगी, विश्व परिवर्तन करने वाला मैं ही विश्व परिवर्तक हूँ। परिवर्तन करना ही मेरा कार्य है। इसी कार्य अर्थ यह ब्राह्मण जीवन प्राप्त हुआ है।

विश्व परिवर्तन के लिए स्वयं को परिवर्तन करने की शक्ति चाहिए। स्वयं को देखो कि संकल्प वाणी और कर्म में कितना परिवर्तन आया है ? किसी भी लौकिक वस्तु वा व्यक्ति को देखते हुए अलौकिक स्वरूप में परिवर्तन करना है। दृष्टि को, वृत्ति को, वायब्रेशन वायुमण्डल को लौकिक से अलौकिक बनाने का

अभ्यास करना है। ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्म है लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करना। यही पुरुषार्थ सर्व आत्माओं से सर्व कमजोरियों से मुक्त कर सकता है। अमृतवेले से रात तक जो भी देखते हो, सुनते हो, सोचते हो वा कर्म करते हो उसको लौकिक से अलौकिक में परितर्वन करो। यह प्रैक्टिस बहुत सहज है लेकिन इसके लिए सिर्फ अटेन्शन रखने की आवश्यकता है। अलौकिक स्वरूप अर्थात् कमल पुष्प समान। कैसा भी तमोगुणी वातावरण हो, वायब्रेशन हो लेकिन सदा कमल समान रहो। लौकिक कीचड़ में रहते भी न्यारे अर्थात् आकर्षण से परे रहो। किसी भी प्रकार के मायावी अर्थात् विकारों के वशीभूत व्यक्ति के सम्पर्क से स्वयं वशीभूत न हो क्योंकि आप वशीभूत आत्मा को छुड़ाने वाले हो। स्वयं वशीभूत होने वाले नहीं। हम सब एक बाप की सन्तान रूहानी भाई हैं यह अलौकिक दृष्टि की स्मृति रहने से देहधारी दृष्टि अर्थात् लौकिक दृष्टि परिवर्तन हो जायेगी। जब बीज समाप्त हो गया तो फिर अनेक प्रकार के विकारों का विस्तार रूपी वृक्ष स्वत: ही समाप्त हो जायेगा।

किसी भी प्रकार की कोई भी बात, जिसको दुनिया वाले आपदा समझते हैं लेकिन आप खिलाड़ी बन खेल करो। आपदा को भी खेल के रूप में परिवर्तन कर दो। हाय-हाय के बाजाए ओहो! शब्द निकले। यह दुख है, यह सुख है इसकी नालेज होते हुए भी दुख के प्रभाव में न आओ। दुख की भी बलिहारी सुख के दिन आने की समझो। ऐसा परिवर्तन करना ही परिवर्तन की शक्ति है। यही सम्पूर्ण योगी की निशानी है। दुश्मनी को दोस्ती में परिवर्तन कर दो। दुश्मन बन आए और बलिहार होकर जाए। जब विश्व को परिवर्तन करने की चेलेन्ज करते हो तो यह परिवर्तन क्या बड़ी बात है। इसका सहज साधन है लेने वाले नहीं लेकिन देने वाले दाता बनो। दाता के आगे सब स्वयं झुकते हैं। वह स्थूल झुकते हैं। यहाँ स्वभाव संस्कार से झुकेंगे। दुश्मन भी बलिहार हो जायेंगे।

१४- स्नेह की शक्ति

सहजयोगी बनने का सहज साधन–रूहानी सच्चा स्नेह है। यह स्नेह सारे पुराने संसार को सहज भुला देता है। हर आत्मा को बाप का बनाने में एकमात्र शक्तिशाली साधन स्नेह है। स्नेह ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन है। स्नेह ही शक्तिशाली जीवन बनाने का, पालना का आधार है। सदा स्नेही के आगे प्रकृति

और माया दोनों दासी बन जाते हैं।

चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रूप, ज्वाला रूप धारण कर सामने आये लेकिन विकराल ज्वाला रूप को भी स्नेही मूर्त, स्नेह की सीरत, स्नेही व्यवहार द्वारा, स्नेह की शीतलता द्वारा परिवर्तन कर दो। सदा यही लक्ष्य हो कि स्नेह देना है और स्नेह लेना है। स्नेह की दृष्टि, स्नेह की वृत्ति, स्नेहमयी कृति द्वारा स्नेही सृष्टि बनानी है।

विश्व में अरब-खरब पति बहुत हैं लेकिन परमात्म सच्चे प्यार के भिखारी हैं। स्नेह सम्पन्न जीवन की, सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं है। हर एक को कोई न कोई चिंता है। सच्चे रूहानी स्नेह को ढूंढ रहे हैं। तो ऐसी प्यासी भटकती हुई आत्माओं को सच्चे स्नेह की अनुभूति कराओ। सच्चा नि:स्वार्थ प्यार दो।

जैसे बाप का सभी बच्चों से सच्चा स्नेह है इसलिए कभी कोई बच्चे की कमी, कमजोरी देख नहीं सकते। अपने परिवार की कमी अपनी कमी होती है, इसलिए बाप को घृणा नहीं लेकिन रहम आता है। ऐसे फालो फादर कर अपने सर्व आत्मिक भाईयों के सच्चे स्नेही बनो।

जिससे दिल का सच्चा प्यार होता है उसकी कमी को हमेशा अपनी कमी समझते हैं। जैसे बापदादा का बच्चों से अति स्नेह है इसलिए शिक्षायें देते हैं। प्यार नहीं होता तो कहते जैसे चल रहे हैं, चलते रहें। लेकिन नहीं, बच्चों में छोटी सी कमी भी क्यों रह जाए। प्यार वाले की कमी देखी नहीं जाती। स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप बच्चों को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनाना है। ऐसे सर्व के सच्चे स्नेही बन उनकी कमियों को अपनी कमी समझकर उन्हें परिवर्तन करो।

जिससे स्नेह होता है उसका कुछ शिक्षा का इशारा मिलना भी प्यारा लगता है। और सदैव दिल में अनुभव होता है कि जो कुछ कहा मेरे कल्याण के लिए कहा क्योंकि उसके प्रति दिल की श्रेष्ठ भावना होती है। तो जैसे बाप के प्रति अटूट, अखण्ड, अटल प्यार है, श्रेष्ठ भावना वा निश्चय है ऐसे ब्राह्मणों से भी आत्मिक प्यार अटूट हो, अखण्ड हो। वैराइटी चलन, वैराइटी संस्कार देखकर देखते हुए भी प्यार में अन्तर न आये क्योंकि सारे कल्प में एक दो से अटूट सम्बन्ध रहा है और अभी सब ईश्वरीय परिवार के हैं।

किसी भी आत्मा की कोई भी बात आपको पसन्द नहीं आती है तो उस

समय बुद्धि में यही याद रखो कि इस आत्मा को बाप ने पसन्द किया है, अवश्य कोई विशेषता है। जैसे बाप ने किसी भी बच्चे की कमजोरी को देखने के बजाए और ही हिम्मत बढ़ाई कि आप ही मेरे थे, मेरे हो और सदा बनेंगे। तो फालो फादर करो। विशेष आत्मा समझ किसको भी देखो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ तो हर आत्मा के प्रति स्वत: ही आत्मिक प्यार इमर्ज होगा। बाप के साथ सर्व के स्नेही बन जायेंगे।

जैसे साकार में बाप शरीर का व तबियत का भी ख्याल न करके बच्चों को विशेष सर्चलाइट देते थे। यह स्नेह का सबूत है। ऐसे अब बच्चों को भी रिटर्न में स्नेह का सबूत देना है। जो कर्म करके दिखाया है वही करना है। स्नेह में हमेशा सेक्रीफाय (बलिदान)किया जाता है। तो अमृतवेले जैसे साकार रूप में करके दिखाया वैसे ही फालो करो। ऐसे नहीं सिर्फ उठकर बैठ जाना है। लेकिन उस समय लाइन क्लीयर हो, शक्ति रूप में बैठकर सर्चलाइट दो। सुस्ती मिक्स न हो।

१५- सत्यता की शक्ति

प्रभु पसन्द बनने के लिए –'सच्ची दिल पर साहेब राजी।' जो भी हो – सच्चाई भगवान को भी जीत लेती है।

''सत्यता महानता है'' और महान वही है जो स्वयं झुकता है। अगर मानो कल्याण के प्रति झुकना भी पड़ता है तो वह झुकना नहीं है लेकिन महानता है। अनेकों की सेवा के अर्थ महान को झुकना ही पड़ता है। सत्यता अर्थात् रीयल्टी। सत्यता की ही मान्यता है। सत्यता की अथॉरिटी से औरों को भी कहते हो हम आत्मा हैं। इसी प्रकार से सत्य बाप का सत्य परिचय मिलने से अथॉरिटी से कहते हो परमात्मा हमारा बाप है। वर्से के अधिकार की शक्ति से कहते हो बाप हमारा और हम बाप के।

सत् शब्द के दो अर्थ हैं। एक सत् अर्थात् सत्य दूसरा सत् अर्थात् अविनाशी। तो बाप सत्य भी है और अविनाशी भी है इसलिए बाप द्वारा जो परिचय मिला वह सब सत् अर्थात् सत्य और अविनाशी है। भक्त लोग भी बाप की महिमा गाते हैं – 'सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्'। सत्यम् भी मानते और अविनाशी भी मानते। गॉड इज ट्रुथ भी मानते। तो सत्य बाप द्वारा सत्यता की अथॉरिटी का

वर्सा मिलता है। सत्यता की अथॉरिटी वाले का गायन है, –'सच तो बिठो नच'। सत्य की नाँव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती। आपको कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे और कहे कि यह झूठ है, कल्पना है। लेकिन सच तो बिठो नच। आप सत्यता के महानता के नशे में सदा खुशी के झूले में झूलते रहते हो। जितना वह हिलाते उतना और ही ज्यादा झूलते हो।

सत्यता की शक्ति सारी प्रकृति को ही सतोप्रधान बना देती है। युग को सतयुगी बना देती है। सर्व आत्माओं के सद्गति की तकदीर बना देती है। हर आत्मा आपके सत्यता की शक्ति द्वारा यथा शक्ति अपने धर्म में अपने समय पर गति के बाद सद्गति में अवतरित होंगे। सत्यता पारस के समान है। जैसे पारस लोहे को भी पारस बना देता है। आपके सत्यता की शक्ति आत्मा को, प्रकृति को, समय को, सर्व सामग्री को, सबको सतोप्रधान बना देती है। तमोगुण का नाम निशान समाप्त कर देती है। सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप में, आधाकल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के रूप में गाया जाता है। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। हर कर्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। तो जहाँ सत्यता है, सत् बाप है वहाँ सदा विजय है।

सत्यता को शीतलता की शक्ति से सिद्ध करो। सत्यता और शीतलता दोनों शक्तियाँ समान और साथ चाहिए क्योंकि आज के विश्व का हर एक मानव किसी न किसी अग्नि में जल रहा है। ऐसी अग्नि में जलती हुई आत्मा को पहले शीतलता की शक्ति से शीतल करो तब सत्यता को जान सकेंगे। शीतलता की शक्ति किसी भी अग्नि में जली हुई आत्मा को शीतल बनाए सत्यता को धारण करने के योग्य बना देती है।

सत्यता जरा भी बनावटी या मिलावटी न हो। चाहे बोल में, चाहे कर्म में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में मिलावट या बनावट नहीं हो। ऐसे नहीं कि वृत्ति में एक बात हो और बोल में दूसरा बनावटी भाव हो। इसको रॉयल्टी वा रीयल्टी नहीं कहा जाता है। रॉयल आत्मा का चेहरा और चलन दोनों ही सत्यता की सभ्यता अनुभव करायेंगे। वैसे भी रॉयल आत्माओं को सभ्यता की देवी कहा जाता है।

उनका बोलना, देखना, चलना, खाना-पीना, उठना-बैठना, हर कर्म में सभ्यता, सत्यता स्वत: ही दिखाई देगी। सत्यता की रॉयल्टी को कोई छिपा नहीं सकता। न कोई कारण छिपा सकता है, न कोई व्यक्ति। सत्य सदा ही सत्य है। सत्यता की शक्ति सबसे महान है। सत्यता सिद्ध करने से सिद्ध नहीं होती। सत्यता की शक्ति को स्वत:ही सिद्ध होने की सिद्धि प्राप्त होती है। सत्यता को अगर कोई सिद्ध करने चाहता है तो वह सिद्ध जिद् हो जाता है। सत्यता स्वयं ही सिद्ध होती है, उसको सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। असत्यता को खत्म करने के लिए सत्यता की शक्ति चाहिए। सत्यता को सिद्ध करने वाला स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा।

बाप सत्य है, ज्ञान सत्य है, आत्मा भी सत्य है और ब्राह्मण जीवन भी सत्य है। तो सत्यता का झण्डा पहले लहराना पड़ेगा तब इस सत्यता की विशेषता से चमक बढ़ेगी और भारत क्या, सारे विश्व तक फैलेगी। सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो।

विभिन्न दिव्य गुणों पर बापदादा के महावाक्य

१- सन्तुष्टता

संगमयुग का विशेष वरदान सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियां हैं। असन्तुष्टता का बीज स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है–''अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में अथवा ब्राह्मण जीवन में'' तो फिर असन्तुष्टता क्यों ? सिर्फ प्राप्त हुए खजानों को हर समय कार्य में लगाओ अर्थात् स्मृति-स्वरूप बनो तो सन्तुष्टमणि बन जायेंगे।

चाहे कोई भी परिस्थिति आ जाए, चाहे कोई आत्मा हिसाब-किताब चुक्तू करने लिए सामना करने आ जाए, चाहे शरीर का कर्मभोग सामना करने आता रहे लेकिन हद की कामना से मुक्त बन सन्तुष्टता की विधि से चेहरे द्वारा सदा प्रसन्नता की झलक दिखाओ। अपने मन से, दिल से, सर्व से, बाप से और ड्रामा से सदा सन्तुष्ट रहो तो मन और तन में सदा प्रसन्नता की लहर दिखाई देगी।

बेहद की प्राप्तियों को हद में परिवर्तन करने से सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं हो सकती। हद अर्थात् अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा, बेहद की प्राप्ति के फलस्वरूप जो सदा सन्तुष्टता की अनुभूति हो उससे वंचित कर देती है। हद की प्राप्ति दिलों में हदें डाल देती है इसलिए असन्तुष्टता की अनुभूति होती है। तो अब हद की इच्छाओं को समाप्त करो।

अब चमकती हुई सन्तुष्ट मणियां बन सर्व को सन्तोष देने का समय है। आजकल सन्तोषी माँ को बहुत पुकारते हैं क्योंकि सन्तुष्टता वा सन्तोष सर्व प्राप्तियों का आधार है। जहाँ सन्तुष्टता है वहाँ अप्राप्ति नहीं है। सन्तुष्टता के आधार पर स्थूल धन में भी बरक्कत अनुभव होती है। सन्तुष्टता वाले का धन–दो रूपया भी दो लाख समान है। करोड़पति हो लेकिन सन्तुष्टता नहीं, तो करोड़, करोड़ नहीं, इच्छाओं के भिखारी हैं। इच्छा अर्थात् परेशानी। इच्छा कभी अच्छा बना नहीं सकती। इसलिए सन्तुष्टमणि बन ''इच्छा मात्रम् अविद्या'' बनो।

हर विशेषता को धारण करने का सहज साधन सन्तुष्टता है। सन्तुष्टता का खजाना सर्व खजानों को स्वत: ही अपनी तरफ आकर्षित करता है। सन्तुष्टता ज्ञान

की सब्जेक्ट का प्रत्यक्ष प्रमाण है। सन्तुष्टता बेफिक्र बादशाह बनाती है। सन्तुष्टता सदा स्वमान की सीट पर सेट रहने का साधन है। तो सदा सन्तुष्टता की विशेषता को धारण कर सन्तुष्टमणि बनो।

सन्तुष्टता ब्राह्मण जीवन का जीयदान है। ब्राह्मण जीवन की उन्नति का सहज साधन है। स्व से सन्तुष्ट, परिवार से सन्तुष्ट और परिवार उससे सन्तुष्ट। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में भी सन्तुष्ट बनो। ऐसे सन्तुष्टता-स्वरूप श्रेष्ठ आत्मा विजयी-रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी हैं।

जो सदा स्वयं सन्तुष्ट वा प्रसन्न रहते हैं उसकी प्रशन्सा हर एक अवश्य करते हैं। चलते-चलते ब्राह्मण जीवन में समस्यायें या परिस्थितियां तो ड्रामानुसार आनी ही हैं। जन्म लेते ही आगे बढ़ने का लक्ष्य रखना अर्थात् परीक्षाओं और समस्याओं का आह्वान करना। जब अपने किये हुए आह्वान को भूल जाते हो तब असन्तुष्ट होते हो। फिर सहज मार्ग सहन करने का मार्ग अनुभव होता है और संगमयुग का विशेष खजाना–'अतीन्द्रिय सुख' का अनुभव नहीं कर पाते। इसलिए सदा सन्तुष्ट और प्रसन्न रहने का वरदान स्वयं भी लो और औरों को भी दो।

हर एक को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं:- (१) स्व की स्व से सन्तुष्टता, (२) बाप द्वारा सन्तुष्टता (३) ब्राह्मण परिवार द्वारा सन्तुष्टता। इसी से अपने वर्तमान और भविष्य को श्रेष्ठ बना सकते हो। यह सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट लेना ही लास्ट सो फास्ट सो फर्स्ट जाना है।

सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की मुख्य निशानी है। जितना-जितना सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता की आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेसपान्ड मिले–इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं। कैसे भी संस्कार वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इनकी मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की वा रहमदिल की शुभ-भावना सदा नज़र आती है। ऐसे सर्व आत्माओं द्वारा सन्तुष्टमणि का सर्टीफिकेट प्राप्त हो तब कहेंगे सम्पूर्णता के समीप हैं।

सन्तुष्ट करने का मुख्य साधन है—जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो, वैसा अपने को मोल्ड कर लो। अपने स्वभाव-संस्कार के वशीभूत न हो। ऐसे इज़ी संस्कार हों कि जैसा समय वैसा अपने को बना सकें। संकल्प भी न आये कि मेरे कोई संस्कार हैं। जो अनादि-आदि संस्कार हैं वही स्वरूप में हो।

२- प्रसन्नता

* संगमयुग पर जिन बच्चों को सर्व प्राप्तियाँ हैं, उनके चलन और चेहरे से सदा प्रसन्नता की झलक दिखाई देती है। कुछ भी हो जाये लेकिन सर्व प्राप्तिवान कभी अपनी प्रसन्नता छोड़ नहीं सकते। ब्राह्मण जीवन की विशेषता है ही प्रसन्नता। चाहे कोई गाली भी देता हो तो भी चेहरे पर दु:ख की लहर नहीं आ सकती। यदि शक्ल पर एक सेकण्ड के लिए भी अप्रसन्नता आई तो फेल हो जायेंगे।

* जिसे सर्व प्राप्तियाँ हैं उसके चेहरे से प्रसन्नता की पर्सनाल्टी दिखाई देगी। ऐसी प्रसन्नचित आत्मायें कभी प्रश्नचित नहीं बन सकती अर्थात् उनमें क्यों, क्या की हलचल नहीं हो सकती क्योंकि वे सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न हैं। जो सम्पन्न होता है उसमें हलचल नहीं होती है, जो खाली होता है, उसमें हलचल होती है।

* प्रसन्नता अगर कम होती है तो उसका कारण प्राप्ति कम और प्राप्ति की कमी का कारण, कोई न कोई इच्छा है। इच्छा का फाउण्डेशन ईर्ष्या और अप्राप्ति है। यदि किसी भी कारण से मूड बदलता है तो प्रसन्नता नहीं हुई।

* प्रशंसा के आधार पर प्रसन्नता का अनुभव अल्पकाल के लिए होता है। वह आज है कुछ समय के बाद समाप्त हो जायेगा। मैंने यह सेवा की तो मेरा नाम होना चाहिए। सेवा की रिजल्ट में मेरे को मान मिलना चाहिए। यह मान नहीं है लेकिन अभिमान है। जहाँ अभिमान है वहाँ प्रसन्नता रह नहीं सकती। ये सब रॉयल इच्छायें प्राप्ति स्वरूप बनने नहीं देती हैं।

* सदा प्रसन्नचित रहने के लिए एक बाप के स्नेह में सदा समाये रहो। तो स्नेह के रिटर्न में सर्व प्राप्तियाँ स्वत: हो जायेंगी। प्राप्ति सम्पन्न बनने से प्रसन्नचित स्थिति का अनुभव होगा। फिर किसी भी प्रकार का सहारा आकर्षित

नहीं करेगा। सदा यही गीत गाते रहो ''पाना था वो पा लिया, काम क्या बाकी रहा...''

* सदा प्रसन्न वही रह सकते हैं जो सदा श्रेष्ठ कर्म करते हैं। श्रेष्ठ कर्म की निशानी है स्वयं भी सन्तुष्ट और दूसरे भी सन्तुष्ट। अगर कोई स्वयं से असन्तुष्ट है वा दूसरे उससे असन्तुष्ट रहते हैं तो समझना चाहिये कि योगयुक्त बनने में कोई कमी है।

* संगमयुग पर जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट अर्थात् प्रसन्न रहना ही आगे बढ़ना है। इसलिए अपना नैचुरल स्वभाव सन्तोष का हो। यदि सन्तुष्टता का निजी संस्कार है तो उसका प्रभाव वायुमण्डल पर पड़ेगा और वह श्रेष्ठ वायुमण्डल असन्तुष्ट आत्मा को भी सन्तुष्ट कर प्रसन्नचित बना देगा।

* जहाँ प्रसन्नता अर्थात् सन्तुष्टता है वहाँ सर्व की दुआएं हैं। यदि और कुछ भी नहीं आता है तो कोई बात नहीं। भाषण नहीं करना आता है, सर्व गुण धारण करने में मेहनत लगती है, सर्व शक्तियों को धारण करने में मेहनत लगती है तो उसको भी छोड़ दो। लेकिन प्रसन्नता को कभी नहीं छोड़ो।

* सदा श्रेष्ठ कर्म द्वारा पुण्य का खाता जमा करते रहो तो सर्व की दुआओं से प्रसन्नचित स्थिति का अनुभव करेंगे। पुण्य की शक्ति सन्तुष्टता वा बेफिक्र बादशाह की स्थिति का अनुभव कराती है। पुण्य आत्मायें परमात्म-प्यार के झूले में झूलती हैं, उन्हें न तो काल का फिक्र रहता, न कल का, क्योंकि जानते हैं - जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। इसलिए कोई भी सीन देखते अप्रसन्न हो नहीं सकते।

३- ईमानदारी

* ऑनेस्ट अर्थात् ईमानदार उसे कहा जाता है जो बाप द्वारा प्राप्त हुए खजानों को बाप के डायरेक्शन बिना किसी भी कार्य में नहीं लगाये। अगर मनमत और परमत प्रमाण समय को, वाणी को, कर्म को, श्वांस वा संकल्प को परमत वा संगदोष में व्यर्थ तरफ गंवाते, स्वचिंतन के बजाए परचिंतन करते हैं। स्वमान की बजाए किसी भी प्रकार के अभिमान में आ जाते हैं, श्रीमत के बदले मनमत के आधार पर चलते हैं तो उन्हें ऑनेस्ट नहीं कहेंगे। इसलिए ऑनेस्ट बन सभी खजानों को विश्व कल्याण की सेवा में लगाओ। अमानत में ख़यानत नहीं

करो।

* जैसे बाप जो है जैसा है बच्चों के आगे प्रत्यक्ष है, वैसे बच्चे जो हैं जैसे हैं बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करें–तब कहेंगे ऑनेस्ट। ऐसे नहीं कि बाप तो सब कुछ जानते हैं, नहीं। बाप के आगे स्वयं को प्रत्यक्ष करना – यही सहज चढ़ती कला का साधन है। सभी प्रकार के बोझ समाप्त करने की सरल युक्ति है।

* हर कदम में समर्थ स्थिति वा चढ़ती कला का अनुभव, हर संकल्प में बाप के साथ और सहयोग के हाथ का अनुभव हो–तब कहेंगे ऑनेस्ट। तो सदा ऐसे साथ और हाथ का अनुभव करो।

* सदा हर संकल्प, बोल वा कर्म द्वारा निमित्त और निर्माण बनना–यही ऑनेस्टी है। इसलिए कभी भी अपनेपन का भान अथवा अहम् भाव न आये।

* सदा कथनी, करनी समान हो–जो कहते हो वह करो–यह है स्वयं प्रति ऑनेस्टी। संकल्प-बोल और कर्म में अन्तर दिखाई न दे।

* सदा सर्व के प्रति शुभ भावना व सदा श्रेष्ठ कामना रखो–स्वयं का वा सर्व का भला हो–किसी भी आत्मा के प्रति अकल्याण की भावना उत्पन्न न हो–तब कहेंगे ऑनेस्ट।

* इस श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन किसी भी बातों के आधार पर न हो। हर एक बात के अनुभव के आधार पर, प्राप्ति के आधार पर फाउन्डेशन हो। ऐसे नहीं बात बदली और फाउन्डेशन बदल गया, निश्चय में संशय आ गया। क्यों, कैसे के क्वेश्चन में आ गये तो ऑनेस्ट नहीं कहेंगे। ऑनेस्ट अर्थात् कोई भी बात में कभी भी हलचल पैदा न हो।

* ऑनेस्टी ही तपस्वी की विशेषता है। ऑनेस्ट अर्थात् वफादार और ईमानदार। हर सेकण्ड, हर कदम और हर कर्म में एक्यूरेट श्रीमत पर चलना ही ऑनेस्टी है। श्रीमत सदा स्पष्ट स्मृति में रहे–कभी सोचना न पड़े कि यह श्रीमत है या नहीं, यह राइट है या रांग है।

* ऑनेस्ट आत्मा कभी किसी भी खज़ाने को वेस्ट नहीं करेगी। समय का खज़ाना, संकल्प का खज़ाना, ज्ञान धन का खज़ाना, सर्व शक्तियों, सर्व गुणों का खज़ाना वेस्ट नहीं करेगी। वह हर खज़ाने को कार्य में लगाकर बढ़ायेगी। किसी भी खज़ाने को अलबेलेपन के कारण वेस्ट करना–यह ऑनेस्टी नहीं है। ऑनेस्ट

का अर्थ है, हर खज़ाने को बढ़ाकर स्वयं की प्रगति करने वाला प्रयोगी।

* जो बच्चे ऑनेस्ट हैं उन पर बाप का, परिवार का प्यार और विश्वास स्वत: रहता है। इसलिए उन्हें फुल अधिकार मिल जाता है। वह बड़ों के, छोटों के अथवा समान वालों के विश्वासपात्र होते हैं। वे अविश्वास वालों को भी विश्वास में ले आते हैं।

* जो बच्चे सदा दिल और दिमाग से ऑनेस्ट अर्थात् सच्चे हैं, उन्हें कभी कोई बात सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। वे सिद्ध करने के बजाए सिद्धि स्वरूप होते हैं।

४- ज़िम्मेवारी

* आप विश्व परिवर्तन के निमित्त बने हुए बच्चे विश्व के आधार और उद्धार मूर्त हो। जो आधारमूर्त होते हैं उनके ऊपर ही सारी जिम्मेवारी रहती है। अभी आपके एक एक कदम के पीछे अनेकों के कदम उठने वाले हैं–इसलिए सदैव यह स्मृति रहे कि जिस रूप में जहाँ हम कदम उठायेंगे वैसे सर्व आत्मायें हमारे पीछे फालो करेंगी।

* विश्व परिवर्तन की ये बड़े से बड़ी जवाबदारी हल्केपन का अनुभव कराने वाली है क्योंकि जो उद्धारमूर्त बनते हैं उन्हें सर्व आत्माओं की आशीर्वाद मिलती है जिससे हल्कापन स्वत: आ जाता है। यह जिम्मेवारी और ही थकावट मिटाने वाली है। जिम्मेवारी अवस्था को बनाने में बहुत मदद करती है। जिम्मेवार आत्माओं को फ्री रहना भाता ही नहीं है।

* संगठित रूप में शक्तिशाली वायुमण्डल बनाने की जिम्मेवारी आप बच्चों की है। इसके लिए जैसे पहले एक दो को याद दिलाते थे कि शिवबाबा याद है? वैसे जब देखते हो कोई व्यक्त भाव में ज़्यादा है तो उनको बिना कहे अपना ऐसा अव्यक्ति शान्त रूप धारण करो जो वह इशारे से समझकर शान्त हो जाएं। इससे वातावरण अव्यक्त बन जायेगा।

* सारे विश्व के आत्माओं की नज़र हम श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर है – ऐसे अपने को निमित्त समझकर हर कदम उठाओ। जैसे अभी सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को ईश्वरीय स्नेह, श्रेष्ठ ज्ञान और श्रेष्ठ चरित्रों का साक्षात्कार होता है, ऐसे अव्यक्त स्थिति का भी स्पष्ट साक्षात्कार हो। जैसे साकार में अन्य

सब जिम्मेवारियाँ होते हुए भी आकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहे, ऐसे आप बच्चे भी साकार रूप में रहते फ़रिश्तेपन का अनुभव कराओ।

* कोई कितना भी अशान्त वा बेचैन घबराया हुआ आये लेकिन आपकी एक दृष्टि, स्मृति और वृत्ति की शक्ति उन्हें बिल्कुल शान्त कर दे। आपकी दृष्टि किरणों जैसा कार्य करे। जैसे मास्टर सूर्य के समान नालेज की लाईट देने का कर्तव्य कर रहे हो, ऐसे किरणों की माइट से हर एक आत्मा के पुराने संस्कार रूपी कीटाणु को नाश करना – यह आप बच्चों की जिम्मेवारी है।

* कैसे भी वातावरण को परिवर्तन करने के लिए पावरफुल स्थिति में स्थित रहना–यह आप बच्चों की जिम्मेवारी है। जैसे सूर्य का कर्त्तव्य है रोशनी देना और किचड़े को खत्म करना। ऐसे आपकी श्रेष्ठ चलन रूपी किरणों द्वारा अन्य आत्माओं को रोशनी भी मिले और किचड़ा भी खत्म हो।

* संगमयुग की यही विशेषता है जो हर एक श्रेष्ठ आत्मा को बहुत बड़ी जिम्मेवारी मिली हुई है क्योंकि इस समय आप ब्राह्मण बच्चे जो भी श्रेष्ठ कर्म करते हो वही विश्व के लिए सारे कल्प के अन्दर विधान बन जाता है, इतना आपके एक- एक कर्म का महत्व है। तो अपने को विधान के रचयिता समझकर हर कर्म करो इससे अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

* सम्पूर्ण बन समय को समीप लाने की जिम्मेवारी आप बच्चों पर है। सम्पूर्ण बनने के लिए परिवर्तन शक्ति को धारण करो। कोई अपकार करे आप एक सेकण्ड में अपकार को उपकार में परिवर्तित कर दो। कोई अपने संस्कार स्वभाव के रूप में आपके सामने परीक्षा के रूप में आये, आप एक सेकण्ड में अपने श्रेष्ठ संस्कार एक की स्मृति से ऐसी आत्मा के प्रति भी रहमदिल के संस्कार स्वभाव धारण कर लो। कोई गिराने की वृत्ति से, संगदोष में लाने की दृष्टि से आपके सामने आये तो उनको सदा श्रेष्ठ संग के आधार से संगदोष से निकाल श्रेष्ठ संग लगा दो–ऐसे परिवर्तन शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तक बनो। स्वयं को बदलकर औरों को बदलने का लक्ष्य रखना–यही हर एक बच्चे की ज़िम्मेवारी है।

* हर एक ब्राह्मण बच्चे को वृत्ति द्वारा श्रेष्ठ वायुमण्डल बनाने की जिम्मेवारी मिली हुई है। इसलिए हर एक को ऐसा समझना चाहिए कि मुझे

अपनी स्वयं की पावरफुल वृत्ति से जो भी अपवित्रता वा कमजोरी का वायुमण्डल है उसे मिटाना है। कभी पतित वायुमण्डल का वर्णन भी नहीं करना है। संकल्प, वृत्ति, स्मृति में कभी कोई पाप का संकल्प न आये–तब कहेंगे जिम्मेवार आत्मा।

* नर्क को बदलकर स्वर्ग बनाना, प्रकृति के तमोगुण को सतोगुण में परिवर्तन करना–यह ठेका(जिम्मेवारी) बाप के साथ-साथ आप बच्चों ने उठाया है। तो ५ तत्वों को बदलने वाले कभी प्रकृति के वशीभूत हो नहीं सकते।

५- गम्भीरता

* जितना बाह्यमुखता में आना सहज है उतना अन्तर्मुखी, गम्भीरमूर्त बनने का अभ्यास हो। इसके लिए लौकिक प्रवृत्ति तथा अलौकिक सेवा की प्रवृत्ति में रहते भी बीच-बीच में एकान्त अर्थात् एक के अन्त में जाकर गम्भीरमूर्त बन बाप के किसी भी एक शक्तिशाली गुण वा कर्तव्य के अन्त में मगन हो जाओ तो सर्व शक्तियों वा गुणों का खजाना जमा हो जायेगा।

* गम्भीरता का गुण बहुत आगे बढ़ाता है। यदि किसी ने कुछ अच्छा किया और बोल दिया तो आधा फल खत्म हो गया! जो गम्भीर होता है उसका पूरा जमा होता है। कई बच्चे करते बहुत हैं लेकिन करने के साथ-साथ उसका वर्णन बहुत करते हैं या करके आपस में खिटपिट कर देते हैं तो पूरा ही खत्म हो जाता है। इसलिए गम्भीरता के गुण की धारणा द्वारा जमा का खाता बढ़ाओ। गम्भीरता से अपनी मार्क्स इकट्ठी करो।

* यदि कोई बाह्यमुखता में आकर अच्छा वर्णन करता है तो अभिमान दिखाई देता है और यदि कोई किसी का बुरा वर्णन करता है तो उसका अपमान होता है। इसलिए अब हर एक गम्भीरता की देवी और गम्भीरता का देवता बनो। अभी गम्भीरता की बहुत-बहुत आवश्यकता है क्योंकि जितना प्रभाव गम्भीरता का पड़ता है उतना वाणी का नहीं पड़ता।

* वास्तविक गम्भीरता में रमणीकता समाई हुई है। ऐसा गम्भीर नहीं बनना है जो उसमें रमणीकता का नाम-निशान भी न हो। यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता सम्पन्न है। जैसे लोगों को भी समझाते हो कि हम आत्मा सिर्फ शान्त स्वरूप नहीं हैं, उस शान्त स्वरूप में आनन्द, प्रेम, ज्ञान सभी समाया हुआ है। ऐसे गम्भीरता में रमणीकता समाई हुई हो।

* जैसे ब्रह्मा बाप के चेहरे पर सदा गम्भीरता के चिन्ह भी दिखाई देते थे तो साथ-साथ मुस्कुराहट भी। गम्भीरता अर्थात् अन्तर्मुखता, अन्तर्मुखी की निशानी सदा सागर के तले में खोये हुए गम्भीरमूर्त। मननचिंतन करने वाला चेहरा और फिर रमणीक अर्थात् मुस्कुराता हुआ चेहरा। तो दोनों ही लक्षण आपकी सूरत से भी दिखाई दें।

* जितनी गम्भीरता उतना ही मिलनसार बनो। ऐसे भी गम्भीरमूर्त नहीं बनो जो बिल्कुल न्यारे दिखाई दो। मिलनसार अर्थात् सर्व के संस्कार और स्वभाव से मिलने वाला बनो। गम्भीरता का अर्थ यह नहीं कि मिलने से दूर रहें। कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती है। कोई बात अति में जाती है तो उसको तूफान कहा जाता है। एक गुण तूफान मिसल हो दूसरा मर्ज हो तो अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए बैलेन्स ठीक रखो। यदि बैलेन्स ठीक नहीं होगा तो कभी कहाँ, कभी कहाँ गिर जायेंगे वा हिलते-डुलते रहेंगे।

* किसी के बोल वा व्यवहार में ज्ञान-सम्पन्न व्यवहार वा योगी जीवन प्रमाण व्यवहार वा बोल नहीं होता है तो वो कहते हैं कि मेरा नेचरल बोल ही ऐसा है, बोलने का टोन ही ऐसा है वा कहेंगे–मेरी चाल-चलन ही आफिशियल वा गम्भीर है। जोश नहीं है लेकिन आफ़िशियल रहते हैं। आपको ऐसी गम्भीरता नहीं धारण करनी है लेकिन ज्ञान-योग सम्पन्न गम्भीरता का गुण हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा। जैसे वह नेचर नेचुरल अपना कार्य करती रहती है, उसमें मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ऐसे आपका हर कर्म ज्ञान और योग सम्पन्न नेचरल हो तो युक्तियुक्त वा श्रेष्ठ कर्म स्वत: होंगे।

* ऐसे गम्भीर मूर्त बनो जो कभी न तो किसी बात में कन्फ्यूज दिखाई दो और न मूड ही चेंज करो। सदा हर कर्म में फालो ब्रह्मा बाप। जैसे ब्रह्मा बाप सदा हर्षित और गम्भीर–दोनों के बैलेन्स की एकरस स्थिति में रहे। तो फालो फादर। इससे सदा अपने को विजयी अर्थात् मायाजीत अनुभव करते उड़ते रहेंगे। वेस्ट थॉट्स (व्यर्थ संकल्प) के रूप में भी माया नहीं आयेगी। अभी वेस्ट का नाम-निशान खत्म करो।

* जितना अति कर्म में आते हो, विस्तार में आते हो, रमणीकता में आते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो उतना ही न्यारे अर्थात् गम्भीरमूर्त बनने का

अभ्यास हो। जैसे सम्बन्ध व कर्म में आना सहज है वैसे न्यारा होना भी सहज हो। यह अभ्यास करने से ही गम्भीरता की देवी वा देवता दिखाई देंगे।

६- अहिंसा

* अहिंसक उन्हें कहा जाता है जो सम्पूर्ण पवित्र हैं अर्थात् जिन पर अपवित्रता वा काम महाशत्रु स्वप्न में भी वार नहीं करता। सदा आत्मा भाई-भाई की स्मृति सहज और स्वत: रहती है।

* अहिंसक आत्मा आत्मघात का महापाप भी नहीं करती। आत्मघात अर्थात् अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिरना वा अपना घात करना। ऊँचाई से नीचे गिरना ही घात है। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति-स्वरूप स्थिति से नीचे आना अर्थात् विस्मृत होना—यह भी पाप के खाते में जमा होता है। इसलिए कहा जाता है—आत्मघाती महापापी। तो यह हिंसा भी आप अहिंसक आत्मायें नहीं कर सकती।

* अहिंसक आत्मायें कभी भी किसी प्रकार का भी खून नहीं करती। खून करना अर्थात् हिंसा करना। जो परमात्मा पिता द्वारा दिव्य-बुद्धि, दिव्य-विवेक वा ईश्वरीय-विवेक मिला है उसे यदि माया-वश, परमत-वश, कुसंग-वश या किसी परिस्थिति-वश दबाते हो तो यह भी ईश्वरीय विवेक का खून करते हो या दिव्य बुद्धि का खून करते हो। तो इसमें भी अहिंसक बनो अर्थात् अपने ईश्वरीय-विवेक को मत दबाओ।

* झूठ बोलना, चोरी करना, ठगी करना वा धोखा देना—इसको भी हिंसा व महापाप कहा जाता है। यदि—

(क) शूद्रपन के संस्कार, स्वभाव व बोल अपनाना, किसी के प्रति व्यर्थ भावना रखना गोया शुद्रों की वस्तु चोरी करना–यह भी हिंसा है।

(ख) स्वयं को ट्रस्टी कहने के बाद फिर मोह वश होकर चलना, मैं पन लाना या मेरा समझना, कहना तेरा और करना मेरा – यह झूठ बोलना भी हिंसा है।

(ग) एक बाप से वायदा करके फिर प्रैक्टिकल में यदि अन्य आत्माओं से सम्बन्ध व सम्पर्क रखते हो, परमात्मा पिता की स्मृति के बजाए अन्य की स्मृति भी साथ-साथ रखते हो तो यह भी झूठ बोलना अर्थात् हिंसा करना है।

(घ) ऐसे ही धोखा देना भी हिंसा है। जानते हुए, मानते हुए फिर भी स्वयं को श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित करना—यह स्वयं को धोखा देना है। अपनी कमजोरी को छिपाकर बाहर से अपना नाम बाला करना या अपने को अच्छा पुरुषार्थी सिद्ध करना—यह भी धोखा देना है। ग़लती करके छिपाना भी धोखा देना वा ठगी करना है। तो अहिंसक अर्थात् पुण्य आत्मायें यह पाप भी कभी नहीं कर सकती।

* इस महान् जीवन में सबसे बड़े से बड़ा पाप व हिंसा है—किसी आत्मा के प्रति विकारी भावना रखना। महान् आत्मायें अर्थात् दिव्य बुद्धि वा दिव्य नेत्र के वरदान वाले। दिव्य बुद्धि वा दिव्य नेत्र का शुद्ध आहार और व्यवहार शुद्ध संकल्प है। अगर अपने शुद्ध संकल्प रूपी आहार अर्थात् शुद्ध भोजन को छोड़ अशुद्ध आहार स्वीकार करते हो अर्थात् संकल्प के वशीभूत हो जाते हो तो ऐसे मलेच्छ भोजन वाले मलेच्छ आत्मा अर्थात् महापापी, आत्मघाती कहलायेंगे। इस महापाप के संकल्प से बचने वाले ही सच्चे-सच्चे अहिंसक हैं।

* अहिंसक आत्मा वह है जिसकी चलन वा व्यवहार से सर्व आत्माओं को सुख का दान मिलता रहे। सबको सुख देते और सुख लेते रहो। सदा पुण्य का कार्य करो। पुण्य अर्थात् किसको ऐसा सुख देना जो उस आत्मा के दिल से आशीर्वाद निकले।

* आप डबल अहिंसक आत्मायें अपने मुख से कभी कोई ऐसा शब्द नहीं बोल सकती जिससे किसी की स्थिति डगमग हो जाए। यदि अपने शब्दों से किसी की ऊंची स्थिति को डगमग कर देते हो तो यह भी हिंसा है। जैसे तीर द्वारा किसी को घायल करना हिंसा है। इसी प्रकार शब्द द्वारा किसी की ईश्वरीय स्थिति को डगमग अर्थात् घायल करना भी हिंसा है।

* अपने असली सतोप्रधान संस्कारों को धारण करने से ही डबल अहिंसक बनेंगे। आत्मा के जो असली सतोप्रधान संस्कार हैं वा जो अपने ओरीज्नल ईश्वरीय संस्कार हैं उनको दबाकर यदि दूसरे संस्कारों को प्रैक्टिकल में लाते हो तो यह भी हिंसा है। जैसे कोई किसी का गला दबाता है तो इसे हिंसा माना जाता है। ऐसे अपने ओरीज्नल अथवा सतोप्रधान स्थिति के संस्कारों को दबाना—यह भी हिंसा है। महान् आत्मायें इसमें भी अहिंसक होती हैं।

७- सहयोग

* वरदाता बाप द्वारा सहजयोगी भव का वरदान सभी बच्चों को प्राप्त है। लेकिन इस वरदान को सदा कायम रखने की विधि है–सर्व के सहयोगी बनना क्योंकि सहयोगी बनना माना सहजयोगी बनना। अमृतवेले से लेकर सारे दिन की दिनचर्या का मूल लक्ष्य यही हो कि सहयोग देना है, सहयोगी बनना है।

* अमृतवेले बाप से मिलन मनाकर बाप समान मास्टर बीजरूप बन, मास्टर विश्व कल्याणकारी बन सर्व आत्माओं को अपनी प्राप्त हुई शक्तियों के द्वारा आत्माओं की वृत्ति और वायुमण्डल परिवर्तन करने के लिए सहयोगी बनो। बीज द्वारा सारे वृक्ष को रूहानी जल देने के सहयोगी बनो–जिससे सर्व आत्माओं रूपी पत्तों को प्राप्ति के पानी मिलने का अनुभव हो।

* अलौकिक सम्बन्ध में रहते, सेवा में रहते या लौकिक व्यवहार में आते –हर समय यह आक्यूपेशन याद रहे कि मैं स्व प्रति वा साथियों के प्रति शुभ भावना और कामना से रूहानी वायुमण्डल बनाने का सहयोग देने वाली आत्मा हूँ। कोई भी सेकण्ड सहयोगी बनने के सिवाए न हो। चाहे मन्सा से सहयोगी बनो, चाहे वाचा से, चाहे सम्पर्क सम्बन्ध द्वारा सहयोगी बनो, चाहे स्थूल कर्म द्वारा सहयोगी बनो–लेकिन सहयोगी जरूर बनना है।

* स्व परिवर्तन के लिए स्वयं के सहयोगी बनो अर्थात् साक्षी बन स्व के प्रति भी सदा शुभचिंतन की वृत्ति हो। जैसे सर्दी, गर्मी, प्रकृति वायुमण्डल पर अपना प्रभाव डाल देती है ऐसे प्रकृति जीत सदा सहयोगी, सहजयोगी आत्मायें अपने रूहानी वायुमण्डल का प्रभाव अनुभव कराओ। सदा स्व प्रति और सर्व के प्रति सहयोग की शुभ भावना रखते हुए सहयोगी आत्मा बनो। वह ऐसा है वा ऐसा क्यों करता है–यह नहीं सोचो। कैसा भी वायुमण्डल हो, व्यक्ति हो–मुझे सहयोग देना है।

* तन से, मन से, धन से, मन्सा से वाणी से वा कर्म से सहयोगी बनने का लक्ष्य हो तो सहजयोगी बन ही जायेंगे। अगर मन से सहयोगी नहीं बन सकते तो तन और धन से सहयोगी बनो। मन और वाणी से नहीं तो कर्म से सहयोगी बनो। सम्बन्ध जुड़वाने वा सम्पर्क रखाने के सहयोगी बनो।

* सिर्फ सन्देश देने के सहयोगी नहीं बनो अपने परिवर्तन से सहयोगी बनो।

अपने सर्व प्राप्तियों के अनुभव सुनाने के सहयोगी बनो। किसी को गुणों के दान द्वारा सहयोगी बनो। किसी को उमंग-उत्साह बढ़ाने के सहयोगी बनो। जिसमें भी सहयोगी बन सको उसमें सहयोगी बनो। सब नहीं कर सकते हो तो एक करो। जो भी विशेषता हो उसी विशेषता को कार्य में लगाओ अर्थात् सहयोगी बनो तो सहजयोगी बन जायेंगे।

* आप बच्चे बाप के सहयोगी तो हो ही लेकिन बाप विश्व सहयोगी है। तो बच्चों के प्रति भी हर आत्मा के अन्दर से यह अनुभव के बोल निकलें कि यह भी बाप समान सर्व के सहयोगी हैं। पर्सनल एक दो के सहयोगी नहीं बनना है, वह स्वार्थ के सहयोगी हद के सहयोगी होते हैं। सच्चे सहयोगी, बेहद के सहयोगी होंगे। उन्हें कहा जाता है विश्व कल्याणकारी ।

* आपके सम्पर्क में जो भी आये वह अनुभव करे कि कुछ लेकर जा रहे हैं, सिर्फ सुनके जा रहे हैं नहीं। चाहे ज्ञान से, चाहे स्नेह के धन से वा याद बल के धन से, शक्तियों के धन से, सहयोग के धन से हाथ अर्थात् बुद्धि भरकर जा रहे हैं–यही है सच्चा सहयोग वा सच्ची सेवा।

* आप द्वारा सर्व आत्माओं को यह महसूस हो कि यह हमारे सहयोगी साथी हैं। जब किसी आत्मा की कमजोर स्थिति वा परिस्थिति है तो ऐसे समय पर सहयोग दो जिससे उन्हें महसूस हो कि यह हमें आगे बढ़ने का साधन देने वाले हैं। आप आत्मा द्वारा सर्व को सहयोग देने की विशेषता का अनुभव हो। बाप द्वारा प्राप्त गुणों और शक्तियों द्वारा अज्ञानी आत्माओं को दान दो और ब्राह्मण आत्माओं को सहयोग या प्राप्ति का अनुभव कराओ। निर्बल को शक्ति-वान बना दो–यही है श्रेष्ठ दान वा सहयोग।

८- सम्मान

* सर्व को रिगार्ड (सम्मान) देना–यही चढ़ती कला का साधन है। जो दूसरों को रिगार्ड देते हैं वह वर्तमान समय और जन्म जन्मान्तर भी अन्य आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बन जाते हैं। जैसे बापदादा ने आदिकाल से बच्चों को रिगार्ड दिया। बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुए। पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज हैं। बच्चे ही डबल पूज्य बनते, बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं। तो जैसे बाप ने सभी

बच्चों को सम्मान दिया ऐसे ही फालो फादर करो।

* बाप का रिगार्ड रखना अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। बाप ने कहा और बच्चों ने किया। कदम पर कदम रख चलना। मनमत वा परमत बुद्धि द्वारा ऐसे समाप्त हो जाए जैसे कोई चीज़ होती ही नहीं। मनमत वा परमत को संकल्प वा स्वप्न में भी टच न करें। सुनें तो भी बाप से, बोलें तो भी बाप का, देखें तो भी बाप को, चलें तो भी बाप के साथ, सोचें तो भी बाप की बातें, करें तो भी बाप के सुनाये हुए श्रेष्ठ कर्म..इसे कहा जाता है बाप का रिगार्ड। ऐसे ही स्वयं का और नालेजफुल बाप द्वारा मिली हुई नालेज का रिगार्ड रखो तो सर्व का रिगार्ड अर्थात् सम्मान स्वत: प्राप्त होता रहेगा।

* चाहे कोई छोटा हो या बड़ा हो–हर एक की राय को सम्मान दो। क्योंकि वे यथायोग्य शक्ति प्रमाण अपनी राय रखते हैं। यदि आप उनकी राय को रिगार्ड नहीं देते, कट करते तो यह भी रॉयल रूप का अभिमान हुआ। इससे दूसरों को अपमान महसूस होता है। इसलिए किसी की भी बात को कट कर अपनी बात मत दो।

* जिस समय जो कोई भी राय देते हैं तो वे यथार्थ समझकर देते हैं, उस समय उनका थोड़ा भी अपमान उन्हें ज्यादा अनुभव होता है। एक शब्द भी तीर समान लगता है इसलिए हर एक की राय को सम्मान दो। यह कैसे होगा, यह हो ही नहीं सकता..इन शब्दों के बजाए हाँ बहुत अच्छा, इस पर विचार करेंगे..ऐसे कहने से छोटों को भी सम्मान वा स्नेह देकर अपना सहयोगी बना लो। यह सम्मान देना ही लेना है। ऐसे सम्मान देने वाले ही विश्व के मालिक अर्थात सर्व से सम्मान लेने के अधिकारी बनते हैं।

* किसी की बुराई वा कमज़ोरी को दिल पर न रख क्षमा करो। सदा हर आत्मा के कल्याण प्रति उनके वास्तविक स्वरूप और गुण को सामने रखते हुए उनकी महिमा करो अर्थात् उस आत्मा को महानता की स्मृति दिलाओ। किसके बच्चे हो, किस कुल के हो...जिससे वह आत्मा अपने गुणों को सुनते हुए स्मृति और समर्थी में आये और कमजोरी को वा बुराई को मिटाने की हिम्मत में आये। यही है सम्मान देना।

* आप बच्चों के मुख से सदैव हर आत्मा के प्रति शुभ बोल निकलने

चाहिए, दिलशिकस्त बनाने वाले नहीं, चाहे कोई कितना भी कमजोर हो उसको इशारा भी देना हो, शिक्षा भी देनी हो तो पहले समर्थ बनाकर फिर शिक्षा दो। पहले उनकी विशेषता की महिमा करो फिर उसे आगे के लिए और भी श्रेष्ठ आत्मा बनने का साधन, कमजोरी पर अटेन्शन रीति से दिलाओ। पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो सहज ही बीज का फल निकलेगा।

* चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे अज्ञानी आत्मा हो लेकिन हर आत्मा के प्रति श्रेष्ठ भावना अर्थात् ऊंचे उठाने की वा आगे बढ़ाने की भावना हो, विश्व कल्याण की कामना हो–इसी धारणा से हर आत्मा से सम्पर्क में आना–यह है रिगार्ड रखना।

* सदा आत्मा के अनादि वा आदि गुणों वा विशेषताओं को देखो–अव-गुण देखते हुए न देखो न वर्णन करो। बल्कि अपनी शुभ वृत्ति से शुभचिन्तन स्थिति से अन्य के अवगुण को भी परिवर्तन कर दो–इसे ही कहा जाता है आत्मा का आत्मा के प्रति रिगार्ड।

* सदा पहले आप का मन्त्र संकल्प और कर्म में लाना, किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को अपनी कमजोरी वा अवगुण समझ वर्णन करने के बजाए वा फैलाने के बजाए समाना और परिवर्तन करना यह है रिगार्ड।

* किसी की भी कमजोरी की बड़ी बात को छोटा करना, पहाड़ को राई बनाना इसको कहा जाता है रिगार्ड। दिलशिकस्त को शक्तिवान बनाना, संग के रंग में नहीं आना–सदा उमंग उल्लास में लाना इसे कहा जाता है रिगार्ड। ऐसा रिगार्ड दो तो विश्व की आत्माओं द्वारा रिगार्ड लेने के पात्र बन जायेंगे।

९-त्याग

* त्याग के आधार पर भाग्य बनता है। त्याग की परिभाषा बड़ी गुह्य है। कहने में तो सभी एक बात कहते कि तन-मन-धन, सम्बन्ध सब का त्याग कर लिया। लेकिन त्याग का अर्थ है किसी भी चीज़ को वा बात को छोड़ दिया, अपने-पन से किनारा कर लिया, अपना अधिकार समाप्त हुआ। जिसके प्रति त्याग किया वह वस्तु उसकी हो गई। उसका फिर संकल्प भी नहीं कर सकते - क्योंकि त्याग की हुई बात, संकल्प द्वारा प्रतिज्ञा की हुई बात फिर से वापिस नहीं ले

सकते हो।

* इस पुराने घर अर्थात् पुराने शरीर, पुराने देह के भान से विस्मृति अर्थात किनारा करना ही त्याग का पहला-पहला कदम है। तो संकल्प द्वारा भी फिर से इस पुराने घर के भान में नहीं आना। जैसे घर में घर की सामग्री होती है, ऐसे इस देह रूपी घर में भिन्न-भिन्न कर्मेन्द्रियाँ ही सामग्री हैं। तो घर का त्याग अर्थात् घर की कोई भी चीज़ में ममता न हो, उसको कहेंगे त्याग। यदि कोई भी कर्मेन्द्रिय अपने तरफ आकर्षित करती है तो उसको सम्पूर्ण त्याग नहीं कहेंगे। यह मेरी देह नहीं लेकिन सेवा अर्थ अमानत है। जैसे मेहमान बन देह में रह रहे हैं। थोड़े समय के लिए बापदादा ने कार्य के लिए आपको यह तन दिया है। तो मेरे-पन का त्याग कर मेहमान समझ इसे महान कार्य में लगाओ।

* त्याग का दूसरा कदम है – देह के सर्व सम्बन्ध का त्याग। जब देह का भान छूट जाता है तो आत्मा, देही वा मालिक बन जाते। दास पन समाप्त हो जाता है इसलिए मन और तन से सदा हर्षित रहते हैं।

* त्याग का तीसरा कदम है –देह के साथ व्यक्तियों के सम्बन्ध का त्याग। इसमें लौकिक तथा अलौकिक सम्बन्ध आ जाता है। इन दोनों सम्बन्ध में महात्यागी अर्थात् नष्टोमोहा। नष्टोमोहा की निशानी - दोनों सम्बन्धों में न किसी में घृणा होगी, न किसी में लगाव वा झुकाव होगा।

* कर्मातीत बनने वाली आत्मायें, इस कर्म के बन्धन का भी त्याग कर देती हैं। ब्राह्मणों के लिए इस सम्बन्ध का त्याग ही त्याग है।

* ब्राह्मण अर्थात् सदा सुकर्म व श्रेष्ठ कर्म करने वाले। वह कभी साधारण कर्म भी नहीं कर सकते। विकर्म की तो बात ही नहीं। तो कर्मेन्द्रियों का जो कर्म के साथ सम्बन्ध है - उस कर्म के हिसाब से विकर्म का त्याग। विकर्म के त्याग के बिना सुकर्मी वा विकर्माजीत बन नही सकते। तो व्यर्थ और साधारण बातों को भी अण्डरलाइन कर इसमें जो अलवेलापन आता है उसका भी त्याग करो।

* सम्पूर्ण त्यागी बनने में दो प्रकार के विघ्न आगे बढ़ने नहीं देते। वह एक तो विघ्नों का सामना करने की शक्ति कम है। दूसरा - अलवेलेपन का स्वरूप आराम पसन्द बन चलते हैं। पढ़ाई, याद, धारणा और सेवा सब सब्जेक्ट में कर रहे हैं, चल रहे हैं, पढ़ रहे हैं लेकिन आराम से! स्नेही हैं लेकिन शक्ति स्वरूप

नहीं। मास्टर सर्वशक्तिमान स्वरूप में स्थित नहीं हो सकते हैं। इसलिए महात्यागी नहीं बन सकते हैं।

* महात्यागी - सदा सम्बन्ध, संकल्प और संस्कार सभी के परिवर्तन करने के हिम्मत और उल्लास में रहते हैं। पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्ध से सदा न्यारे रहते हैं। वह अनुभव करते कि यह पुरानी दुनिया वा सम्बन्धी मरे ही पड़े हैं। वे सदा स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी, शक्ति स्वरूप की स्थिति में स्थित रहते हैं। महात्यागी के फलस्वरूप जो त्याग का भाग्य है - महाज्ञानी, महायोगी, श्रेष्ठ सेवाधारी बन जाते हैं! इस भाग्य के अधिकार को कहाँ-कहाँ उल्टे नशे के रूप में यूज़ कर लेते हैं। पास्ट जीवन का सम्पूर्ण त्याग है लेकिन त्याग का भी त्याग नहीं है। लोहे की जंजीरें तो तोड़ दीं, आइरन एज्ड से गोल्डन एज्ड तो बन गये, लेकिन कहाँ-कहाँ परिवर्तन सुनहरी जीवन के सोने की जंजीर में बंध जाता है। वह सोने की जंजीरें हैं – 'मैं' और 'मेरा'। मैं अच्छा ज्ञानी हूँ, मैं ज्ञानी तू आत्मा, योगी तू आत्मा हूँ। इस सुनहरी जंजीर के बंधन से भी मुक्त बनो।

* जैसा समय, जैसी समस्यायें, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इजी रहना ही सेवाधारियों का त्याग है। जैसी परिस्थिति हो अर्थात् कहाँ अपने नाम का त्याग करना पड़े, कहाँ संस्कारों का, कहाँ व्यर्थ संकल्पों का, कहाँ स्थूल अल्पकाल के साधनों का... तो उस परिस्थिति और समय अनुसार अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लें, कैसा भी त्याग उसके लिए करना पड़े तो कर लें अपने को मोल्ड कर लें इसको कहा जाता है त्याग मूर्त।

* त्याग और तपस्या ही सेवा की सफलता का आधार है। तो ऐसे त्यागी जो त्याग का भी अभिमान न आये कि मैंने त्याग किया। अगर यह संकल्प भी आता तो यह भी त्याग नहीं हुआ। सेवाधारी वह जो अपने मान शान का भी त्याग कर दे। झुकना अर्थात् सफलता का फलदायक बनना।

* सर्वन्श त्यागी आत्मा किसी भी विकार के अंश के भी वशीभूत हो कोई कर्म नहीं करेगी। सर्वन्श त्यागी की ऐसी भाषा नहीं होती, जिसमें किसी भी विकार का अंश मात्र भी समाया हुआ हो। तो मंसा-वाचा कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा विकारों के अंश मात्र से भी परे – इसको कहा जाता है सर्वन्श त्यागी।

* सर्वन्श त्यागी सदा विश्व-कल्याणकारी की विशेषता वाले होंगे। सदा दाता का बच्चा दाता बन सर्व को देने की भासना से भरपूर होंगे। सर्वन्श त्यागी स्वयं मास्टर दाता बन परिस्थितियों को भी परितर्वन करने का, कमजोर को शक्तिशाली बनाने का, वायुमण्डल वा वृत्ति को अपनी शक्तियों द्वारा परिवर्तन करने का, सदा स्वयं को कल्याण अर्थ ज़िम्मेवार आत्मा समझ हर बात में सहयोग वा शक्ति के महादान वा वरदान देने का संकल्प करेंगे।

* सर्वन्श त्यागी सदा अपने को हर श्रेष्ठ कार्य के – सेवा की सफलता के कार्य में, ब्राह्मण आत्माओं की उन्नति के कार्य में, कमजोरी वा व्यर्थ वातावरण को बदलने के कार्य में ज़िम्मेवार आत्मा समझेंगे।

* सर्वन्श त्यागी सदा एकरस, एक मत, एक ही परिवार का एक ही कार्य है – सदा ऐसे एक ही स्मृति में नम्बर एक आत्मा होंगे।

* सर्वन्श त्यागी आत्मा सदा सर्व प्रत्यक्ष फलों से सम्पन्न अविनाशी वृक्ष के समान होगी। सदा फलस्वरूप होगी। इसलिए हद के कर्म का, हद के फल पाने की अल्पकाल इच्छा से इच्छा मात्रम् अविद्या होंगे। सदा प्रत्यक्ष फल खाने वाले सदा मनदुरुस्त वाले होंगे। सदा स्वस्थ होंगे। कोई भी मन की बीमारी नहीं होगी। सदा मनमनाभव होंगे। सर्वन्श त्यागी सदा एकरस, एक मत, एक ही परिवार का एक ही कार्य है – सदा ऐसे एक ही स्मृति में नम्बर एक आत्मा होंगे।

१०- सादगी (सिम्प्लिसिटी)

* जो बच्चे साकार सृष्टि में रहते हुए सिम्पल (सादे) रहते हैं वे सभी के आगे सैम्पल बन जाते हैं क्योंकि साधारणता ही महानता अर्थात् रॉयल्टी का अनुभव कराती है। जो मन्सा संकल्पों में, संबंध में, व्यवहार और रहन-सहन में सिम्पुल हैं वह सहज ही आकर्षण मूर्त बन जाते हैं। जो यहाँ जितना सादगी पसन्द करते हैं अर्थात् सिम्पल रहते हैं, उन्हें भविष्य में रॉयल फैमली में आने का अधिकार प्राप्त हो जाता है।

* सिम्पुल अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र। निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। अक्रोधी, निर्लोभी बनना अर्थात सिम्पल बनना। यह **सिम्पलिसिटी** प्योरिटी का साधन है। जो जितना सिम्पल है वही ब्युटीफुल अर्थात् रायॅल है। ऐसा सिम्पल

बनने के लिए माया की नॉलेज से इनोसेंट और ज्ञान में सेंट बनो।

* सर्व का स्नेह और सहयोग प्राप्त करने के लिए सादगी को धारण करो। सिम्पल रहने से कभी भी लौकिक परिवार वा दैवी परिवार में प्राब्लम का रूप नहीं बनेंगे। जो सिम्पल नहीं रहते वह औरों के लिए वा अपने लिए कोई न कोई प्राब्लम बन जाते हैं। यदि कोई स्वयं की मन्सा में उलझन अर्थात् प्राब्लम है, तो उसको सिम्पल नहीं कहेंगे। बेहद की स्टेज पर बेहद की एक्ट करते हुए सिम्पल रहो। यह सिम्पुल एक्टिविटी ही महानता की निशानी है। सिम्पल सिर्फ ड्रेस में नहीं लेकिन सभी बातों में सिम्पल रहना अर्थात सैम्पल बनना।

* जो सिम्पल रहते हैं उनका मुख्य स्लोगन रहता–कम खर्च बालानशीन। उन्हें हर समय यह स्मृति में रहता है कि खर्चा कम हो और कार्य अच्छे से अच्छा हो। अभी सिम्पल बन संकल्प, श्वाँस समय और सम्पत्ति की इकॉनामी करते हुए हर कार्य श्रेष्ठ से श्रेष्ठ करना है। सिर्फ खाने-पीने, शौख-मौज में अर्थात सुहेजों में समय नहीं गॅवाना है।

* सिम्पल रहने से निर्मानता का गुण स्वत: आ जाता है। निर्मानता ही आगे बढ़ने का सहज साधन है, निर्मान बनना ही स्वमान है और यही सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है क्योंकि सिम्पल रहने वालों में मैं पन का भान नहीं रहता। उन्हें करावनहार बाप सदा याद रहता है। उनकी बुद्धि में सदा यही रहता कि जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देखकर सब करेंगे। इसलिए कैसा भी कर्म करते वे सदा योगयुक्त और युक्तियुक्त रहते हैं।

* अपनी जीवन को सदा सन्तुष्ट और खुशनुम: बनाने के लिए सिम्पल रहो। खाना-पीना-पहनना, सब सिम्पल (साधारण) हो। न बहुत ऊँचा, न बहुत नींचा। तो आपका हर कदम सेवा के निमित्त बन जायेगा। वाणी द्वारा तो सेवा करते हो लेकिन जो भी सम्पर्क में आये वह आपके सिम्पल जीवन और श्रेष्ठ विचारों को देखकर वाह-वाह के गीत गाये। यही सर्व के स्नेह की दुआयें प्राप्त करने का आधार है।

* सादगी सहज ही निरहंकारी बना देती है। सादगी का बीज महानता का फल प्राप्त कराता है। आत्मिक भाव, आत्मिक दृष्टि वृत्ति में रहने से अहम् भाव समाप्त हो जाता है। फिर कोई भी पुराना संस्कार अपनी तरफ आकर्षित नहीं

करता। सिम्पल जीवन उनकी मानी जाती है जिनमें सूक्ष्म में भी देह अभिमान, रोब वा अंहकार का नशा नहीं है।

* पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया के फैशन से, सम्बन्धों से पीठ कर लेना अर्थात् सिम्पल बनना। ऐसे सिम्पल रहने वालों को कोई भी आकर्षण अपनी तरफ आकर्षित नहीं कर सकती।

* जीवन साधारण हो लेकिन कोई भी कर्म साधारण न हो, हर कर्म कमाल का हो। **ऐसे नहीं जहाँ कोई खींचे वहाँ खिंच जाओ।** जिनका हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म कमाल का होता है उनसे फरिश्तेपन की झलक दूर से ही अनुभव होती है। आजकल सभी प्रत्यक्ष प्रमाण चाहते हैं। तो आपकी यह प्रत्यक्ष जीवन ही सबसे श्रेष्ठ प्रमाण है। यही सेवा का सहज साधन है।

* अब स्वयं की सादगी द्वारा बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल बनाओ। हर आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हुए न्यारे और प्यारे रहो, किसी के साथ विशेष लगाव न हो।

११- स्वतन्त्रता

* स्वतन्त्रता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। जो सदा स्वतन्त्र है वही हर कार्य में वा हर अभ्यास में सफल हो सकता है। आजकल के वातावरण प्रमाण हर एक स्वतन्त्रता चाहते हैं। सबसे पहली स्वतन्त्रता है पुरानी देह के अन्दर के सम्बन्ध से। इस एक स्वतन्त्रता से आत्मा और सबसे सहज ही स्वतन्त्र हो जाती है। देह की परतन्त्रता ही उड़ता पंछी आत्मा को पिंजरे का पंक्षी बना देती है, जो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने नहीं देती इसलिए स्वतन्त्र आत्मा बनो।

* अनेक जन्मों के अनेक प्रकार के बन्धनों को समाप्त कर स्वतन्त्र बनने का सहज साधन है–एक बाप से सर्व सम्बन्ध जोड़ना। जो अपने सर्व सम्बन्ध एक बाप से जोड़ लेते हैं वो सर्व बन्धनों से सहज ही मुक्त हो जाते हैं। देह के बंधन का कारण है देही का संबंध बाप से नहीं जोड़ा है। सेकण्ड में देह से न्यारे बनने का अभ्यास करो तो सेकण्ड में देह के बन्धन से मुक्त हो जायेंगे।

* जो आत्मा किसी न किसी प्रकार के बंधन में बंधी हुई है वह सदा परेशान रहती है, बिना लक्ष्य, बिना कोई रस, नीरस स्थिति का अनुभव करती है। उन्हें कोई किनारा या सहारा स्पष्ट दिखाई नहीं देता है। वो स्वयं को मंजिल

से सदा दूर बीच भंवर में अनुभव करने लगती है। न खुशी का अनुभव होता, न गमी का। लेकिन जो सदा माया से मुक्त अर्थात् स्वतन्त्र है वह खुशनुमः है। इसलिए अपने सूक्ष्म-स्थूल सब बंधनों को चेक कर सम्पूर्ण स्वतन्त्र बनो।

* कोई भी कर्म का बन्धन तब बनता है जब साक्षी दृष्टा होकर कर्म नहीं करते। कर्म करते न्यारी और प्यारी स्थिति में रहो। हर कर्म त्रिकालदर्शी बन करके करो तो कभी कोई कर्म विकर्म नहीं बन सकता, सदा सुकर्म होगा। कर्म के सम्बन्ध में आयेंगे–बन्धन में नहीं।

* तन को भल कोई कितने भी तालों में रखे लेकिन मन को ताला नहीं लगा सकता। जो मायाजीत है वह मन से स्वतन्त्र है। ऐसी स्वतन्त्र आत्मायें अपनी वृत्ति द्वारा शुद्ध संकल्पों द्वारा विश्व के वायुमण्डल को बदलने की सेवा कर सकती हैं। इसलिए मन से सदा स्वतन्त्र रहकर मन्सा द्वारा शान्ति के वायब्रेशन फैलाते रहो।

* जो देह और देह के सम्बन्धों में रहते हुए न्यारे अर्थात आत्मिक स्वरूप में रहने का विशेष अटेन्शन रखते हैं, वही स्वतन्त्र हैं। ऐसी स्वतन्त्र आत्मा बाप के हर डायरेक्शन को सेकण्ड में पालन कर सकती है। उनमें जरा भी मोह की रग नहीं होती। उन्हें देह का, संबंध का, वैभवों का बंधन खींच नहीं सकता। जहाँ बंधन है वहाँ आकर्षण है। जो स्वतन्त्र है वह बाप समान कर्मातीत स्थिति के समीप है।

* जो बच्चे माया के बंधनों से निर्बन्धन अर्थात् स्वतन्त्र हैं वही योगयुक्त रह सकते हैं। लौकिक जिम्मेवारियां निभाते हुए मन का बंधन न हो। डायरेक्शन प्रमाण खेल की रीति से हँसकर खेलो तो कभी छोटी-छोटी बातों में थकेंगे नहीं। जो बुद्धियोग से एक बाप को अपना सच्चा कम्पैनियन बना लेते हैं वह सदा स्वतन्त्र हो जाते हैं, जिम्मेवारियों का बंधन उन्हें परतन्त्र बना नहीं सकता। मन के बंधन से स्वतंत्र होने का साधन है सदा मनमना भव रहना। सदा एक बाप दूसरा न कोई। यह पहला वायदा निभाना अर्थात् मन के बंधनों से मुक्त होना।

* विश्व-कल्याण की सेवा के निमित्त बनने के लिए आत्मा सर्व बन्धनों से मुक्त, स्वतन्त्र होनी चाहिए। जो स्वतन्त्र है वह जब चाहे, जहाँ चाहे, जो शक्ति चाहे उससे कार्य कर सकती है। ऐसी निबर्न्धन, स्वतन्त्र आत्मा अनेकों को

जीवनमुक्त बनाने की सेवा कर सकती है – यही है विश्व सेवाधारी बनने की सहज विधि।

* सम्पूर्ण स्वतन्त्र अर्थात् जब चाहो इस देह का आधार लो, जब चाहो इस देह के भान से ऐसे न्यारे हो जाओ जो जरा भी यह देह अपनी तरफ खींच न सके। ऐसे अपनी देह के भान अर्थात् लगाव से स्वतन्त्र बनो। अपने कोई भी पुराने स्वभाव से, संस्कार से, कमजोरियों से स्वतन्त्र बनो। सर्व लौकिक सम्पर्क, अलौकिक परिवार के सम्पर्क के बन्धनों से स्वतन्त्र बनो, कोई भी छोटी सी कर्मेन्द्रिय अपने बंधन में बांध न ले तब कहेंगे सम्पूर्ण स्वतन्त्र आत्मा, ऐसी स्वतन्त्र आत्मा ही बेहद विश्व कल्याण की सेवा के निमित्त बन सकती है।

* विश्व की सर्व आत्माओं को देखते हुए सिर्फ एक कल्याण की भावना से देखना, सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं, प्रकृति के पांच तत्वों को देखते उनके वश होने के बजाए उसे सतोप्रधान बनाने के कार्य में स्थित होना–यही है स्वतन्त्र आत्माओं का कर्तव्य। उनका पहला लक्षण वा प्रतिज्ञा है – एक बाप दूसरा न कोई।

भिन्न-भिन्न त्योहारों का आध्यात्मिक रहस्य

१- शिव जयन्ती

* शिवजयन्ती महाज्योति बाप और ज्योतिबिन्दु बच्चों के मिलन का यादगार पर्व है। इस दिन भक्त शिव पर जल अथवा दूध चढ़ाते हैं और जल चढ़ाने समय बीच में ब्राह्मण होते हैं। यह प्रतिज्ञा की निशानी है। तो तुम्हारे पास जब भी कोई आते हैं तो उन्होंसे पहले प्रतिज्ञा का जल लो अर्थात् प्रतिज्ञा कराओ कि हम आज से एक शिवबाबा के ही बनकर रहेंगे।

* शिवरात्रि पर्व बलि चढ़ने का भी यादगार है – यादगार रूप में तो स्थूल बलि चढ़ाते हैं लेकिन होना है मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित। बलि चढ़ना अर्थात् महाबलवान बनना। आप बच्चों को अपने कमजोरियों की बलि चढ़ानी है। सबसे बड़ी कमजोरी देह-अभिमान की है। देह-अभिमान के वंश को समर्पित करना ही बलि चढ़ना है। तो अब ऐसी शिवरात्रि मनाओ।

* शिवरात्रि पर्व पर परमात्म प्यार में व्रत भी रखते हैं। यह व्रत खुशी की भी निशानी है। व्रत रखना अर्थात् प्यार में त्याग भावना। तो शिवरात्रि पर अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा यह व्रत लो कि सदा कमजोर वृत्ति को मिटाकर शुभ और श्रेष्ठ वृत्ति धारण करेंगे। वृत्ति से कृत्ति का कनेक्शन है। कोई भी अच्छी वा बुरी बात पहले वृत्ति में धारण होती है फिर वाणी और कर्म में आती है। तो श्रेष्ठ वृत्ति का व्रत धारण करो यही सच्ची शिवरात्रि मनाना है।

* शिव रात्रि के दिन भक्त आत्माओं के पास शिव बाप के बिन्दू रूप की विशेष स्मृति रहती है। शिव जयन्ती वा शिवरात्रि कोई साकार रूप का यादगार नहीं है लेकिन निराकार बाप ज्योति बिन्दू का यादगार है। जिसे वे शिवलिंग के रूप में पूजते हैं। तो आप सभी के दिल में भी बाप के बिन्दु रूप की स्मृति सदा रहे। बिन्दू अर्थात् बीजरूप स्थिति में स्थित हो बीज डालो। तो अनेक आत्माओं में बाप की वा समय की पहचान का बीज पड़ जायेगा।

* शिवरात्रि का दिन भोलानाथ बाप का दिन है। भोलानाथ अर्थात् बिना हिसाब के अनगिनत देने वाला। नालेजफुल होते भी भोला है। वैसे तो हिसाब

करने में एक-एक संकल्प का भी हिसाब जान सकते हैं लेकिन जानते हुए भी देने में भोलानाथ है। इसलिए सिर्फ सच्ची दिल से उसे राज़ी कर लो तो सब भण्डारे २१ जन्मों के लिए भरपूर कर देगा।

* जैसे शिवरात्रि के दिन भक्त लोग अपने भक्ति की मस्ती में मस्त हो जाते हैं। ऐसे आप बच्चे ''पा लिया'' इसी खुशी में सदा गाते-नाचते उमंग-उत्साह से यह यादगार मनाओ। आप अभी इस ब्राह्मण जीवन में बाप के साथ सर्व आत्माओं को सुख, शान्ति, खुशी और शक्ति का सहयोग दो। तब दोनों की साथ-साथ पूजा होगी।

* यह अलौकिक जयन्ती बाप और बच्चों की साथ-साथ है। वैसे सारे कल्प में बाप और बच्चों का एक ही बर्थ डे हो, यह हो नहीं सकता। लेकिन आप कहते - हम बाप का बर्थ डे मनाते और बाबा कहते - बच्चों का बर्थ डे मनाते। तो ऐसा वन्डरफुल बर्थ डे खूब उत्साह से सदा मनाओ। उत्सव मनाना अर्थात् सदा उत्साह में रहना और सदा हर कर्म में आत्माओं को उत्साह दिलाना। जहाँ उत्साह होता है वहाँ कभी भी किसी भी प्रकार का विघ्न उत्साह वाली आत्मा को उत्साह से हटा नहीं सकता।

* जैसे शिवरात्रि को बाप के अवतरण का दिन कहते हो। ऐसे रोज़ अमृतवेले ऐसे ही सोचो कि हम निद्रा से नहीं, शान्तिधाम से कर्म करने के लिए अवतरित हुए हैं। अवतार अवतरित होते ही हैं श्रेष्ठ कर्म करने के लिए। उनको जन्म नहीं कहते, अवतरण कहते हैं। ऊपर की स्थिति से नीचे आते हैं-यह है अवतरण। तो ऐसी स्थिति में रहकर कर्म करने से साधारण कर्म भी अलौकिक कर्म में बदल जाते हैं। तो आपकी चाल वा कर्म सब अलौकिक हों।

* शिवरात्रि का अर्थ है - अंधकार मिटाकर प्रकाश देने वाली रात्रि। शिव रात्रि मनाना अर्थात् ज्ञान सूर्य का प्रगट होना। तो आप बच्चे भी मास्टर ज्ञान सूर्य बन विश्व में अंधकार को मिटाकर रोशनी देने का कर्तव्य करो। अंधकार मिटाने वाली आत्माओं के पास अंधकार रह नहीं सकता। अगर किसी भी विकार का अंश है तो उसे अंधकार कहेंगे, रोशनी नहीं। रोशनी अर्थात् सम्पूर्ण पवित्रता।

* शिवजयन्ती पर आप बच्चे प्रतिज्ञा भी करते और झण्डा भी लहराते हो। प्रतिज्ञा का अर्थ है कि जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। कुछ भी त्याग

करना पड़े, कुछ भी सुनना पड़े लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। वचन अर्थात् वचन। तो ऐसे मन से प्रतिज्ञा करना अर्थात् मन को मनमनाभव बनाना। साथ-साथ हर आत्मा के दिल पर बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहराओ। यही है सच्ची-सच्ची शिवरात्रि मनाना।

२- होली

होली की विशेषता है जलाना, फिर मनाना और फिर मंगल मिलन करना। इन तीन विशेषताओं से यादगार बना हुआ है क्योंकि आप सभी ने होली बनने के लिए पहले पुराने संस्कार, पुरानी स्मृतियाँ सभी को योग अग्नि से जलाया तभी संग के रंग में होली मनाया अर्थात् बाप समान संग का रंग लगाया। जब बाप के संग का रंग लग जाता है तो विश्व की सर्व आत्माओं को परमात्म परिवार समझते और परमात्म परिवार होने के कारण हर आत्मा के प्रति शुभ कामना स्वत: ही नेचुरल संस्कार बन जाती है। इसलिए सदा एक दो में मंगल मिलन मनाते रहते हैं। चाहे कोई दुश्मन भी हो, आसुरी संस्कार वाले हों लेकिन इस रूहानी मंगल मिलन से उनको भी परमात्म रंग का छींटा जरूर डालते हो। यह परमात्म प्यार के मिलन, शुभ भावना के मिलन से वे भी पुरानी बातें भूल उत्साह में आ जाते है, इसलिए उत्सव के रूप में यादगार बना लिया है।

होली मनाना अर्थात् अविनाशी रूहानी रंग में बाप समान बनना। होली का अर्थ है हो ली। पास्ट इज़ पास्ट। जलाने वाली होली भी मनाते। रंग में रंगने वाली होली भी मनाते, बिन्दी लगाने की होली भी मनाते, मंगल मिलन मनाने की होली भी मनाते। चारों ही प्रकार की होली मनाने से लाइट के ताजधारी बन जाते।

बापदादा के पास सभी बच्चों के नयनों और मस्तक की पिचकारी द्वारा प्रेम की धारा, अति स्नेह की सुगन्धित पिचकारी आ रही है। बापदादा भी रिटर्न में सर्व बच्चों को नयनों की पिचकारी द्वारा अष्ट शक्ति अर्थात् अष्ट रंगों की पिचकारी से होली खेल रहे हैं। वे लोग जैसे स्थूल रंगों द्वारा लाल रंग से लाल बना देते हैं। भिन्न-भिन्न रंगों से भिन्न-भिन्न रूप बना देते हैं, ऐसे आप हर शक्ति के रूहानी रंग से शक्ति स्वरूप बन जाते हो, हर गुण स्वरूप हो जाते हो। दृष्टि के द्वारा रूप परिवर्तन हो जाता है। तो जन्म लेते ही बाप ने होली मनाए होली बना दिया। वह हैं मनाने वाले और आप हो सदा होली बनने वाले। सदा हर गुण

का रंग, शक्ति का रंग, स्नेह का रंग लगा हुआ ही है। ऐसे होली हंस हो। तिलक लगाने की भी ज़रूरत नहीं। हो ही सदा तिलकधारी। अविनाशी तिलक लगा हुआ ही है, जो मिटाते भी मिट नहीं सकता। अल्पकाल के बजाए सदाकाल मनाते रहते और औरों को भी बनाते रहते।

वे लोग तो मंगल मिलन के लिए गले मिलते हैं लेकिन आप होली हंस बापदादा के गले का हार बन गये हो। होली जलाई भी और मनाई भी। जलाने के बाद ही मनाना होता है। संकल्प की तीली से, जो भी कुछ स्व प्रति वा सेवा प्रति व्यर्थ संकल्प अर्थात् कमज़ोरी के संकल्प संस्कार हैं, सबको इकट्ठा करके तीली लगा दो इसी को ही सूखी लकड़ियां कहते हैं। तो सबको इकट्ठा करके दृढ़ संकल्प की तीली लगाना ही जलाना है और यह जलाना ही मनाना और बनना है। लेकिन तीली भी माचिस के सम्बन्ध बिना नहीं जलती। तो बाप के साथ जब सम्पर्क सम्बन्ध होगा, अभ्यास की तीली पर मसाला ठीक होगा तब मेहनत के संस्कार, युद्ध के संस्कार वा संकल्प की पुरानी लकड़ियों को आग लगा सकेंगे। यही होली जलाओ। मन भी सदा मीठा, मुख भी सदा मीठा। तो होली हो गई ना! बाकी एक दो पर **गुलाबासी** डालते हो। गुलाब की पत्तियां डालते हो। वह तो आप स्वयं ही रूहानी गुलाब हो। रंग में तो रंगे हुए ही हो। वह रंग तो मिटाना पड़ेगा और यह रंग तो जितना चढ़ा हुआ हो उतना अच्छा है।

होली बच्चों के लिए सदा ही होली है। सदा ही ज्ञान-रंग में रंगे हुए हैं, इसलिए खास रंग लगाने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। वह तो हुआ मनोरंजन। बाकी रंग में रंगकर मिक्की माउस नहीं बनना है। सदा होलीहंस हो, होली रहने वाले हो और औरों को भी होली बनाने का रंग डालते हो।

यह संगमयुग ही होली जीवन का युग है। अविनाशी रंग लग गया, जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। बाप द्वारा भिन्न-भिन्न रंग हर आत्मा पर अविनाशी चढ़ जाते हैं। ज्ञान का रंग, याद का रंग, अनेक शक्तियों के रंग, गुणों के रंग, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ भावना, श्रेष्ठ कामना स्वत: सदा बन जाए, यह है रूहानी रंग, जो कितना सहज चढ़ जाता है।

यह आपका ही यादगार है लेकिन आध्यात्मिक शक्ति न होने के कारण आध्यात्मिक रूप से नहीं मना सकते हैं। बाह्यमुखी होने कारण बाहरमुखता के

रूप से ही मनाते रहते हैं। आप यथार्थ रूप से मनाते हो।

३. रक्षाबन्धन

* रक्षाबन्धन का त्योहार है ही पतित को पावन बनाने की प्रतिज्ञा का त्योहार। इस समय रक्षाबन्धन का बड़ा महत्व है। तुम प्रतिज्ञा करते हो कि बाबा हम कभी पतित नहीं बनेंगे।

* जो पावन कुमारियाँ हैं उन्हें ही भाईयों को राखी बांधने का हक है। तुम गृहस्थियों से पवित्र रहने की प्रतिज्ञा कराओ। सबको पतित-पावन बाप का परिचय दो।

* तुम जब किसी के पास राखी बांधने जाते हो तो उन्हें समझाओ कि पतित-पावन बाप इस पतित दुनिया को पावन बनाने के लिए संगम पर ही आते हैं। बरोबर यह भारत पावन था, अब पतित है। महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। भगवान कहते हैं बच्चे माया रावण तुम्हारा बड़ा दुश्मन है, इसलिए पवित्रता की राखी बांधनी है। प्रतिज्ञा करनी है, ''हे बाबा भारत को श्रेष्ठाचारी बनाने के लिए हम पवित्र रहेंगे और औरों को भी बनाते रहेंगे।'' यह राखी बंधन एक दिन की बात नहीं है, यह पिछाड़ी तक चलता रहेगा। प्रतिज्ञा करते रहेंगे। जो यह राखी बांधकर विकारों से अपनी रक्षा करते हैं वह सुखधाम में चले जाते हैं।

* तुम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ पहले स्वयं को यह राखी बांध पवित्र रहते हो। इस पवित्रता की प्रतिज्ञा का ही यादगार यह जनेऊ, कंगन आदि भी पहनते हैं। लेकिन यहाँ तो कंगन आदि पहनने की बात नहीं है। यह तो पावन बनने की प्रतिज्ञा करनी है। यह राखी बंधन ५ हजार वर्ष पहले हुआ था जबकि पतित-पावन बाप आया था, आकर राखी बांधी थी कि पवित्र बनो क्योंकि पवित्र दुनिया की स्थापना हुई थी। अब फिर से वह बाबा आया हुआ है। तो तुम सबको यही सन्देश दो कि हम ब्राह्मण आये हैं प्रतिज्ञा कराने। प्रतिज्ञा करो कि हम कभी पतित नहीं बनेंगे। पतित-पावन बाप संगम पर ब्रह्मा द्वारा आकर बच्चों को डायरेक्शन देते हैं बच्चे काम महाशत्रु है, इस महाशत्रु पर जीत पहनने से तुम कृष्णपुरी में चले जायेंगे। इसलिए ही राखी के बाद श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाते हैं। अभी तुम पवित्र ब्राह्मण बनो तो फिर देवता बन जायेंगे। उन्हें एलबम भी दिखाना चाहिए कि देखो हम सबने यह राखी का बंधन बांधा हुआ है। अभी संगम पर जिन्होंने

यह पवित्रता की प्रतिज्ञा की है वो २१ जन्म तक पवित्र रहते हैं।

* स्वयं परमात्मा पिता ही आत्मा रूपी बच्चों को राखी बांधते और प्रतिज्ञा कराते हैं। तुम बच्चे उनके वंशावली सच्चे-सच्चे ब्राह्मण हो। तुम ब्राह्मण भी दूसरों को राखी बांध सकते हो। बुजुर्ग लोग जानते हैं–आगे ब्राह्मण ही आकर धागे की राखी बांधते थे। परन्तु वह कोई ऐसे नहीं कहते कि तुमको पवित्र रहना है। यह राखी उत्सव संगम पर ही होता है। इसे ५ हजार वर्ष हुए हैं। संगम पर बाप ने राखी बांधी फिर हम सतयुग-त्रेता अन्त तक पवित्र रहे फिर भक्ति मार्ग से यह राखी त्योहार मनाना शुरू हुआ।

* जो बच्चे पहले स्वयं को पवित्रता का पक्का कंगन बांधते हैं वही दूसरों को भी इस कंगन में बांध सकते हैं। मन्सा में भी अपवित्रता के संकल्प न आयें, यह पूरा व्रत लो, तब दूसरों पर आपकी पवित्रता की आकर्षण का प्रभाव पड़ेगा। सिर्फ रीति-रस्म मुआफ़िक सन्देश देकरके नहीं आओ लेकिन उनका भाग्य बनाकर आओ वा भाग्य बनाने की इतनी तीव्र प्रेरणा देकर आओ जो आपके पीछे-पीछे आकर्षित हो भाग्य बनाने बिना रह न सकें।

* पहले स्व रक्षक बनो अर्थात् शुद्ध संकल्पों से स्वयं की रक्षा करो। फिर परिवार रक्षक बनो। परिवार के प्रति सदा शुभ भावना रखो। कभी किसी के प्रति अशुभ नहीं सोचो। स्व-रक्षक, परिवार रक्षक ही विश्व रक्षक बन सकते हैं। तो यह तीन धागों का कंगन बांधों – यही सच्ची राखी है।

* पवित्रता की राखी तो ब्राह्मण बनते ही सबने बांध ली है। अब अपनी अवस्था को एकरस बनाने के लिए साक्षीपन की राखी बांधनी है। यह साक्षीपन की राखी सेवाओं में सफलता दिलाती रहेगी। जितना साक्षी रहेंगे उतना साक्षात्कार मूर्त्त और साक्षात् मूर्त्त बनेंगे। इसके लिए अभ्यास करो – अभी-अभी शरीर का आधार लिया और अभी-अभी न्यारे हो गये।

४- दीपावली

* दीपावली तीन स्मृतियों का यादगार दिवस है:- **१-** वर्तमान संगम पर ज्योति जगाने का **२-** भविष्य ताजपोशी का **३-** भक्ति मार्ग के लक्ष्मी पूजा व लक्ष्मी आह्वान का।

* जैसे दीपावली पर एक दीपक से अनेक दीपक जगाते हैं, ऐसे ही एक-

एक दीपक की एक दीपक (परमात्मा पिता) के साथ लगन है तो यही सच्ची दीपमाला है। दीपक में अग्नि होती है। तो आप दीपकों में भी लगन की अग्नि हो। लगन नहीं तो अग्नि भी नहीं। तो यही चेक करो कि हम दीपक लगन लगाकर अग्नि रूप बने हैं? मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं, अब बापदादा की जो आशायें हैं, उन आशाओं के दीपक भी जगाओ। ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का वा आशा का दीपक बुझ जाए। सदा एकरस और अटल-अडोल यह दीपक सदा जगा रहे। ऐसा जो अखण्ड और अटल दीपक होता है, जिसका घृत कभी खुटता नहीं, अखण्ड जलता है वही सबको प्रिय लगता है।

* जैसे दीपमाला पर एक तो सफाई करते हैं दूसरा नया चौपड़ा रखते हैं लेकिन अन्दर लक्ष्य कमाई का होता है। तो चेक करो – सफाई और कमाई का कार्य कर लिया है? सदा दिव्य गुणों का आह्वान करो तो अवगुण आहुति रूप में ख़त्म हो जायेंगे।

* जैसे दीपमाला पर नये वस्त्र पहनते हैं ऐसे आप नये संस्कारों के नये वस्त्र धारण करो। जब मरजीवा बने, नया जन्म हुआ तो नये संस्कारों रूपी वस्त्रों को छोड़ पुराने संस्कार रूपी वस्त्रों को कभी भी धारण नहीं करो। अभी तक जो कमजोरी, कमियाँ, निर्बलता, कोमलता रही हुई है वह सभी पुराने खाते अब समाप्त करके सच्ची दीपमाला मनाओ।

* दीपावली को ताजपोशी का दिवस भी कहते हैं तो इस दुनिया में रहते हुए नयनों में सतयुगी नज़ारे दिखाई दें, न सिर्फ इतना लेकिन अपना भविष्य स्वरूप जो धारण करना है वह भी आँखों के आगे बार-बार स्पष्ट दिखाई दे। बस, अभी-अभी यह छोड़ वह सजा-सजाया चोला धारण करना है। संगमयुग पर सतयुगी स्वरूप का अनुभव करो।

* जैसे साइंस के साधन दूरबीन से दूर की चीज समीप और स्पष्ट दिखाई पड़ती है। ऐसे तीसरे नेत्र से कल्प पहले की बातें समीप और स्पष्ट देखो और अनुभव करो, पुराने संस्कारों के चौपड़े को फिर से भूल से भी नहीं देखना। पुराने संस्कारों के चोले को फिर-फिर धारण नहीं करना, नवीनता को धारण करना। दीपावली का दिन पुराने खाते को ख़त्म करने की रीति-रस्म के रूप में चलता आ रहा है तो अवश्य प्रैक्टिकल रूप में भी आप आत्माओं ने ख़त्म किया है तब

यादगार चल रहा है। तो –

I. अपने मन्सा संकल्पों का पोतामेल चेक करो कि अब तक सम्पूर्ण श्रेष्ठ संकल्पों के पुरुषार्थ में कहाँ तक सफलता आई है? व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के ऊपर कहाँ तक विजयी बने हैं?

II. वाणी द्वारा कहाँ तक आत्माओं को बाप का परिचय दे सकते हैं, कितनी आत्माओं को बाप का स्नेही वा सहयोगी बना सकते हैं? वाचा में कहाँ तक रूहानियत वा अलौकिकता व आकर्षण आई है?

III. कर्मणा द्वारा सदा न्यारे और प्यारे, अलौकिक, असाधारण कर्म कहाँ तक कर सकते हैं?

ऐसी अपनी चेकिंग कर जो भी कमी वा कमजोरी रह गई है उसे समाप्त करो अर्थात् नया खाता शुरू करो यही है दीपावली मनाना।

* जैसे दीपावली के पहले घर की पोताई करते हैं तो जो भी गंदगी वा कीटाणु होते हैं वह स्वत: ख़त्म हो जाते हैं ऐसे पोतामेल चेक करना अर्थात् पोताई करना। इससे जो भी कमजोरियाँ होंगी वह स्वत: ही ख़त्म हो जायेंगी। जैसे दीपावली पर एक-दो को खर्ची देते वा लेते हैं। ऐसे आप अपने अनुभवों के ज्ञान रत्न, खर्ची के रूप में एक-दो को दो जिससे वह आत्मा भी सहज अनुभवी बन जाये।

* जैसे दीपक जलाते हैं तो पहले लाइट को नमस्कार जरूर करते हैं। यह ज्योति जगी हुई आत्माओं की यादगार अभी तक कायम है। बुझे हुए दीपक को नमस्कार नहीं करते। तो आप भी ऐसे जागती ज्योत बनो जो सर्व आत्मायें आपको नमस्कार करें।

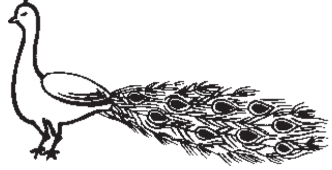

भिन्न-भिन्न स्थानों का महत्त्व

१- मधुबन

* मधुबन है बापदादा का सारी दुनिया के बीच में बड़े प्यार से बनाया हुआ शो केस। जैसे शोकेस में बहुत अच्छी-अच्छी चीजें रखते हैं और सभी चीजों से ऊंची चीज़ शोकेश में रखते हैं। तो मधुबन सारी दुनिया के लिए शोकेस है। उस शोकेस में आप अमूल्य रत्न रखे हुए हो। मधुबन भूमि में स्नेह की ऐसी लकीर है जिस लकीर के घेराव के अन्दर बापदादा निवास करते हैं, इसके अन्दर कोई आ नहीं सकता।

* मधुबन है सर्व प्राप्तियों की खान। सेवाकेन्द्र हैं इस खान की ब्रान्चेज। यहाँ की एक-एक वस्तु, एक-एक ब्राह्मण आत्मा बहुत कुछ शिक्षा और शक्ति देने वाली है।

* मधुबन का अर्थ है मधु अर्थात मधुरता, जितना मधुर उतना वन अर्थात् बेहद का वैराग्य। अगर मधुबन का यही विशेष गुण जीवन में धारण कर लो तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हो।

* मधुबन है तपस्या भूमि। मधुबन एक सेकेण्ड में सभी से त्याग कराता है। मधुबन है ही त्यागी, वैरागी बनाने वाला।

* मधुबन है फाईनल ठप्पा वा छाप लगाने का स्थान। जैसे पोस्ट आफिस होती है, उसमें जब फाइनल ठप्पा लगाते हैं तब चिट्ठी जाती है। यह भी स्वर्ग के अधिकारी बनने का छाप मधुबन है।

* मधुबन है वरदान भूमि। वरदान भूमि पर वरदाता से वा वरदाता द्वारा निमित्त बनी हुई आत्माओं से जितना जो वरदान लेना चाहें वह ले सकते हैं। यहाँ के वायुमण्डल में, पवित्र चरित्र भूमि में वरदान भरे हुए हैं।

* मधुबन है लाइट हाऊस। लाइट हाउस ऊंचा और रास्ता बताने वाला होता है। मधुबन के डायरेक्शन प्रमाण सभी चल रहे हैं–तो लाइट हाउस भी हुआ और ऊंची स्टेज भी हुई। जैसे बाप को कहते हो ऊंचा नाम, वैसे ही मधुबन अर्थात् ऊंचा धाम।

* मधुबन को महान् भूमि कहा जाता है। तो महान् भूमि पर निवास करने वाली अवश्य महान् आत्माएँ ही होंगी।

* मधुबन को कहते हैं कि यह परिवर्तन भूमि, वरदान भूमि है। यहाँ आने से जो विशेष कमज़ोरी व विशेष संस्कार समय-प्रति-समय विघ्न रूप बनते हैं, ऐसे संस्कार व ऐसी कमज़ोरी यहाँ सहज ही परिवर्तन हो जाती है।

* मधुबन महायज्ञ है, क्योंकि यहाँ अनेक आत्माओं के लगन की अग्नि का समूह है। तो इसका भी लाभ उठाना चाहिए। महायज्ञ में महा आहुति डाली जाती है, साधारण आहुति नहीं। जैसे यज्ञ में किसी भी चीज़ को स्वाहा किया जाता है। ऐसे आप बच्चे भी अमृतवेले उठ रोज लगन की अग्नि का यज्ञ रचते हो। जिस लगन रूपी अग्नि में अपनी कमज़ोरी स्वाहा करते हो।

* मधुबन के सिवाए बापदादा बच्चों से साकार रूप में मिलन मनाने और कहाँ भी नहीं आते। आकारी रूप में कहाँ भी जा सकते हैं लेकिन साकार मिलन तो मधुबन में ही होता है, इसलिए मधुबन है साकार मिलन की सौभाग्य की भूमि।

* मधुबन को स्वर्ग भूमि कहते हैं। मधुबन स्वर्ग का मॉडल है। इस भूमि को साधारण स्थान नहीं समझो। मधुबन की स्मृति भी समर्थी दिलाती है। यहाँ माया आ नहीं सकती।

* मधुबन शीशमहल है, जिसमें हर एक अपना स्पष्ट साक्षात्कार कर सकते हैं। लास्ट में आप सबके चेहरे भी दर्पण का कार्य करेंगे।

* मधुबन विश्व के आगे स्टेज है, स्टेज पर जो एक्टर होता है उसका हर एक्ट पर कितना अटेन्शन रहता है। हाथ उठायेगा तो भी अटेन्शन से।

* मधुबन भूमि यादगार भूमि, महान् भूमि है। इस भूमि का गायन आज तक भी भक्त लोग वृन्दावन, मधुबन के नाम से करते हैं। यह ऐसी समर्थ भूमि है जिस भूमि में आने से अनेक आत्माओं का व्यर्थ समाप्त हो जाता है। समर्थ बन जाते हैं। अनेक प्रकार के अनुभवों का खज़ाना सहज प्राप्त कर लेते हैं। इस भूमि पर जो वरदान चाहें वह याद और भूमि के आधार से सहज ही पा सकते हैं। भक्त लोग इस दिव्य भूमि के वा श्रेष्ठ स्थान के दर्शन के लिए अब तक भी तड़पते रहते हैं।

* मधुबन है ही सारे विश्व के अन्दर ऊँचा स्तम्भ। कहीं से भी देखो, चाहे दूर से, चाहे नज़दीक से लेकिन स्तम्भ तो ऊँचा ही दिखाई देता है। ऊँचा स्तम्भ होने के कारण सभी की नज़र जाती है तो यह है विशेष बेहद की सेवा का स्थान।

* मधुबन है खुशियों की खान। खुशी के कारण सब सहज हो जाता है। खुशी की खुराक सदा तन्दुरुस्त, मन दुरूस्त रखती है।

* मधुबन है बेहद की सेवा का तख्त। मधुबन की श्रेष्ठता तो यह है कि ब्रह्मा बाप की विशेष कर्मभूमि है। लाइट-हाउस, माइट-हाउस है। यहाँ साधना का वायुमण्डल भी है और सब प्रकार के साधन भी हैं।

२- ज्ञान सरोवर

सबके उमंग-उत्साह के पंख का प्रैक्टिकल प्रूफ है ज्ञान सरोवर। बापदादा ज्ञान सरोवर के सेवाधारियों को विशेष दुआओं भरी याद-प्यार देते हैं। ज्ञान सरोवर विशेष बनाया ही है सम्पर्क वालों को वारिस बनाने के लिये। यह ज्ञान सरोवर है ही – सेवा के वृद्धि की खान। तो ज्ञान सरोवर में सभी मिलकर एक ऐसा विशाल प्रोग्राम करो – जैसे कोई विशेष स्थान बनाते हैं तो विशेष स्थान की सेरीमनी में अलग-अलग देश वाले या तो पानी डालते हैं या मिट्टी डालते हैं। तो आप पानी या मिट्टी तो नहीं डलवायेंगे लेकिन सारे विश्व में एक भी स्टेट खाली नहीं रहे, सब तरफ के आवें, चाहे विदेश, चाहे देश की जो भिन्न-भिन्न स्टेट हैं उसका एक-एक जरूर आवे। तो इन्टरनेशनल प्रोग्राम बनाओ।

ज्ञान सरोवर का स्थान मिला है तो देश-विदेश दोनों मिलकर, दोनों की राय से, दोनों के प्लैन से, दोनों के हाँ जी से, दोनों की समानता से ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो विदेश वाले भी कहे कि हाँ, हमारे योग्य है और देश वाले भी कहें कि हमारे योग्य है। कोई एक देश भी वंचित नहीं रह जाये। ऐसा प्रोग्राम करो जो विश्व में इस प्रकार का सेवा समाचार किसी भी स्थान का नहीं हो। चाहे यू.एन. हो या उससे भी बड़ा स्थान हो, उससे भी बड़ा हो जाये।

ज्ञान सरोवर में सबका तन भी लगा है, मन भी लगा है और छोटे बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी का धन भी लगा है। तो जैसे सबके सहयोग की अंगुली लगी है तो सेवा में भी सबके सहयोग की अँगुली लगनी चाहिए।

* इस ज्ञान सरोवर को ज्ञान सरोवर कहें या स्नेह का सरोवर कहें? ज्ञान सरोवर में स्नेह का सरोवर अच्छा है।

* ये ज्ञान सरोवर सेवा का विशेष लाइट हाउस और माइट हाउस है। इस धरनी से अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। अनेक आत्माएँ अपने

बिछुड़े हुए बाप से मिलन मनायेंगी। अनेक आत्माओं के दु:ख दूर करने वाली धरनी है। इस सरोवर में आते ही सुख की लहरों में लहराने का अनुभव करते रहेंगे।

* इस ज्ञान सरोवर द्वारा तीन प्रकार के लोग, तीन प्रकार की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे–कोई वर्से के अधिकारी, कोई वरदानों के अधिकारी और कोई सिर्फ दुआओं के अधिकारी। तो तीन प्रकार के प्राप्ति सम्पन्न – ये श्रेष्ठ सरोवर है।

* इस ज्ञान सरोवर में साधारण आत्माएं आयेंगी और फ़रिश्ता जीवन का अनुभव कर जायेंगी। साथ-साथ अनेक ब्राह्मण आत्माएं तपस्या के सूक्ष्म अनुभूतियों द्वारा अव्यक्त पालना और सूक्ष्म योग के सहज अनुभव और प्राप्तियों का लाभ लेंगी। कई ब्राह्मण आत्माओं की श्रेष्ठ आशायें स्व उन्नति की पूर्ण होने का साधन बहुत श्रेष्ठ है।

* यह स्थान तो कॉमन है लेकिन स्थिति श्रेष्ठ अनुभव कराने वाला है। विधिपूर्वक ज्ञान के नॉलेज को विश्व में प्रत्यक्ष करने का स्थान है। यह पहला ही स्थान है जिसमें छोटे बच्चों से लेकर जो भी ब्राह्मण हैं उनके सहयोग का तन-मन-धन लगा है। तन से ईट नहीं भी उठाई है लेकिन तन से अपने-अपने साथियों को सहयोगी बनाया है, उमंग दिलाया है तो ऐसे स्नेह, सहयोग, शक्ति की बूँद-बूँद से सजा हुआ सरोवर श्रेष्ठ सफलता का अनुभव कराता रहेगा। सभी ने दिल वा जान से सिक व प्रेम से बूंद-बूंद डाली है तो आप सबके सहयोग का सेम्पल ज्ञान सरोवर है।

* ज्ञान सरोवर से प्यार सभी का बहुत अच्छा है। ज्ञान सरोवर से प्यार अर्थात् सेवा से प्यार। स्थान से प्यार नहीं है लेकिन सेवा के निमित्त स्थान है तो सेवा से प्यार है।

* ज्ञान सरोवर में दो लक्ष्य हैं – एक तो विशेष सेवा, दूसरा ब्राह्मणों का एशलम। तो दोनों लक्ष्य के कारण इसी विधि से बनाया है। पाण्डव भवन में सिवाए ब्राह्मणों के एलाउ नहीं करते लेकिन यहाँ अनेक सम्पर्क वाले नज़दीक सम्बन्ध में आयेंगे। जो नाम है ईश्वरीय विश्व-विद्यालय, तो जो नाम है विद्यालय उस नाम को भी प्रत्यक्ष करेंगे। मधुबन ब्राह्मणों के हिसाब से बना हुआ है और ज्ञान सरोवर विश्व की सर्व आत्माओं के हिसाब से।

* ज्ञान सरोवर एक विश्व के लिये सेम्पल बना है। आखिर तो एशलम बनना ही है। अभी देख लिया ना, जब भी कोई बात नीचे-ऊपर हो तो आ जाना।

* ज्ञान सरोवर में सब तरफ के माइक्स का मेला होगा। सब तरफ के माइक आने हैं।

* ज्ञान सरोवर का म्यूज़ियम बहुत सेवा के निमित्त बनेगा। देश विदेश की आत्मायें इससे बाप का परिचय प्राप्त करेंगी और अनेक आत्मायें अपना खोया हुआ जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर खुशी में नाचेंगी। अनेक आत्माओं को स्व का और बाप का परिचय मिलने से वह अनुभव करेंगी कि हम क्या थे और क्या बन गये। विचित्र परिवर्तन का अनुभव करेंगे और शक्तिशाली बन औरों को भी यह ईश्वरीय सन्देश देने के निमित्त बनेंगे।

* ज्ञान सरोवर का ऑडीटोरियम हाल, जैसे राज दरबार लगती है।

३- शान्तिवन

डायमण्ड जुबली में जो इतनी सेवा करेंगे, उन्हों के बैठने के लिए स्थान भी चाहिए। इसी शुभ संकल्प से अभी नीचे (शान्तिवन में) ज्यादा में ज्यादा मिल सके, बैठ सके, उसके लिए पहले स्टेज का फाउण्डेशन डाल रहे हैं। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चों की अंगुली से जब ज्ञान सरोवर बन गया तो ये तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। वो तो सभी के संकल्प और सहयोग से सहज से सहज बनना ही है। तो फाउण्डेशन डालना अर्थात् अंगुली देना। पहाड़ तो उठा ही पड़ा है।

हर एक बच्चे को डबल काम करना है। एक डायमण्ड जुबली का और दूसरा शान्तिवन की तैयारी। तो बूंद-बूंद से तलाब बन जायेगा। देखो खेल क्या है? एक बिन्दू और दूसरा बूंद। बाप के यादगार जो मन्दिर हैं उसमें बूंद भी दिखाते हैं और बिन्दू भी दिखाते हैं। तो आप सबकी शुभ भावना और सहयोग की बूंद यह मेला भवन तैयार कर देगी।

बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चे को सहयोग का सबूत देने में बहुत खुशी होती है इसलिए हजारों भुजायें दिखाई हैं। तो भुजायें सहयोग की निशानी हैं। बापदादा जानते हैं एक-एक बच्चे ने चारों ओर चाहे देश में, चाहे विदेश में सभी ने चाहे धन से, चाहे मन से, चाहे तन से सहयोग अवश्य दिया है। और

आज आप सबके सहयोग का सबूत आप आराम से बैठ देख भी रहे हो, सुन भी रहे हो। सभी ने शान्तिवन के लिए अपने पेट की रोटी बचा करके भी भेजा है। बापदादा जानते हैं खुद दाल रोटी खायेंगे, शान्तिवन में भेजेंगे। चाहे भारतवासी, चाहे विदेशी - सबकी ज्ञान सरोवर, चाहे शान्तिवन में जान लगी हुई है। दिल से प्यार है।

सभी को यह शान्तिवन का विशाल हाल पसन्द है? यह किसने बनाया? आप सभी के सहयोग के अंगुली से यह विशाल हाल तैयार हुआ है। बाप तो है लेकिन बच्चों के सहयोग की अँगुली भी ज़रूरी है। तो पसन्द है ना या इससे बड़ा बनायें?

शान्तिवन में मेला होना है, नाम शान्तिवन है लेकिन होना मेला है, झमेला नहीं, मेला। दुनिया के मेले झमेले होते हैं, यहाँ मेला मिलन का होता है।

यह शान्तिवन का मेला विशेष ब्राह्मणों के लिए हुआ और होता रहेगा लेकिन इस शान्तिवन को सेवा में भी लगाओ। ब्राह्मण माना सेवाधारी। तो जो आपके सम्बन्ध, सम्पर्क में हैं और चाहते हैं कि हमें भी कोई चांस मिले, लेकिन स्थान के कारण आप उन्हों की सेवा नहीं कर सके हैं, अभी बड़ी दिल से इतने ही हजारों में सेवा कर सकते हो क्योंकि ऊपर आपको हद मिलती है, यहाँ एक ही हाल में दो तीन ग्रुप बनाकर योग शिविर करा सकते हो, कोर्स करा सकते हो और साथ में वारिस बना सकते हो। यहाँ की पालना से वारिस बनना बहुत सहज होगा क्योंकि यहाँ का वायुमण्डल और अनुभवी दादियों की दृष्टि, पालना सहज परिवर्तन कर सकती है।

एक प्रोग्राम ब्राह्मणों के रिफ्रेशमेंट का और एक प्रोग्राम सेवा का भिन्न-भिन्न रूप से एक ही समय पर ग्रुप-ग्रुप बनाकर एक ही हाल में और जो रहने के अच्छे बड़े हाल हैं, उसमें भी रख सकते हो। तो आप जैसे खुद आये हो, वैसे फिर अपने सम्पर्क वालों का प्रोग्राम बनाते रहना। ऐसे नहीं सोचो कि यह बड़ा हाल कैसे काम में आयेगा, यह बड़े से छोटा भी हो सकता है, छोटे से बड़ा भी हो सकता है। तो इस हाल द्वारा ९ लाख तैयार करो। जितने आप बैठे हो एक, एक को लायेगा तो कितने हो जायेंगे? अभी समय के प्रमाण सेवा भी बेहद बड़ी करो, छोटे-छोटे ग्रुप तो ऊपर भी होते हैं लेकिन यहाँ ज्यादा संख्या में प्रजा बना सकते हो, रॉयल प्रजा बना सकते हो, वारिस बना सकते हो। तो जितने बैठे हो

उतने लाना। ज्यादा भले लाना, कम नहीं लाना।

आप सभी को विश्व का मालिक बनना है। तो विश्व का मालिक बनने वाले इतने बड़े, उनके लिए सब छोटा हो जाता है। हाल तो कुछ भी नहीं है, सारी विश्व आपको मिलनी ही है।

(निर्माण कार्य सम्पन्न होने पर सन्देश)

१. ये शान्तिवन ब्राह्मणों के उड़ती कला का एयरपोर्ट बनेगा।

२. ब्राह्मणों के आपसी मिलन, रूहरिहान, रिफ्रेश होने का रूहानी मौज मनाने का रमणीक विहार बनेगा।

३. ये शान्तिवन ब्राह्मणों को नम्बरवन में ले जाने का तपस्या स्थान बनेगा।

४. ये शान्तिवन सम्बन्धियों और सहयोगियों को स्नेह में समीप लायेगा।

५. ब्राह्मणों के श्रेष्ठ साधना अर्थात् एकान्तवास का साधन बनेगा।

६. भिन्न-भिन्न वर्गों के बड़े-बड़े सेमिनार्स, स्नेह मिलन द्वारा एक धक से अनेक आत्माओं को सन्देश मिलेगा।

७. आबूरोड के लिए दर्शनीय स्थान बनेगा। जैसे ओम् शान्ति भवन टूरिस्ट स्थान बना है, ऐसे ये भी बनेगा।

८. आईवेल के समय एशलम बनेगा।

४- ग्लोबल हॉस्पिटल के प्रति

यह हॉस्पिटल बहुत अच्छा है। वैसे तो सोचते हैं कि पेशेन्ट कोई नहीं हो और हॉस्पिटल वाले सोचते हैं कि पेशेन्ट आवें। अगर पेशेन्ट नहीं आते तो उदास हो जाते हैं। पेशेन्ट को पेशन्स में लाते हैं। तो हॉस्पिटल में सिर्फ पेशेन्ट नहीं लेकिन पेशन्स धारण करने वाले पेशेन्ट भी आते हैं।

सबसे ज्यादा हॉस्पिटल का फायदा ब्राह्मणों को है। एम्बुलेन्स में बैठे और पहुँच गये। अच्छी मदद है। एक तो ब्राह्मणों को मदद है और दूसरा जो लोग समझते हैं कि ये कुछ नहीं करते हैं वो समझते हैं कि हाँ ये करते हैं, बहुत करते हैं। हॉस्पिटल ने सेवा बढ़ाई ना। 'कुछ नहीं' को 'करते हैं' में परिवर्तन कर लिया। अच्छा है, हॉस्पिटल वाले अगर फुर्सत मिलती है तो मंसा सेवा बहुत करो। उससे फुर्सत नहीं मिलेगी।

हॉस्पिटल भी वृद्धि कर रही है और जितना-जितना दिल से सेवा करते हैं, तन से सेवा सभी करते हैं लेकिन यहाँ दिल से सेवा करना अर्थात् दिल की दुआयें लेना। तो जो दिल से सेवा करते हैं वो बापदादा के दिल पर नम्बर आगे रहते हैं। तो दिल से सेवा करने वाले हॉस्पिटल निवासियों को सदा ही नम्बर आगे लेना है। बढ़ रहे हैं, बढ़ते रहेंगे क्योंकि आवश्यकता भी बढ़नी है।

मधुबन की, माउण्ट आबू की हॉस्पिटल सबके लिए और आसपास वालों के लिए भी एक सहारा अनुभव होगी कि अगर सहारा मिलना है तो यहीं मिलना है – तन और मन दोनों का। तो मधुबन की हॉस्पिटल भी अनेक आत्माओं के तन और मन का सहारा है और बनती रहेगी। इसलिये सेवा की मुबारक है। लेकिन और भी मुबारक लेने के लिये प्लैन बनाते चलो।

यहाँ डॉक्टर्स को बहुत अच्छा चांस मिला है। सभी रहने में, आने में, खाने में–सबमें हल्के हो? या थोड़ा-थोड़ा भारी हो? जो दिल से साथ रहते हैं, तो साथ की खुशी सब-कुछ भुला देती है। खुशी में भोजन भी न ठण्डा लगता, न गर्म लगता, बहुत प्यारा लगता है। जब बहुत खुशी का मौका होता है तो ठण्डा खाया या गर्म खाया–याद रहता है? खुशी से ही पेट भर जाता है! तो साथ रहने वाले अर्थात् खुशी से भरपूर रहने वाले। यह भी ड्रामा की बहुत श्रेष्ठ भावी बनी हुई थी जो आप सबको गोल्डन चांस मिला।

आप (डाक्टर्स) डबल सर्विसएबुल हो। डबल सेवा करते हो या सिर्फ दवाई देते हो? एक ही समय पर डबल सेवा करने के निमित्त हो। डबल सेवाधारी, डबल स्नेह और सहयोग के पात्र बनते हैं। समीप रहने का–यह भी चांस अच्छा मिलता है। समीप रहने वालों से यह पूछने की आवश्यकता है नहीं कि खुश हो, ठीक हो?

डॉक्टर्स का काम ही है–शरीर में आने वाली व्यर्थ चीज़ों को खत्म करना। डॉक्टर्स की विशेषता है–व्यर्थ को समाप्त करना और समर्थ बनाना। रूहानियत में भी यही काम है और स्थूल में भी यही काम है। बाकी सेवा अच्छी कर रहे हो और रिजल्ट अच्छी है और अच्छे ते अच्छी होनी ही है। प्यार से सेवा कर रहे हो। प्यार की दवाई पहले देते हो, पीछे और दवाई देते हो, तो आधा काम तो प्यार ही कर लेता है। तो ये ग्लोबल वाले शरीरों को निरोगी बनाए आत्मा को शक्तिशाली बना रहे हैं।

५- भारत

* सारा खेल भारत पर बना हुआ है। भारत हीरे जैसा था। भारत में पवित्र गृहस्थ धर्म था। भारत सोने की चिड़िया था। भारत में सोना और हीरे बहुत अथाह थे। सोने के महल बनते थे और हीरे-जवाहरों की जड़त होती थी। भारत सतयुग के आदि में दैवी राजस्थान था। बाप का जन्म भारत में ही होता है। ब्रह्मा का भी जन्म भारत में ही है। भारत तो वास्तव में प्राचीन देवी-देवता धर्म वाला है। दूसरे देशों में जहाँ-तहाँ धर्मों की बहुत खिटपिट है। भारत ही सभी धर्मों को एशलम देता है, इसलिए भारत की बहुत महिमा है।

* भारत स्वर्ग था अब नर्क है। बाप को स्वर्ग बनाने वाला वा स्वर्ग का रचयिता कहा जाता है। महिमा भी भारत की है। एक ही भारत है जिसमें पावन राजाई देवताओं की थी। भारत में पवित्रता थी। बड़े साहूकार थे, पहले भारत १६ कला सम्पूर्ण श्रेष्ठाचारी था। यथा राजा-रानी तथा प्रजा स्वर्ग में सदा सुखी थे।

* भारत पारसपुरी थी। बहुत-बहुत धनवान था, यहाँ इतना तो खजाना था, जो बाद में मुसलमानों ने हीरे-मणियाँ आदि ले जाकर कब्रों में लगाई हैं।यहाँ बहुत सस्ता सोना था। अभी तो यह भारत पत्थरपुरी बना है, फिर पारसपुरी बनेगा।

* भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस है। सब खण्डों से ऊंच खण्ड और अविनाशी खण्ड भारत है, इसका कभी विनाश नहीं होता। भारत में जब देवी-देवताओं का राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। नये भारत में नई राजधानी देवी-देवताओं की थी। वर्ल्ड आलमाइटी अथॉर्टी का राज्य था। उन पर कोई जीत पा न सके। श्री लक्ष्मी-नारायण सारे विश्व के मालिक थे। उन्हों को विश्व का मालिक बनाने वाला स्वयं विश्व का रचयिता परमपिता परमात्मा है, जिसको गाड फादर कहते हैं। भारत में प्योरिटी थी तो पीस, **प्रासपर्टी** भी थी। भारत जीवन्मुक्त था। बाप से भारत को कल्प-कल्प बेहद सुख का वर्सा मिलता है।

* भारत में सुप्रीम पीस-प्रासपर्टी थी, तो जरूर सुप्रीम फादर ने स्थापन किया होगा। बाप संगम पर आकर भारत को जीवन्मुक्त बनाते हैं। बाकी सब धर्म बाइप्लाट्स हैं। यह भारत ओल्ड है, भारत तकदीरवान था, सबकी तकदीर जगी हुई थी। उस समय का भारत राइटियस, लॉ-फुल १०० परसेन्ट सालवेन्ट था।

* भगवान घर बैठे आये हैं भारत में। भारत उनका घर है। शिवरात्रि भी यहां

मनाते हैं, मन्दिर भी यहां बने हुए हैं। बाप शिव शक्तियों द्वारा भारत पर अविनाशी बृहस्पति की दशा लाते हैं। क्रिश्चियन लोगों को भी भारत के लिए रिगॉर्ड है। गॉड कृष्णा नहीं, लॉर्ड कृष्णा कहते हैं। कृष्ण के अथवा देवताओं के बहुत पुराने ते पुराने चित्र मांगते हैं क्योंकि फिर भी देवी-देवतायें सबके बड़े हैं।

* भारत के ही वर्ण गाये जाते हैं। ब्राह्मण वर्ण, देवता वर्ण, क्षत्रिय वर्ण, वैश्य, शूद्र वर्ण... इनमें ही ८४ जन्म पूरे होते हैं। बाकी अन्य धर्म वालों के ८४ जन्म नहीं होते हैं। शिवबाबा परमधाम से भारत का मेहमान बनकर आते हैं। कितना बड़ा बाप भारत का मेहमान है। गुप्त वेश में कितना बड़ा मेहमान पतित को पावन बनाने आया है। भारत में हिन्दी का प्रचार है। बाप भी हिन्दी में समझाते हैं फिर हर एक को अपनी भाषा में ट्रांसलेशन कर औरों को समझाना पड़े।

* पतित-पावन बाप यहाँ अवतार लेते हैं तो गोया सभी धर्म वालों के लिए भारत बड़े ते बड़ा तीर्थ स्थान हैं। भारत को कम्पलीट धर्मात्मा कहा जाता है। भारत में बहुत दान-पुण्य करते हैं।

* भारत के बच्चे चान्सलर बन सेवा का चान्स दूसरों को भी देते हैं इसलिए भारत में महादानी बनने की रीति-रसम अब तक भी चलती है। भारत का भाग्य तो विदेश वाले गा-गाकर खुश होते हैं।

* भारत वाले जगे तब विदेश को जगाया। जागने वाले तो भारत के हैं। अगर विदेश में भी यह (भारतवासी) नहीं होते तो इतने विदेश के सेन्टर भी कैसे होते। इसी के निमित्त चारों ओर, अफ्रीका आदि सब तरफ फैले हुए हैं। सेन्टर खोलते भी कितने में हैं। पैदा हुए थोड़ा सा बड़े हुए, सेन्टर खोला। वह भी अपने पांव पर खड़े होकर, किसी पर आधार नहीं। निमन्त्रण मिले, यह आधार नहीं। स्थूल, सूक्ष्म दोनों लगाकर हिम्मत रख सेन्टर खोल देते हैं।

६- दिल्ली

* दिल्ली को दिलाराम की दिल कहते हैं। तो जैसा दिल होगा वैसा शरीर चलेगा। आधार तो दिल होता है ना। दिल्ली है दिलाराम की दिल, तो दिल की गद्दी यथार्थ चाहिये ना, नीचे-ऊपर नहीं चाहिये। तो अभी अपने श्रेष्ठ संकल्पों से स्वयं को और विश्व को परिवर्तन करो।

* दिल्ली को परिस्तान बनाना है। इसी कार्य के निमित्त आप बच्चों को

बनाया है। बाप बच्चों को आगे रखकर खुद बैकबोन रहता है। तो सभी इन्तज़ार कर रहे हैं कि दिल्ली परिस्तान बने और हम उसमें जायें। तो इसके निमित्त तो दिल्ली वाले हैं ना। चाहे सर्व के सहयोग से हो, होना ही है। अनेक बार ये निमित्त बनने का पार्ट बजाया है, अभी तो सिर्फ़ रिपीट करना है। तो अपने श्रेष्ठ वायब्रेशन्स द्वारा, शुभ भावना, शुभ कामनाओं द्वारा शक्तिशाली सतोप्रधान वायब्रेशन द्वारा प्रकृति और मनुष्यात्माओं की वृत्ति दोनों को चेंज करने की सेवा करो।

* दिल्ली को परिस्तान बनाने के लिये विशेष तो माइक तैयार करो। जिसमें मेहनत कम और सफलता सहज हो। एक द्वारा अनेकों को सन्देश मिल जाये और कार्य में भी सहयोगी बनें। जितना-जितना निमित्त बनते हैं उतना कार्य में भी सहज सहयोगी हो जाते हैं। तो अभी यही लक्ष्य रखो कि भिन्न-भिन्न वर्ग के ऐसे माइक तैयार करें जो वह स्वयं ही अपने-अपने वर्ग के निमित्त बन जायें। दिल्ली से जो माइक निकलेगा उसका आवाज बुलन्द होगा। दिल्ली का माइक ऐसा पावरफुल होगा जो वर्ल्ड में आवाज फैला सकेगा।

* माइक तैयार करने के लिए एक ही समय पर तीन प्रकार की सेवा चाहिये। जैसे कोई भी बहुत होशियार, चाहे योद्धा हो, चाहे आतंकवादी हो, कोई बड़े को पकड़ने के लिये चारों ओर से उसको पकड़ने की कोशिश की जाती है। तो यह भी एक ही समय पर मंसा से, वाणी से, सम्बन्ध-सम्पर्क से, वायुमण्डल से ....चारों ओर का घेराव हो तभी ये विशेष निमित्त बनने वाली आत्मायें समीप आयेंगी। तो श्रेष्ठ वायब्रेशन्स से उन्हों को समीप लाते रहो। वाणी से समीप जाने का समय तो कम ही मिलता है। लेकिन वायब्रेशन, वायुमण्डल बनाने की सेवा सदैव होनी चाहिये।

* देहली वालों को तो बहुत काम करना है। अगर देहली में आवाज़ बुलन्द हो जाये तो विश्व में तो बहुत जल्दी हो जाये। देहली में एक कोई बड़ा माइक निकल जाये तो चारों ओर आपेही वायब्रेशन फैलेगा। तो दिल्ली वाले अब वायब्रेशन से सेवा करके माइक तैयार करो। और कोई वायब्रेशन में नहीं चले जाना। बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। ज़िम्मेवारी के समय कभी भी कोई व्यर्थ टाइम, व्यर्थ इनर्जी नहीं गंवाता। तो अभी कोई नया जलवा दिखाओ।

* जैसे देहली में नम्बरवन सेवा का केन्द्र खुला तो देहली से माइक

निकलेगा। सेवा की स्थापना तो दिल्ली से हुई ना। और देहली ने कई अच्छी-अच्छी सेवाओं को प्रैक्टिकल में भी लाया है। समय प्रति समय सेवा में सहयोगी बनते रहे हो। अब इसमें नम्बर लो। विदेश वाले भी प्रयत्न कर रहे हैं। लेकिन पहले चैरिटी बिगिन्स एट होम होना चाहिये।

* दिल्ली को श्रेष्ठ कर्म के निमित्त बनने का भी वरदान मिला हुआ है। फिर भी सेवा की जन्म भूमि है ना। सेवा की हिस्ट्री में नाम तो आता है ना। और अनेकों को सेवा के लिए साधन मिल जाता है। दिल्ली है वी.आई.पी.की नगरी, स्थान भी वी.आई.पी. और करने वाले भी अच्छे महावीर वी.आई.पी. हो। तो अपनी राजधानी को सजाने के लिए याद और सेवा का बैलेन्स रखो।

७- राजस्थान

* बाप-दादा दोनों का राजस्थान को विशेष वरदान है। पहला-पहला सेवा का साधन (जयपुर म्यूजियम) गिफ्ट रूप में राजस्थान को मिला है। पहला-पहला तीर्थ स्थान भी राजस्थान ही हुआ। तो वरदान फल तो जरूर देगा लेकिन किस समय देगा, वह समय देख रहे हैं। हर एक अपने-अपने सेवाकेन्द्र का ऐसा वातावरण बनाओ जैसे चुम्बक सबको अपने तरफ आकर्षित कर लेता है, ऐसे रूहानी वातावरण, रूहों को अपने तरफ आकर्षित करे। विशेष अटेन्शन रखते हुए हर वर्ग की आत्माओं को सम्पर्क में लाओ।

* एक दिन आयेगा जो राजस्थान की संख्या कमाल की लिस्ट में आयेगी, सिर्फ इसके लिए परोपकारी बनो। परोपकारी से विश्व उपकारी बन जायेंगे। बापदादा की विशेष पहली-पहली नज़र जिस धरनी पर पड़ी वह फल अवश्य देगी। राजस्थान की महिमा बाप जानते हैं, राजस्थान में रहने वाले कम जानते हैं। बाप जानते हैं कि क्या होने वाला है। होगा फिर सुनना! समय जब पहुँच जाता है, पर्दा खुल जाता है तो दृश्य सामने आ जाता है।

* राजस्थान वाले तो राज्य सत्ता अर्थात् अधिकार की सत्ता, ईश्वरीय सत्ता द्वारा सदा अपने राजस्थान को रेगिस्तान से सब्ज़ बनाने में, रेगिस्तान को गुलिस्तान बनाने में, जंगल को फूलों का बगीचा बनाने में होशियार हैं। राजस्थान में मुख्य स्थान, मुख्य केन्द्र है। तो जहाँ मुख्य केन्द्र है वह सबमें मुख्य है ना। राजस्थान को तो नाज़ होना चाहिए, नशा होना चाहिए। राजस्थान से नये-नये

सेवा के प्लैन्स निकलने चाहिए। राजस्थान को कोई नई इन्वेन्शन करनी चाहिए। इसके लिए बार-बार मेहनत का जल डालना पड़ेगा। लगातार की खाद डालनी पड़ेगी। अभी हल्की खाद डाली है। अभी चारों ओर फैलाव करो – राजस्थान के हिसाब से मुख्यालय के हिसाब से झण्डा तो ऊंचा है ना। अब ऐसा नम्बरवन बनो जो आपको सब फालो करें। स्व-उन्नति की कोई इन्वेन्शन करके दिखाओ तो सब फालो करेंगे।

८- डबल विदेशी

* डबल विदेशी बच्चों की परखने की आँख बहुत तेज है। दूर से परखने की आँख द्वारा, अनुभव द्वारा देख लिया और पा लिया। विदेशी बच्चे ऊँची-ऊँची अनेक प्रकार की दीवारों को पार करके बाप के बने हैं। धर्म की दीवार, रीति रस्म की दीवार ऐसे कितनी दीवारें बाप के सहयोग से पार कर ली। तो ऐसे डबल विदेशी बच्चे नम्बरवन सीट ले सकते हैं क्योंकि दूसरे धर्म के पर्दे के अन्दर, डबल पर्दे के अन्दर बाप को पहचान लिया है। एक तो साधारण स्वरूप का पर्दा और दूसरा धर्म का भी पर्दा है। बापदादा विशेष रूप में विदेशी बच्चों को विशेष शाबास दे रहे हैं कि कैसे कोने-कोने में बाप के छिपे हुए बच्चों ने बाप को पहचान निश्चय से बहुत अच्छा जम्प लगाया है। भिन्न धर्म के पर्दे के अन्दर होते हुए भी सेकण्ड में पर्दे को हटाए बाप के साथ सहयोगी आत्माएं बन गए, लगन में आए हुए विघ्नों को भी सहज ही पार कर रहे हैं। इसलिए बाप-दादा विशेष शाबास देते हैं।

* विदेशी बच्चे हिम्मत वाले भी बहुत हैं, असम्भव को सम्भव भी किया है। जो क्रिश्चियन या अन्य धर्म वाले समझते हैं कि हमारे धर्म वाले ब्राह्मण कैसे बन सकते, असम्भव है। तो असम्भव को सम्भव किया है, जानने में भी होशियार, मानने में भी होशियार हैं। दोनों में नम्बर वन हैं।

* विदेशी आत्मायें नकली साधनों को छोड़कर असलियत की तरफ, रूहानियत की तरफ ज्यादा आकर्षित हो रही हैं। भारतवासी नकली साधनों में मस्त हो गये हैं। अपनी चीज़ को छोड़ पराई चीज़ के तरफ जा रहे हैं और विदेशी आत्मायें असली चीज़ को ढूँढ़ने, परखने और पाने की ज़्यादा इच्छुक हैं।

* विदेशी बच्चों का चात्रकपन सिद्ध करता है कि अपने धर्म वाले हैं। आप लोगों को भी ऐसे ही महसूस होता है ना कि ग़लती से दूसरी डाली पर चले गए

हैं। सेवा के लिए यह भी एक थोड़े समय का पार्ट मिला हुआ है। नहीं तो विदेश की सेवा कैसे होती ? वहाँ वालों को निमित्त बना के विदेश की सेवा करा रहे हैं। जैसे कल्प पहले का गायन भी है कि पाण्डव गुप्त वेश में यहाँ-वहाँ सेवा के लिए गए थे। तो आप भी रूप-धर्म में परिवर्तन करके पाण्डव-सेना सेवा के लिए गए हो।

* पहले विदेशियों में विशेष फंसने के संस्कार थे अभी हैं फास्ट जाने के संस्कार। डबल विदेशी बच्चों में छुट्टी के दिनों में कहाँ दूर जाकर एग्जरशन करने की आदत होती है। तो बापदादा भी डबल विदेशी बच्चों को विशेष निमंत्रण दे रहे हैं। जब भी फ्री हो तो वतन में आ जाओ। सागर के किनारे मिट्टी में नहीं जाओ। ज्ञान सागर के किनारे आ जाओ। बिगर खर्चे के बहुत प्राप्ति हो जायेगी। सूर्य की किरणें भी लेना, चन्द्रमा की चाँदनी भी लेना, पिकनिक भी करना और खेल कूद भी करना। लेकिन बुद्धि रूपी विमान में आना पड़ेगा। संकल्प रूपी स्विच स्टार्ट किया और पहुँचे। इसमें सिर्फ डबल रिफाइन पेट्रोल की आवश्यकता है। डबल रिफाइन पेट्रोल है एक निराकारी निश्चय का नशा कि मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ और दूसरा है साकार रूप में सर्व सम्बन्धों का नशा।

* विदेशी बच्चे पदमगुणा भाग्यशाली हैं। दूर से आते हैं लेकिन चान्स पदमगुणा मिलता है। जितना देश वाले वर्ष में लेते हैं उससे ज्यादा विदेशियों को थोड़े समय में प्राप्त होता है। विशेष पालना मिल रही है। सबकी नज़र आप विदेशियों के ऊपर विशेष रहती है। तो विशेष पालना का रूप, प्रत्यक्षफल के रूप में विशेष दिखाना पड़े। जैसे स्थापना में विशेष पालना चली वैसे अभी भी आप लोगों की विशेष पालना चल रही है। तो पहले पालना वालों ने उस पालना का रिटर्न सेवा की स्थापना की। अब आप लोग क्या करेंगे ? सेवा की समाप्ति करेंगे और सम्पूर्णता का व प्रत्यक्षता का नाम बाला करेंगे।

* विदेशियों को समाप्ति की डेट फिक्स करनी पड़ेगी। अभी सबका इन्तज़ार आपके ऊपर होगा। बाप दादा से कोई पूछेंगे कि विनाश कब होगा तो कहेंगे विदेशियों से पूछो। देश वालों ने स्थापना की ज़िम्मेवारी ली। विदेशी भी कोई तो ज़िम्मेवारी लेंगे ना। है भी विदेश विनाशी और भारत अविनाशी तो भारतवासियों ने स्थापना का किया और विदेशी विनाश के कार्य में विशेष निमित्त बनेंगे। तो अब जल्दी-जल्दी अन्तिम आहुति डालो। सब मिल करके एक

संकल्प से स्वाहा करो तो समाप्ति हो जायेगी। इसकी डेट फिकस करो। विदेश में पहले पावरफुल माइक तैयार करो, जिस माइक द्वारा आवाज़ भारत में पहुँचे। जब आवाज़ फैलाने का पार्ट समाप्त हो जायेगा फिर परिवर्तन होगा।

* विदेश में साइन्स वालों का भी पार्ट है, तो उनकी भी सेवा करो। विदेश में यह सेवा अभी तीव्रगति से होनी चाहिए। राजधानी तैयार करो, प्रजा भी तैयार करो, रॉयल फैमली भी तैयार करो, सेवाधारी भी तैयार करो। कोई भी ऐसा वर्ग न रह जाए जो उल्हना दे कि हमें सन्देश नहीं मिला।

* विदेशियों को ऐसे चलते-फिरते लाइट हाउस बनकर सेवा करनी है। अगर एक ही स्थान पर इतने लाइट हाउस हो जायेंगे तो क्या रिजल्ट निकलेगी। सब वाह-वाह के गीत गायेंगे। सदैव एक चित्र अपने सामने रखो। जैसे आप लोग चित्र निकालते हो जिसमें अंगुली से ब्रह्मा भी शिवबाबा की तरफ इशारा कर रहे हैं। ऐसे आप सबका हर कर्म, हर संकल्प बाप की तरफ इशारा करे। जब सर्व आत्माओं को बाप का इशारा मिल जायेगा तो आप के गुण गाने लग जायेंगे। जैसे अभी और-और गीत गाते हैं, वैसे चारों ओर सभी साज़ों द्वारा बाप और आपके गुणों का गीत गायेंगे।

* विदेश की सेवा में विशेष साइलेन्स की शक्ति ज्यादा सफल रहेगी क्योंकि वहाँ की आत्मायें एक सेकेण्ड की शान्ति के लिए भी जगह-जगह भटकती हैं। तो ऐसी भटकती हुई आत्माओं को एक तो शान्ति और दूसरा रूहानी स्नेह दो। स्नेह से शान्ति का अनुभव कराओ। प्रेम का भी अभाव है और शान्ति का भी अभाव है इसलिए जो भी प्रोग्राम करो उसमें पहले तो बाप के सम्बन्ध के स्नेह की महिमा करो और फिर उस प्यार से आत्माओं का सम्बन्ध जोड़ने के बाद शान्ति का अनुभव कराओ। चाहे ड्रामा करो, चाहे भाषण करो, लेकिन भाषण भी ऐसे हों जैसे प्रेम स्वरूप और शान्त स्वरूप। दोनों का बैलेन्स हो।

* सतयुग में यह आपकी इंगलैण्ड और अमेरिका कहाँ जायेंगे ? वहाँ महल नहीं बनाना। महल तो भारत में बनाना। वहाँ सिर्फ घूमने के लिए जाना। वह पिकनिक के स्थान, घूमने के स्थान होंगे। वह भी थोड़े-बहुत होंगे, सभी नहीं। विमान शुरू किया और आवाज़ से भी पहले पहुँच जायेंगे।